



संविधान भूजग्यामाल के
प्रभुलालनीधरद्वारा ३० अगस्त १९६५ शक्षम्भूत गया।

श्रेष्ठ पानी सिंह
अवल, फडासरी

श्रेष्ठ मनो महर्जी

प्रभुलाल अः अः १९६०

समर्पण

પૂજય જગદુ ગુરુહેવ ?

જ્ઞોમદ વીર પરમપરાગત ગુરૂની સ્થાદવાદ પારંગતે ।
જૈનાચાર્ય શિરેમણૌ રુધિવરે યોગીશ કદ્યુ પ્રલો ॥
શ્રો સંદ્ઘ ધ્વજ નાયકે હૃકૃષ્ણ પ્રોદ્યોધકે હેવતે ।
શ્રોમદ હૃદીરજગદ ગુરૂ સુમનસા લક્તયા પ્રસૂનાર્પણીમ ॥૧॥

શુરૂ વીર વંશી હીર છે ? અમ ખાત એક સુન લીજિયે ।
વો રૂપ અપના આપ જગ મેં તૂર્ણ સે કરે લીજિયે ॥
શુરૂહેવ ? આશીર્વાદ મુજકો અથ દ્યાકરે હીજિયે ।
નિજ પાદ યુગ મેં પુષ્પ દસ કો કિર દ્યા કરે લીજિયે ॥૩॥

ચરણુરેણુ— “ સત્યાનંદ ”

—० ہیर گاین بھ ०—



अये हीराः ? अये धीराः ? सहाधन्याः सहामान्याः ।
 सहाऽङ्कं प्रार्थये सन्तं, लवन्तं तारकं हीरभ् ॥१॥
 अहिंसा धर्म धोरेया, सतथा वै शासका यूयभ् ।
 अकेषम् ऐंधिकाः सत्य, न्तदाज्ञाता जगत्प्यातः ॥२॥
 जगत्यां कैन जन्तुनां, शिरोभूर्धन्य सूरीशाः ।
 महाभव्या महासख्या, भुधा जैनागमाभिज्ञाः ॥३॥
 अहो वैराग्य मापना, महापुण्याः सहापूज्याः ।
 पुनारभ्यं तदाकारं, स्वकीयं दर्शयैश्चर्यभ् ॥४॥
 कियन्तो लेह लावज्ञाः, स्वदेशं भारतं पूतभ् ।
 ग्रन्थान्नाशयन्तोऽह, निर्शा उन्तु जगद्धर्मभ् ॥५॥
 विना हीरं विना वीरं, जगत्वातुं न चाशास्ति ।
 तदर्थं “हिमतेऽ” याचे, पदाष्टं तारकं तेऽहभ् ॥६॥
 समायातेऽधुनादेशे, पदाष्टे तावके नूनभ् ।
 सुगास्यामो हियास्यामो, वयन्ते भंगलं गानभ् ॥७॥
 प्रशस्यं तादशं दृपं, सुधीः श्री कुण्डुहेवोऽपि ।
 सुसुक्षु लोकितुं दक्षा, सुखव्यानन्द रत्नादिः ॥८॥

पछित कुण्डुहेव शास्त्री
 “विहारी”

परम पूज्य पंत्यासु श्री हितविजयल
महाराज के पट्टधर शिष्य.



भेवाड केसरी श्री नाकोडा तीर्थोद्धारक जैनाचार्य
श्रीमद्विजय हिमाचलसूरीश्वरल महाराज

દોસી કપુરચંદળ કે પિતાશ્રી
સ્વ. કુલચંદ લાલચંદ દોસી.



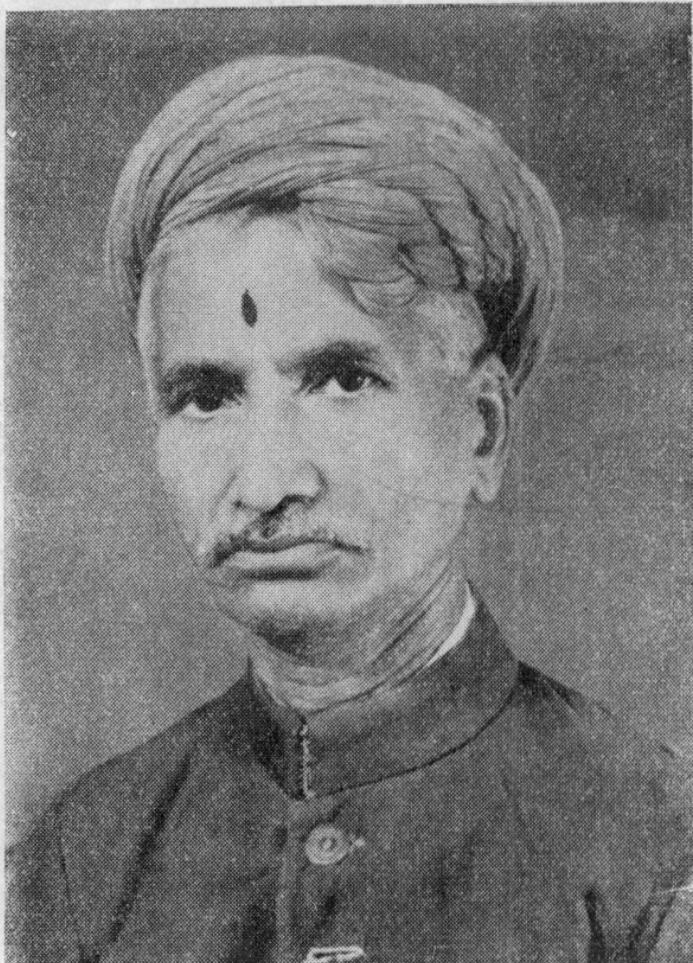
જન્મ સ. ૧૯૨૨

સ્વર્ગ સ. ૨૦૦૬

दास्ती कंपुरचंहળ કે માતુશ્રી
શ્રીમતિ શિવ બેન અભજુ.



: દુર્યુ સહાયક :



હોશી કપુરચંદ પુલચંદભાઈ
વદવાણુ શહેર.

દોસી કુપુરચંદ કી ધર્મપતિ
અખણું સૌલાગ્યવન્તી અવેરીષેન.



વદ્વાણ સીડી.

ग्रस्तावना

थृ॒ठ थात संसार के सभी विचारकों को माननी ही पड़ेगी कि
मनुष्य को आत्मतिक शानि उप ह्या से ही प्राप्त हो सकती है।
विषय में उस अहिंसा तत्त्व की महिमा अनादि काल से यद्या
आधि है, और यद्यती रहेगी। यावत् यन्त्र और सूर्य तक। इस
विषय में देशी और विदेशी विद्वान् सहभत हो कि इस अहिंसा
हेतु का साम्राज्य विशेषतः इत्याने वाले प्राचीन में प्रभु महावीर
और अर्बाचीन में जगद् युरु विजय हीर सूरिण हो गये हैं।
जो कि मुगल सम्राट् अकबर याहशाह और महाराष्ट्रा प्रतापसिंह
आदि राजाओं को प्रतिभोध होकर अहिंसा परमो धर्म की भागीरथी
आहाध। वह क्युं हुए? और उसे जगमान्य हुए? इन विषयों
की विभरे हुए पुण्यों की तरह ऐक निष्ठन्धाकार माला अनाकर
पाठकों के हाथ में उपस्थित की है।

विषय की दृष्टि से हीसूरिण की ज्यनी का मुख्य तीन काण्ड
माने हो जो कि जन्म काण्ड, दीक्षा काण्ड, और प्रतिभोध काण्ड।

१ जन्म काण्ड में—जलि देश काल और माता पिता का पूरा
परिचय हिया गया है।

२ दीक्षा काण्ड में—देश समय अलौकिक योग्यतानुसार अनेक
द्याधर्ट्य (पह्लवें) और सूरि सम्राट् बनने का कारण आहि
बताया गया है।

३ प्रतिभोध काण्ड में—शेष थानसिंह की माता चम्पार्याई के छे
मास उपवास की तपस्या से निष्ठन्ध नायक सूरिण का परिचय
आमन्त्रण, समागम, धूपर युद्ध सम्बन्धी प्रेमेतार, अहिंसा
महिमा, और सूरिण की परीक्षा, ऐवं अपूर्व चमत्कार,
तथा संतुष्ट अकबर द्वारा प्रशंसा, जगद् युरु की पहची, छे-

B

भास अहिंसा प्रकारों का, तथा तीर्थों के इरान, सूप के लिये ८४ विधा जमीन भेट, एवं शुद्धेव की भाँति पूर्ति, स्त्रियु दूरा अनेक अद्विरो की प्रतिष्ठा, अंजनशक्तादा, प्रतिवाहियों से शास्त्रार्थ, भावाराण्डा प्रताप की विनति, विजय सेन स्त्रि विलाप, आदि सविशेष अशेष विषय का प्रतिपादन किया गया है।

इन सभ टीर्थों का आधार अहिंसा ही ही है। अहिंसा के नाते ही मुगल सम्राट् ने शासन सम्राट् का जगद् शुरु की पहचान देकर अपनाया है। अतः ४६ निर्विवाद सिद्ध हो जाता है कि अहिंसा के प्रचारक हीर स्त्रियु हो गये है। आपका भांतव्य जैन भतावलभियों को ही भान्य हो ऐसी पात नहीं है। न जाने कितने अन्य धर्मावलभियों और विदेशी भक्तुभाव धनकी धृष्टता, गम्भीरता, सज्जनता और तात्त्विकता पर मुख्य हो चूके है। बास्तार के अतिरिक्त अथूलाइजल, शाई, आनधाना, क्लाभान और शेष मुहमद आदि भक्तुभाव धरस्ताम धर्मावलभियों होकर अहिंसा परमो धर्म को ही अपने जूवन का सर्वस्व बनाया था। वैष्णव धर्मावलभियों विद्वानों में की ऐसे अनेक भक्तुभाव हो गये हैं कि जिन्होंने अहिंसा के भक्त को मुक्त कर्त्ता से गाया है। एवं सहकार उपाय किया है। अस्तु।

क्षेत्रक भेदोदयने निम्न हर्षित अन्यों को अवक्षोडन करते हुए प्रस्तुत निअन्ध का निर्भाये किया है। जैसे कि—

हीर सौभाग्य डाव्य। हीरस्त्रि रास। जगद् शुरु फ़ाव्य। विजय प्रसारित भक्ताद्वय। फ़ूपारस डोप। विजयदेव भक्ताद्वय। पट्टावली समुद्देश्य। जैनतत्त्वार्थी अन्ध। आघों अठमी। स्त्रीधर और सम्राट्। जैन साहित्यनो संक्षिप्त छतिहास। धा. ए. समीय का

C

अक्षर समाट इरमान । धर्म जिरासु अक्षर । जैन शिलालेख
जगद् थुरु की अड़ी पूजा सत्वन संभव आहि मो हेये हैं । छन्दों
का ४६ नवनीत हैं ।

“निष्ठन्ध पादुकार्णि”

उपरोक्त बताये हुये आहि अतेक अन्य जगद् थुरु देव की
श्रवणी के विषय में विधमान है । किन्तु सभ्याभाव ऐसं अगम्य
अर्थ होने के हेतु, तथा सभीजन पूरा लाभ नहीं हो सकने के
कारण उद्यपुर श्रा संघ ने जन साधारण के लाभार्थ सक्षेपमय साम्
सार रूप सख्त निष्ठन्ध लिखाने के लिये तीन पुस्तकार २००७ की
साल में निकालेयें । जिस में कुछ एक निष्ठन्ध लेखकों के आये ।
उस में से निष्ठन्ध परीक्षक भडाई ने पूरी तरह निरीक्षण उडके
उद्यपुर सभा में प्रथम पुस्तकार छात्र निष्ठन्ध के लेखक डॉ हिंदा था ।
यह निष्ठन्ध वटवाण्य निवासी श्रीमान् डपुरचंद दूलचंदभाई ने
अपनी धर्मपत्ती अभिषड सौभाग्यवती श्रीमति “जवेरी” बाई के
वरसीतप निभिते अपवाहर घाठकों के हाथ में उपस्थित किया है ।
तर्ही धन्यवाद ।

निष्ठन्ध लिखनेका सौभाग्य भेवाड डेसरी श्री नाडोडा तीर्थोद्धरक
पूज्य गुहादेव जैनाचार्य श्रीमहिन्द्र डिमायल (डिमत) झुरीधरण
महाराज के क्षित्य साहित्य प्रेमी मुसुकु श्री अव्यानन्द विजयकु
शाळी डॉ है । और श्री डितिहासिक क्षेत्र में वृद्धि की है । और आजे के
लिये श्री प्रार्थना करता हूं डि साहित्य क्षेत्र में हमेशा अधिक
वृद्धि करते रहें । यही शुभ श्रामना । धति शम् ।

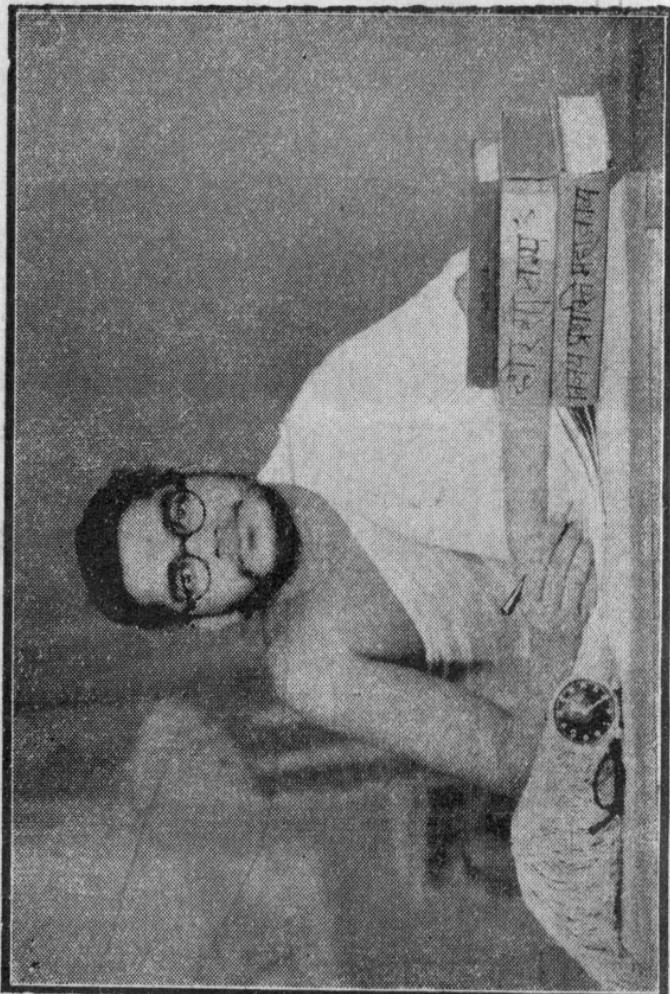
विनीत-धार्मकृष्ण शर्मा
“शास्त्र विशारद”

* શુદ્ધિ પત્રમ् *

પૃષ્ઠ	પંક્તિ	આશુદ્ધિ	શુદ્ધિ
૩	૧	૬.	હે ।
૩	૭	શેષી	શેષી ।
૩	૧૧	સંક્રતા	સંસક્રતા ।
૬	૧૬	અસી	ચૈસી
૧૦	૧૬	ભોગ	અનુભવ ।
૧૨	૧૮	કાર્તીક શુ.	માર્ગશીર્ષ શુ. ।
૧૬	૨૩	માહરાજ	મહારાજ ।
૧૭	૪	દ્વાદશમિત	દ્વાદશમિત ।
૩૧	૧૨	ચિન્તા	ચિન્તા ।
૩૪	૧૪	અદ્ધર	પદ્ધર ।
૩૮	૨૦	રાજમાગ	રાજમાગ ।
૩૮	૨૨	જીણ	જીણ ।
૫૩	૬	૨ પીછે	પીછે ૨ ।
૫૪	૬	મગ્ગા	માંગી ।
૫૪	૩	ઘડ	ઘેડ ।
૫૬	૪	રાજકર્મચારી	રાજકર્મચારી ।
૫૬	૧૧	નંગ	નંબે ।
૭૨	૩	મોક્ષમાત્ર જીવી	મોક્ષમાત્રોપજીવી ।
૮૭	૨૩	કાય	કાય ।
૮૫	૬	૬ મિલ	૭ મિલ ।
૮૭	૨૩	પ્રવચન	પ્રવચન
૧૧૭	૬	અના	ઉના (દીવ)
૧૨૦	૪	અરતે	અલતે ।
૧૨૪	૧૬	સનાઉંગા	સુનાઉંગા ।
૧૨૫	૧૩	ખના	ખની ।

(૧૯૮૨૧૦૧) ૧૫.૧૦. ૨૩૩૬ . ફે ૧૯૮૨

લિખક : - અ હિમાયતાનન્દાંન



જી.મ સં. ૧૯૮૨ ગામગુડા (મેવાડ)

એટલ દાનાના લિખિત



વિશ્વ વન્દનીય ગ્રલુ વીર કે ૫૮ વાં પણ્ઠર ૭૨ગાહ ગુરુ શ્રીમદ્બિજય હીરસૂરીશ્વરજી મહારાજ સાહુઅ

ઇસ અસાર સંસાર મે મુગલે સાગ્રાટ બાદશાહ
અકૃથ પ્રતિથોધક જગદ શુદ્ધેવ શ્રીમદ્બિજય હીરસૂરીશ્વરજી
મહારાજ આખાલ વૃદ્ધ સે અપરિચિત નહીંડે। ક્રિર લી
આપણી જીવની પર અપણી લઘુ ખુદ્ધિ કે અતુસાર વર્ષન
કરતે હુએ નિજ આત્મા કો તૃપ્તિ કરને મે આડુઠ હુआ
હું। ક્ષેણી મહાપુરુષોં કા શુણુગાન શ્રેયસ્કર હુઆ કરતા
હું। યધાપિ મહાપુરુષોં કા શુણુગાન સ્વદ્ધિ ખુદ્ધિ સે હોના
પરમઅસમલવ હૈ। ચૂંકિ શુણુગાન શાયદ કા અર્થ પ્રત્યેક-
શુણોં કા વર્ષન હોતા હું। હર ઐક શુણોં કા પૂરી તરહ
વર્ષન ન હોનેસે પ્રત્યુત નિન્દાતમક હી હોણતા હૈ। જેસે
સમુદ્ર કા જલ પરિમાણ કરને પર નિન્દા કે સિવાય હુસરા
ક્યા હો સકતા હું? તથાપિ સૂર્ય કો દીપ દર્શન કી તરહ

मेरी लेखनी का लेख व्यापार भी सहृदय हृदय पुरुषों को प्रियकर ही होने की पूर्ण आशा है।

चरित्र नायक जगद् शुल्केव का जन्म पालनपुर में हुआ था। पालनपुर का धतिहास ईस प्रकार कहते हैं कि प्राचीनकाल में एक प्रल्हाद नाम का राजा राज्य करता था। उस राजा ने कुमारपाल महाराजा की अनाई हुई द्वर्ष्यमयी श्री शान्तिनाथ लगवान की मूर्ति को अजिन में गढ़ा कर वृषभ की मूर्ति बनवा कर श्री अद्वैतेश्वर हेव के सन्मुख स्थापित कर्दी। ईस द्वार पाप के कारण राजा के शरीर में हृष्टकृष्ट दोग का आर्विलाव हुआ। ईस केड़ दोग से राजा का तेज लावण्याहि सम्पूर्ण गुण नष्ट अप्ट होगये। राजा ने अपने नाम से प्रल्हादनपुर नाम का शहर बसाया। कर्म संयोग से किसी परायकारी महात्मा ने राजा का पाप द्वार दोग नाशक उपाय बताया कि पार्श्व प्रबु की मूर्ति बना कर निम्न भन्दर में स्थापन कर पूजा कर्त्ता करने से सभ दोग शोक नाश हो जायगा। ईस बात को सुन कर राजा ने तुरन्त ही प्रल्हादन विहार नाम का चैत्य सुन्दर बनवाया। और प्रतिष्ठा पूर्वक श्री पार्श्व प्रबु की मनोहर प्रतिमा स्थापित कर निकाल पूजा कर्त्ता करने लगा। अद्य समय में ही राजा का शरीर आदैश्यमय होकर पूर्व की लांति चमकने लगा। राजा के आदेश से समस्त नागरिक प्रबु दर्शन से मानव जन्म की सार्थकता समझने लगे। कहा-

वह भी ह कि “यथा दाज तथा प्रज्ञ” ।

इसी प्रद्वादनपुर का अपभ्रंश डोकर पालनपुर नाम जाहिर होगया है । जे कि गुजरात के उतरी किनारे पर आज भी विद्यमान है । उस समय बड़ा समृद्धिशाली शहर था । किसी प्रकार से शहर वासियों को अशानित न थी । इसी विशाल शहर में उपकेशवंश धूषण धनाद्य एक कुंशाह नामका श्रेष्ठी रहता था । वह सज्जन पुरुष हया हक्षिण्यादि शुश्रांसे युक्त था । इतना ही नहीं अद्वितीय धूषणस्थां मेरुकुटालंकार माना जाता था ।

आप प्रभु लक्ष्म शुद्ध विनयी ऐवं धर्म के अडे तत्पर थे । आपके सहयादिणी प्रतिव्रता धर्म मे संकेता एक नाथी नाम की भार्या थी । वह भी सुशीला और धर्मात्मा थी । कुंशाह शेठ के साथ अपने संसारिक सुप्तों का अनुबव करती हुई नाथी हेवीने उत्तम गर्भ के धारण किया । किस रात्रि मे गर्भ धारण किया । उस रात्रि मे हीरा की राशि स्वप्न मे हेघ कर नाथी हेवी शामांचित हृदय से अपने स्वामी से प्रश्न करती है । हे नाथ ? मैंने आज स्वप्ना यह हेखा है । तभ श्रेष्ठी ने कहा कि हे प्रिये ? जे तुमने शुल प्रद ऐवं अलिष्ट इत्तें हेने वाला स्वप्ना हेखा है इनके प्रलाव से निश्चय ही पुत्र रत्न होने की पुर्ण आशा है । नाथी हेवी निज पति हेव का मनोहुकूल वचन सुनकर हर्षित हृदय से ऐम

पूर्वक गर्ल का चोषणु करने लगी। इस उत्तम गर्ल के प्रभाव से धर में सुध और संभवित भी अनायास ही बढ़ने लगी। इस बढ़ती हुई सौभाज्यता के हेठले कर जल मीन की तरह पति और पति के हृदय सरोवर में मनोरथ की अेष्टिये भी क्लोल करती हुई बढ़ने लगी।

ऐक दिन विलक्षण सुरलि वायु दिशाओं में चलने लगा। सर्व पशु पक्षी भी विलक्षण मधुर स्वर से ज्ञाते हुए जंगल की राह चलने लगे। मानो कि लूतल में यन्द्रोदय की सूचना कर रहे हैं। पालनपुर निवासी सज्जन भी निज निज आसन के छोड़ कर नित्य किया में सन्नद्ध होने लगे। कुंराशाह भी आवश्यक कार्य के लिये आहर चले गये। धृधर नाथी ने सं. १५८३ मार्ग शीर्ष शुक्ला नवमी के दिन ग्रातः काल शुल सुहुर्त भी निर्विकृत पूर्वक उत्तमोत्तम लक्षण संपन्न पुत्र रत्न के जन्म हिया। मानो कि भृत्यतल में अपर यन्द्रोदय होगया हो। शेठल लैटकर कुछ समय के बाद आते ही हासी के सुध से पुत्र जन्मोत्सव का हात सुनकर असीम हृष्ट मज्जन हो गये। शेठल के धरपर अनेक तरह से भांगलिक गीत होने लगे। इस पुत्र जन्मोत्सव की झुशियाली में कुंराशाह ने अनेक उत्तम धर्म कार्य करते हुए हीन हुए भी अलिलाखित दान हेकर संतुष्ट कर हिये। समस्त शहरवासी सज्जन भी शेठल के धर पर पुत्र जन्मोत्सव में लाग लेते हुए अलिवृष्टि हृष्ट में करने लगे। उत्तम

पुरुषोंका जन्म किसके आनन्द हायक नहीं होता ? । सर्वे नगर वासियों के सुख से यही शहद निकलने लगा । कि लड़का भारत में अपूर्व आदर्श दृष्ट चमकेगा । हेखीये । सत्पुरुषों का जन्म प्रबाव अपनी प्रसा दूसरों के हृदय कमल में स्वयं चल कर यशोआन करती है ।

इधर भाता पिता विद्यार विभर्ष करके अपने सभ्यनिधियों को आमन्त्रण हेकर खुब सत्कार सन्मान प्रेम पूर्वक करने लगे ।

आगन्तुक सभ्यन्धों ऐवं नागरिक जनता के मनोनुकूल ज्येष्ठियों ने शास्त्रानुसार हीराचन्दनाम रथा । हीरा नाम मात्र ही नहीं था बल्कि हीरा वास्तविक हीरा था । हितीया के चन्द्र कला की तरह प्रतिभाशाली हीराचन्दन भी हिनानुहिन विशेष अद्दते हुए कम से सात वर्ष के होने पर स्कूल में अध्यापक के पास शिक्षा के लिये जाने लगे । आपकी खुद्दि बड़ी विकस थी । प्रकृति के आप अडे चंचल थे । भगव गम्भीर ली कम न थे । स्कूल के सर्वे छात्रों में से आपकी भेदा अत्यधिक तेजस्वी थी । अहम सभय में ही आपने “पांचा-प्रति कमण्डु” “ब्रुव विद्यार” “नव तत्व” “हंडक” “संघयाणी” “नव समरणु” “तीन साध्य” “योग सूत्र” “उपहेशमाला” “दर्शन सितरी” “चउशरण्यपयन्ना” इत्यादि अन्य स्वाधीन कुर लिये । कैसे कैसे आपका कलालयास अद्दने लगा । वैसे वैसे शुणु की अधिक अद्दने लगे । कहा है कि—

अङ्गोध वैराण्य जितेन्द्रियत्वं । क्षमा दया सर्वजन प्रियत्वम् ॥
निलोलं दाता भय शोक मुक्ता । ज्ञान प्रणोद्धे दश लक्षणानि ॥१॥

जब हीरलु के अन्तःकरण में ज्ञान का ग्राहुर्भाव विशेष रूप से होने लगा तब से अपने हृदय में इन दश लक्षणों को ली धीरे धीरे स्थापन करने लगे । सारे शहर में एवं धर धर में आते होने लगीकी हीरलु सभ विद्यार्थीयों में अत्रेसर घन गया है । और शिक्षक ली आपका आदर सरकार प्रेमसेकरते हैं । यह अपने गांव में एसा नाम करेगा जो कि आज हिन पर्यन्त किसीने नहीं किया । पाठक ? हेहिये यह लोकांकित ली वास्तिवक अरितार्थ होने वा रही है ।

एक हिन की बात है कि भ०य ल्लों को प्रति ऐध होने के लिये अमानुआम विचरते हुए तपागच्छाधिराज जैनाचार्य श्री मद्दिजय दान सूरीश्वरलु महाराज शिष्यो-पश्य सहित पालनपुर पथारे । संसार सागर से पार लगाने वाली सर्वोप्रदत्त को नाश करने वाली असी मनोहर देशना आचार्य हेव ने प्रारम्भ की । प्रतिहिन अठती हुई जनता को हेव कर हीरलु ली अपने इष्ट भित्रों के साथ धूमते हुए व्याख्यान में पहुंच गये । व्याख्यान पढ़ते हुए ली गुरुहेव का इष्ट हीरलु के उपर पड़ते ही उनके स्वरूप लक्षण उनकी आकृति से हीरे पड़े । व्याख्यानान्तर शुरुलु के पूछने पर सभा में से उतर मिला कि

७

शेठ कुंराशाह का भ्यारा पुत्र है। गुरुजी ने क्षण मात्र विचार कर गोचरी के निमित हीरल के धर पधार कर उनके माता पिता के सामने हीक्षा सम्बन्धी लाव प्रगट किया कि यह लड़का साधु बन जाता तो शासन सेवा का लार अपने स्कूलीं पर बहुत कर सकता। यह अमर नाम उठता। उसमें तुम्हारा ही जीव अढता। इस्तिलिये ईसको वैराग्य का उपदेश हेते रहना ताकि कभी यह स्वयं साधु पह स्वीकार करने की आवना करेंगा।

इतना वाक्य शुरू मुख से सुनकर भोड़ के कारण मौन हो गये। तथ गुरुजी भी अपने स्थान पर आगये। कुछ हिन के बाद श्री संघ ने भिल कर कहा कि शेठ साहब? गुरुदेव आपके धर पधार कर हीरल की याचना की भगव आपने कुछ उत्तर तक नहीं दिया। अत्यन्त ऐह है कि आपने गुरुदेव का वचन अंगीकार नहीं किया। अस्तु। अब भी श्री संघ आपसे मांगनी करता है कि हीरल के गुरुदेव के चरणों में समर्पण कर दे। अगर आप याहे तो श्री संघ से हीरा के भरणार स्वर्ण राशि ले सकते हैं। ईस बात को सुन नाथी हेवी ने कहा कि श्री संघ मालिक है। जो हेना याहे से हे सकते हैं। किन्तु हीरा के बीना स्वर्ण राशि क्या शोला हेगी?। अगर श्री संघ का ऐसा ही अदेश हे तो कुछ हिनां के बाद हीरा के गुरुचरणों में कोजने की सहर्ष कौशिश करेंगी। और ईनका ऐसा ही

आँच्योहय होगा तो वह स्वयं ही शुक्रवरणों में आज्ञायगा । इस प्रकार वर्चन सुनकर श्री संघ धन्य धन्य करता हुआ शुक्रदेव की जय ओलता हुआ शुक्रदेव के वरणों में जाकर के हीरल की सभ आते कह सुनाई । अद्यप्राप्ति में ही शुक्रदेव भी पृथ्वी मंडल के पावन करते हुए सभ्य प्राणियों को सद्मार्ग के अनुयायी बनाने लगे ।

इसी मध्य में हीरल के मातापिता सम्यग् प्रकार से धर्मांशधन पूर्वक इस असार संसार से परलोक की महायात्रा कर के इस पालनपुर को अपने से शून्य बना दिया । इधर जनता गण लघु आलक हीरल की अवस्था हेह देख कर मन में उठे सन्तप्त होने लगे । हीरल का तो कहना ही क्या था ? । कितने आपति इन बादल आये । क्षिर ली बादल को ज्ञानइन वायु से तितर भितर करके अन्य समय में ही महा शोक से पृथक् २६ कर समय व्यतीत करने लगे । कुछ हिन के बाद हीरल अपनी आहन से भिलने के लिये श्री अषुभिलपुरपाटण गये ॥ आहन भी अपने होटे भाई को आते हुए हेह कर अव्यन्त हर्ष में मज़न हो गई हीरल थोड़े हिन ४५२ कर अपने गांव जाने की आज्ञा मांगने पर आहन के अव्यन्त आश्रु से हीरल थोर ४५२ गये । एक हिन आप स्वेच्छापूर्वक श्री अषुभिलपुर पाटण की शोला हेहते हुए भूमने लगे ।

इधर सुनीश्वर शुण्डुगार आचार्य देव श्री मद्विजयदान

સૂરીશવરણ મહારાજ મહોત્તમ કેં પાવન કરતે હુએ અડે
ધૂમધામ પૂર્વક ઉસી શહેર મે પથારે । ઉસ સમય નગર
કે સખ નર નારિયાં કુતુહલતા પૂર્વક સ્તરનન્ધય અચ્છે કેં
લી છોડ છોડ કર કેં આપકે દશનાર્થે ઉપરિસ્થિત હોને
લગી । હીરણ ભી અભૂતપૂર્વ સમારોહ કે દિવ્દિક્ષુ હોકર
ઉસ જ્યંડ મે શામિલ હો ગયે શ્રી સંધ કે આથી સે
ગુરુદેવ ધર્મશાલા મે પહુંચને પર જિન પ્રતિપાદિત
ધર્મપદેશરૂપ સુધા કી વર્ષા કરતે લગે । જિસમે—

યતારિ પર મંગાણિ હુલહાણિય જંતુણો ।

માણુ સત સુઈ સખા સંજમંભિય વીરિઓ ॥૧॥

ઇસ ગાથા કે અર્થ કેં ખૂલ્ય પ્રતિપાદન કરતે હુએ
પ્રલાવશાલી હૃદયસ્પર્શી માર્મિક વ્યાખ્યાન ફરમાયા ।
જનતા મન્ત્ર કી તરહ સુંધ લાવ સે દત ચિત હોકર
શ્રવણુ કરતી રહી । એસા ઉપરેશ નિકટ લવિ પુરુષોં કે
લિયે અહૃત હી હિતકારક હુઆ કરતા હે । ચૂંકિ હીરણ
કે હૃદય મે લી ઇસ મનોહર ઉપરેશ કા પૂરા અસર પડા
વ્યાખ્યાન સમ્પૂર્ણ હોને કે બાદ હીરણ અપની અહૃત કે
પાસ જાકર કે વિનય ચુક્ત મીઠે શરૂદો મે કહતે લગે ।
હે લગિની ! આજ મૈને તપાગચ્છાધિરાજ શ્રીમદ્દિજ્યદાન-
સૂરીશવરણ મહારાજ કે સુખાર વિનદ સે સંસાર સમુર્દ સે
તારને વાલી સહા સુખ સૌલાંય કેં હેનેવાલી મનોરણ દેશના
સૂની હે । જિસસે વિરક્ત લાવ પેદા હોગયા હૈ । અથ
મેં ગુરુજ કે અરણોં મેં જાકર કે શ્રી લાગવતી દીક્ષા

१०

સ્વીકાર કરના ચાહતા હું । અતઃ મુઝે અવિલમ્બ આજા પ્રદાન કરો ।

ઇતને શખ્ષ સુનતે હી બહુન રોમાંચિત હોકાર અશ્રૂપાત કરતી હુઈ ગદ ગદ રવર મે અપને કનિષ્ઠ ખ્યારે લાઈ સે કહ્ણે લગી । હે પ્રિય બન્ધે ! હે સરલ હૃદય વત્સ ! હીક્ષાપત્ર તલવાર કી તીક્ષ્ણ ધારા કે સમાન, લોહચને કે તુલ્ય, અડા કઠિન સાધ્ય હૈ, । કયોંકિ હીક્ષિતોં કો નંગે શિર ધુમના પડતા હૈ । સર્દીયા ધૂપ મે નંગે પાંચ ચલના પડતા હૈ । તેશ લુંચિત કરના પડતા હૈ । ધર ધર ભીક્ષા માંગની પડતી હૈ । સુકાલુ કા નીરસ આહાર સે ઉદ્દરપૂર્તિ કરની પડતી હૈ । બાવીશ પરિસહ સહન કરને પડતે હૈ । કઠોર તપસ્યાએં લી કરની પડતી હૈ । તેરા અસ્ય શરીર નહીં હૈ જે કિ જૈસે કઠોર વ્રતોં કો પાલન કર સકે । ઈસ્સલિયે અભી તેરે લિયે હીક્ષા લેના ચોગ્ય નહીં હૈ । ભાઈ મેરા કહુના થહ હૈ કિ પ્રથમ તો એક કુલીના સ્વી સે વિવાહ કરકે સાંસારિક સુખોં કા લોાગ કરદો । પુત્રોત્પત્તિ હોબને કે થાદ તેરી ઈચ્છા હો વૈસા કરના । ઈસ પ્રકાર નાનાયુક્તિ સે સમજાને પર લી ધૈર્યવાન હીરળ અપને વિચારોં પર અટલ રહે । ઔર વેરાગ્ય કી પુષ્ટિ કરતે હુચે ભર્તુહરિ પ્રદર્શિત કાંથ કા અર્થ અપની બહુન કો સમજાને લગે । જૈસે કિ—

કાંથ—

લોગે દોગ લયં કુલે ચુંટિ લયં વિને નૃપાલાદ્ર લયં ।

११

माने हैं यलयं अले रिपुलयं कर्ये कृतान्ताह लयं ॥
 शास्त्रे वादिलयं गुणे अल लयं कर्ये जराया लयं ।
 सर्वं वस्तु लयान्वितं लुवि नृषुं वैराज्य भेवा लयम् ॥१॥
अर्थः-लोग मेरों दैराजका लय है । कूल मेरों नाश का लय है । धन मेरों राजा का लय है । मान मेरों हीनता का लय है । अल मेरों शत्रु का लय है । हेठ मेरों अभग्नज का लय है । शास्त्र मेरों वादि का लय है । गुणे मेरों हुष्ट का लय है ।
 रूपमें भुदापा का लय है संसार की समस्त वस्तुशोंओंमेरों लय
 २५ हुआ है किन्तु एक वैराज्यही अलय है । ईस तरह वैद्य की
 जांति वैराज्य इप औषधी से अहनकी कीर्दिंडु हठ इपी
 अभिमारी के नाश करके वैराज्य भय छवन बना कर शुरुण
 के पास जाकर के स्विधि वंदना पूर्वक शुरुदेव से कर
 एक ग्रार्थना करने लगे ।

हे शुरु देव ? हे तरण्य तारण्य लगवन् ? मेरों
 आपके चरणोंमेरों मेरों दैराज शोक है जड़ा भूल से उपाड पैंड
 हैने वाली, सुख सोलाज्य है अदाने वाली, श्री भागवती
 हीक्षा, अहुषु करने के लिये उपस्थित हुआ हूँ ।
 अस्थिर संसारमेरों कोई ली सार चीज नहीं है मैंने भुख
 समझ लिया । अब मेरी हार्दिंडु यही धृच्छा है कि मेरों
 आपके कर कुम्होंमेरों मेरों २५ कर सेवा करता हुआ आत्म
 कल्याणु की ओर अग्रेसर धनूं । अतअेव अहुत ही जल्दी
 मुझे गृहस्थ वेष से पृथक् कर साधु मार्ग का वेष पहना
 दिल्लये ।

१२

इस प्रकार लघु आलंक का माधुर्य अयन सुन कर गुरुहेव. भी आश्रय भजन होकर मन ही मन संकल्प विकल्प करने लगे. कि यह छाटा अन्या होता हुआ भी वारु शक्ति उसी है और क्षेत्र सुनहर शहदों का प्रयोग कर रहा है। कहा है कि “शिष्य रत्नस्य ग्राह्तोऽहि हृष्ट उत्कृष्ट लागू लवेत्”। शिष्य रत्न की ग्राहित में महान् पुरुषों के भी प्रभोह हो जाता है। हीरण की आकृति से स्पष्ट मालुम होता था कि भावी गच्छ नायक पटालांकार बड़ी होगा। ऐसा गुरु हेव अंतःकरण में तर्क वितर्क पूर्वक श्री संघ के सूचना की की यह भाई संसार से विरक्त होकर साधु पह की याचना करने के लिये भेरे पास आया है। श्री संघ ने विनय पूर्वक उत्तर दिया कि गुरुहेव ? अवश्य दीक्षा के योग्य लड़का है आप दीक्षा दिल्लये। आचार्य हेव के उपदेश से श्री संघने अठाई महोत्सव एवं जुलूस की तैयारी धूम धाम पूर्वक करना प्रारम्भ किया। हीरण उन्हें दृश्य में संसार सम्बन्धी किसी भी पदार्थ की तरक्की लक्ष्य बिलकुल नहीं है। आप दिनानुदिन अधिक वैराग्य में भरत अनतेज रहे थे जो कि आपका दीदार भताता जा रहा था। सं. १५६६ कार्तिक कृष्णा द्वितिया उन्हें दिन सारे शहर में धूमता हुआ हीरण का शानदार जुलूस नियत स्थान पर जा रहा था। ओर शहर के हजारों नर नारी अपने धरेलु कार्य के छोड़ कर जुलूस में सामीक्षा होने के लिये आगे चढ़िए होड़ते

१३

જ રહે થે । દર ઘોડા નિયત સ્થાનપર પંહુચને કે બાદ હીરળ રથ સે નીચે ઉત્તર કર અપને હી હાથસે સંસારિક વેષ કો ઉતાર કર સવિનિત હેઠાકર એકાશચિત સે શુરૂ ચરણોં કે સામને અડે હોગયે શુરૂલને લખિણુ ઉત્તમ પુરુષ સમજ કર શુભ મુહૂર્ત મે શ્રી લાગવતી દીક્ષા દેહી શુરૂહેવ શ્રી મદ્દિજ્ય હાન સૂરીશવરણ મહારાજ કે કર કમલોં દ્વારા દીહુઈ દીક્ષા કો સહૃદ્ય સ્વીકાર કરકે વીનીત હીરળ ને કૃતાર્થ હેઠાકર દીક્ષા કી મહુતા બતાતે હુચ્ચે જનતાકો લો દીક્ષા સ્વીકાર કરને કે લિયે કહુને લગે ।

કાવ્ય

દીક્ષા મોહ વિનાશિકા ચ સતતં ભવ્યોદ્ય પ્રાપિકા ।
 દીક્ષા પૂજય તમા સમર્દત ભૂવને અવાતમનાં પાવિકા ॥
 દીક્ષા શ્રી જિનસેવિતા ચ દલની હુઃખ્ય શિક્ષામયી ।
 તાવૈ ર્ષી કુર્દત પ્રમોદ જનરીં લોકાધિધ નાથ જનાઃ ॥૧॥
 નચ રાજ લયં નચ ચોર લયં । ઈહ લોક હિતં પર લોક સુખં
 નર દેવ નતં વર કીર્તિ કર અમણુત્વમિહ રમણીયતાર ॥૨॥
 અર્થ દીક્ષા મોહ કા વિનાશ કરનેવાલી, પરમ ઉસ્યુદ્ય
 કો હેને વાલી, અવાત્માઓ કો પવિત્ર કરને વાલી, સકલ
 સંસાર સે માનનીય, જિનેશ્વર લગવાન સે સેવિત, હુણોં
 કો નિવારણુ કરને વાલી વિદ્યામયી ઓર આનન્દ કો હેને
 વાલી સંસાર સસુદ્ર કે નૌકા ઝીપી હૈ અત: ઉસે સખ પ્રા-
 છિયોં કો અપનાના ચાહુયે ।

સાધુતા મે ન તો રાજકીય લય હૈ ન ચોરી કા

૧૪

ભય હૈ તથા એહલોકિક હિત ઓર પારલોકિક સુખ મિતતા હૈ સાધુતા કો હેવ મનુષ્ય ભી સ્તુતિ કરતે હૈ ઔર સાહુપના મે કીર્તિ બઢતી હૈ અતઃ સાધુતા પરમ રમણીય હૈ ॥

હીરળ કા દીક્ષિત નામ શ્રીમદ્દજ્યદાન સૂરીશ્વરણ ને હીરહર્ષ મુનિ રક્ખા । હીરહર્ષ મુનિ સમ્યગ્ પ્રકાર સે તપસ્યા એવં રત્નત્રય કી આરાધના કરતે હુએ પરિશુદ્ધ આશાય સે શુરૂ ચરણોં કી સેવા મે લયલીન હોતે હુએ શુરૂદેવ કે પીછે છાયા કી તરહ પ્રતિ પલ રહુને લગે ।

હીર હર્ષ મુનિ પાંચ મહામત તીન ગુપ્તિ પાંચ જીમિત એવં સંયમ તથા કરણ સિતરી ચરણ સિતરી કો પૂરિ તરહ સે પાલન કરતે હુએ ઉચ્ચ શાસ્ત્ર કા અધ્યયન હતાચિત હોડર કરને લગે । શુરૂદેવ કે સમીપ પઢતે હુએ થોડે હી સમય મે શાસ્ત્રોં કા સર્વપૂર્ણ અધ્યયન કર જૈન સિક્ષાન્ત કે ધૂરંધર વિદ્વાન બન ગયે । પાઠક હેખિયે ? શુરૂ કૃપા કા ઇલ. શુરૂ કૃપા જિસ પર હોન્નતી હે વહ તો વિક્રિતા પૂર્ણ વાદ શક્તિ મે અપુર્વ હી બન જતા હૈ ઓર સંસાર સાગર ઉનકે લિયે સુકર હો જતા હૈ । ઈચ્છી તરહ હીર હર્ષ મુનિ ભી શુરૂ કૃપા સે સહૃદાન કા વિકસ્વર વિશેષજ્ઞપ સે કરને લગે ।

એક દિન શુરૂદેવ શ્રીમદ્દજ્યદાન સુરીશ્વરણ અપને અન્તઃકરણ મે શોયને લગે કિ હીર હર્ષ મુનિ બડા બુદ્ધિમાનું ઓર અધિક પ્રતિલાશાલી હૈ । ઈતની છોટી અવસ્થા મે હી જ્યોતિષ શિવિપ ન્યાય બ્યાકરણ આદિ શાસ્ત્રોં મે ખારંગત

१५

हो गया अण शैव शास्त्र मान्य ही शेषरहा है । अगर उसका ली अध्ययन कर लेता तो अनंदमा की पुष्टि कला की तरह यह भी सकल कला से सम्पन्न हो जाता । ओर अगाध योगिक सागर में लघु भुज्यि इप नहियों का समावेश कर सकता । तथा अन्य कंटकाहि इप प्रतिपक्षियों का निवारण कर सकता । धर्त्याहि मनोरथ रथ बढ़ाते ही हीर हर्ष मुनि चरणाश्रित होकर आलने लगे कि—

पूज्य गुरुहेव ? यहि आपही आज्ञा हो तो शेष रहा हुआ शैव शास्त्र का भी अध्ययन कर लूँ । किन्तु आपकी सेवा से वंचित रहना धृष्ट नहीं है । अतः किं कर्तव्यमूढ़ हूँ ।

इतने हीरोड़त वचन सुनते ही गुरुहेव कहने लगे, प्रिय विद्या प्रेमिन् ! मेरी धृष्ठि के अनुसार ही तेरी धृष्ठि की जगृतिहुई । अस्तु । सेवा हेवी तेरे हृदय भैरव में विशाजमान है तो उसीसे वंचित होने की देश मान भी शंका नहीं रखना । अण रहा अध्ययन का विषय । उसमें इस हेश के पंडितों की अपेक्षया दक्षिणाधेशस्थ विचक्षण विद्वानों से ही अधिक लाभ होगा । क्योंकि यहां के विद्वानगण तदृ देशीय पंडितों की तुलना नहीं कर सकते । अतः वहीं जओ । इतना कह कर विजयहान सुरिल ने शुल हिन देख कर धर्म सागरम् आहि ४ शिष्यों के साथ हीरहर्ष मुनि को दक्षिण देश में अध्ययन करने के लिये लेज हिया ।

૧૬

હીર હર્ષ મુનિ શુરૂદેવ સે હી હુઈ આજા માતા કે પહુંન કર આર્ગ મે સહૃપહેશ પિપાસુ જનોં કે ધર્મોપહેશ રૂપ સુધા સે સન્તુષ્ટ કરતે હુચે અચિર સમય મે હી આદિષ્ટ દક્ષિણ દેશસ્થ દેવ ગિરિ નામક હુર્ગ સ્થાન પર પહુંચ ગયે । આપકે સાથ ભક્ત ગણુ લી પૂણુ પાત્ર થે જિસસે પઠને લિખને કી વ્યવસ્થા શીધ અચી તરહ હો ગઇ । અથ હીરહર્ષ મુનિ દત ચિત સે અસ્યાસ કરને લગે । થોડે હી સમય મે આપને ચિંતામણ્યાદિ શૈવાદિશાસ્કોં કા પ્રાખર પાંડિત્ય પ્રાપ્ત કર લિયા । હીર હર્ષ મુનિ અપને દીપી કાર્ય કે સર્વપત્ર કર દક્ષિણ દેશ સે પ્રયાણ કર અહિંસા ધર્મ કા ખૂબ પ્રચાર કરતે હુચે ગુજરાત કી તરફ પધાર ગયે ।

ઉસ સમય મે તપા ગચ્છ નાયક શાસન સમાટ શ્રી મહાવિજય દાન સુરી શ્વરજુ ગુજરાત કે તીર્થી કી યાત્રા કર મરુધર તીર્થી કી યાત્રા કરતે હુચે નારદપુરી મે પધારે । ગુરુદેવ કી જિજાસા કરને પર હીરહર્ષ મુનિ કે પતા ચલા કી ગુરુદેવ મારવાડ મે બિરાજતે હૈ । આપ લી તુરન્ત વહાં સે વિહાર કર ગુરુ દેવ કે હર્થન કરને કી લાલસા સે નારદપુરી મે પધાર ગંયે । જિસ સમય ગુરુ શિષ્ય કી લેટ હુઈ ઉસ વક્ત કે હર્ષશ્રોત કા વણુંન કરના લેખની કે બાહર કા વિષય હૈ ।

અવોકિક પ્રતિલાશાલી ઔર વિનયવાન શિષ્ય કે દેખ કર ગુરુ મહારજ કી પ્રસ્તાવૃત્તિ મુણ્ણ ચંદ્ર જેસી

१७

यमकने लगी । शुरु हेव को हेखते ही हीर हर्ष के नेत्र से हर्षाश्रु दी नहीं अड़ने लगी । तदनन्तर हीर हर्ष मुनि ने तात्कालिक अनाये हुए १०८ कांचों में अडे अडे शुरुहेव की स्तुति करके शुरुहेव को सविधि द्रव्यादशवत वन्दना की । कैसे अन्द्र को हेख समुद्र की क्लोले उल्लास को प्राप्त करती है । कैसे ही शुरु महाराज भी सकल कला-ल्यास संपन्न विनीत शिष्य को पाकर हर्षित होने लगे । हीरहर्ष मुनि भी शुरु सेवा हार्दिक भाव से करते हुए सह शुणों का विशेष विकस्वर करने लगे ।

हीरहर्ष मुनि की विक्षिप्तापूर्ण चेष्यता ज्ञानकर कुछ सभय आद उसी नारदपुरी नामकी नगरी में आचार्य हेव ने संवत् १६०७ में श्री ऋषलहेव आसाद के सानिध्य में श्री संघ के समक्ष मुनि को पंडित (पंन्यास) पद ग्रहान किया । इस पद को लंबी प्रकार पालन करते हुए एक वर्ष पूरते ही नारदपुरी के समस्त श्री संघ ने मिल कर के आचार्य शुरुहेव से आर्थना की । हे प्रेसो ? हम क्लोणों का यह विचार है कि पंडित पद से उपाध्याय पद हिया जाय तो अहुत ही उत्तम होगा । शुरु हेव के हृदय सरोवर में भी ली ईस भात की लहरे चल रही थी और संघने आश्रु लरी विनती की जिससे शुरुहेव के विचार पूरे हो (मज्जूत) हो गये । श्री संघ की साक्षी में श्री नेमिनाथ भगवान् के मन्दिर में सुविहित शिरोभूषि श्रीमह विजयदान सूरीशरण के कर कमलों का शुल

१८

समय में हीर हर्ष पंडित को संवत १६०८ में उपाध्याय पद से विभूषित किये गये। आप भी अब उपाध्याय औ के कर्तव्य में पूरे संकलन रहने लगे।

उपाध्याय पद हेने के पश्चात् वाहिंगज के सदी श्री दानसूरिल ने अपने अंतःकरण में शोचा कि मेरे खाद लावी तपागच्छ नायक श्री हीरहर्षपाध्याय ही होगा। चूंकि इसरों की अपेक्षया ईसी की योग्यता एवं विद्वता अधिक है इसको सूरि पद पर ऐठा होना चाहिये। ऐसा विचार कर आयार्य हेव ने सूरि मन्त्र की आराधना ग्राहक ठर ही। जब आराधना करते हुए तीन भास पूरे होने में आये तभ सूरि मन्त्र का अधिष्टायक हेव सूरिल महाराज के सन्मुख प्रत्यक्ष होकर प्रसन्न चित से कहने लगा। हे धर्म नायक? हीरहर्षपाध्याय को आयार्यपद अविद्यम ही किये। क्योंकि आपके पटालंकार एवं उत्तराधिकारी होने की शक्ति ईसी उत्तम पुरुष में है। इतना कह कर हेव अंतर्धान होगया।

सूरिमन्त्राधिष्ठित हेव का उक्त परिभित वयन सुन कर के सूरिलने अत्यन्त प्रभोह लरे हुद्य से अपने मन में विचार किया कि यह अडे आश्चर्य की धटना हुई कि ईष्ट होने ली मेरे ही असिग्राय का स्पष्ट इप से अतुमोहन किया। तुरन्त ही सूरिल ने शिष्य मन्डल में आकर के हेव की कही हुई खाते कह सुनाई। गुरुहेव के प्रेम लरे शप्दों को श्रवण करके समस्त साधु मन्डल ने

१६

नअ भाव से यही कहा कि गुरु हेव ? जैसा आपका ईराहा होगा। वैसा ही कार्य शीघ्र पूर्ण होने की आशा है। तदन न्तर परस्पर सलाह करके संवत १६१० भार्ग शीर्ख शुक्ला दशमी के दिन शुल सुहृत्त मे भैरातसव पूर्वक सिरोही नगर के श्री चतुर्विंधि संघ समक्ष विष्णुध शिरोभिय विजयदान सूरिल ने तपा गच्छ के साम्राज्य दृप वृक्ष के धीज भूत श्री हीरहर्ष वाचक के आर्य पद्धति से विजूषित करते हुए श्री हीरविजय सूरि नाम रखा।

आर्य पद्धति का उत्सव सुप्रसिद्ध राष्ट्रपुर के मन्दिरल का निर्माता संघपति धरणशाह का वंशज और हुदा राजा का मन्त्रीश्वर चांगा संघपतिने किया। जिस दिन आप आर्य पद्धति पर आरेषठ हुए उस दिन हुदा राजने अपने राज्य में अंडिसा का पालन करवाया और प्रत्येक मास मे दशमी के दिन समस्त राज्य मे अंडिसा पलाने की घोषणा करही।

प्रिय पाठक वृन्द ? हेडिये ग्राचीन काल मे आर्य पद्धति की कैसी भर्याहा और भडता थी। भाग्यवान पुरुष पद्धति के नहीं चाहते थे, किन्तु पद्धतिये, पुन्यशाली भनु ऐं के हुंदा करती थी। ऐह का विषय है कि आजकल के अहंकारी साधु साधी पद्धतिये के पीछे लालायित रहते हैं गृहस्थिये के हजारों स्वप्ने का पानी करवा हते हैं। इन्ही पद्धति का स्वरूप हेडते हैं, अथवा हो यार मुख्य व्यक्तिये

२०

કે પ્રસન્ન કર કોઈ ટાઈટલ પાકર કૃતકૃત્ય હોજના હી કયા થથાર્થ પદવી લેના હ ? નહી કદમ્પિ નહી। યહ તો કેવળ આડમથર માત્ર હૈ વાસ્તવિક શોભા ઈસમે નહી હૈ. યદી ઉચ્ચ પદ પર ઘેરને હી ઈચ્છા હૈ તો પદવી પરમાત્મા કે ધર કી લેને કે લિયે પૂરા પરિશ્રમ કરના ચાહુયે. કિન્તુ હીક હ . નિર્ણય જૈન સમાજ મે વર્તમાન સમય મે જો નહી સો હી કમ હે.

સિરાહી સે વિહાર કરતે હુએ શાસન સાચાટ વિજય-હાન સૂરિલુ ને હીર વિજય સૂરિ કે પાઠણ શહર મે પૃથ્રે ચાતુર્માસ કરને કી આજા ફરમાઈ. ઔર આપ સ્વયં કોકણ દેશ કી ભૂમિ કો પાવન કરતે હુએ સૂરત બંદર પાધારેં.

ઇધર જ્યસિંહ નામક એક બાલક અપની માતા કે સાથ મામા કે ધર પર એશ આરામ સે દિન વ્યતિત કરતા હુએ સખ લોગો કો આનન્દ હે રહા થા. આપકા જનમસ્થાન સ્વર્ગ સંજિલ મેહપાટ (મેવાડ) કે અન્તર્ગત નારદપુરી મે થા. નારદપુરી કી અન્વર્થ સંજ્ઞા યું હે કી નારદસુનિ ને મેહપાટ કી ધર્મ મહિમા કો સુન કર નેત્ર કી તૃપ્ત્યર્થ આકર્પૂરી તરહ પરીક્ષા કી, પરીક્ષા કે બાદ નારદ વિદ્યા ફૈલાને કે નિમિત કુછ દિન ઠહર ગયે જિસસે વો સ્થાન નારદપુરી સે વિખ્યાત હો ગયા. મેહપાટાધિશ સે નિજ કલ્યાણન કે ઉપલક્ષ મે ઉપહારભૂત હોને કે નિમિત વો નગરી વર્તમાન મે જોધપુર રાજ્યાન્તર્ગત ગોડવાડ પ્રાન્ત મે સુશોભિત હૈ ।

२१

ओंक दोज की भात है कि यह खालक अपनी माता से कहने लगा. मा ? अब मैं अपने पिता कम्मा, ऋषि की जांति जन्म मरणादि विषयों के नाश करने वाली हीक्षा के अहंकृत करने की धृच्छा रथता हूँ. जो मार्ग मेरे पिताजु ने अपनाया था उसी मार्ग पर मैं भी चलना चाहता हूँ. इस भात के सुन कर माता अश्रुपात के साथ कहने लगी. ऐटा ? तू अली बहुत ही छारा है. ओर हीक्षा के समझता ही क्या है ? लोह भार के समान विषम ऐजेवाली और शारीरिक सुख के ध्वंश करने वाली हीक्षा तेरे धोग्य अली नहीं है। है वत्स ? तीक्ष्ण तलवार की धार पर चलना सुकर है किन्तु हीक्षा व्रत का पालन करना सुकर नहीं. है पुरा ? अली तू हेवांगना तुल्य सुनहर स्त्री के साथ विवाह कर समर्पत संसारिक सुधों का अनुभव करले. परन्यात् तेरी धृच्छा के अनुसार कर देना.

इस प्रकार जननी का वचन सुनता हुआ जय सिंह अपनी माता से कहने लगा अभ्य ? आसनोपाकारी महावीर ग्रन्थ ने आत्यन्तिक सुखार्थी पुरुषों के लिये गृहस्थाश्रम महा पाप का कारण भतलाया है. औसे क्यों कहती है मुझे जी तो सुख को ही लालसा है. तुम से भताचे हुए सकट माला चढ़न वनितादि जन्य सुख क्षणिक है वास्तविक सुख तो हीक्षा जन्य ही है. अतः महा पुरुषों से प्रदार्शित अत्यन्तिक सुख मोक्ष मार्ग

२२

पर जाने में आधक भत छा, मेरी तीव्र मुस्क्षा की प्रथन्न अजिन तेज से धधक रही है। इस शान्ति के लिये ज्ञानाभृत वृषा सद् गुरु दृप नृतन जलधर के सिवाय धृतर से अशक्य है, अतःविषय वासना जल के भोयक सद् गुरु की ही शरण लेना आवश्यक है। तूं गम्भीर लाव से विचार करदें और अतिशीघ्र आज्ञा हेहें।

भाता कोडिम हेवी ने अद्भुत विवेक को हेख कर आलक के साथ ही सूरत में विराजमान आचार्य हेव के चरणों में जने के लिये प्रस्थान किया। भार्ग में जगह जगह हेव दर्शन गुरु वंदन करते हुए लाव चारिन को हृदतर करके यथा सभय सूरत बन्दर पहुंच गये। अपने सुकुमाल आलक जयसिंह के साथ कोडिम हेवी गुरु हेव को सविधि बन्दना करके विनीत लावसे सांजली सानुरोध आर्थना करने लगी।

हे प्रलो ! मेरी हाँईक लावना है कि इस आलक के साथ मे ली चारिन अहंषु पूर्वक अपनी आत्मा का कल्याण कर दूँ। आप हम होनो पर अनुअह कीलये धृतना कहने पर वैवी की तीव्र उत्कन्ठा हेख कर गुरु महाराज ने होनो की पुनः पुनः परीक्षा करते हुए आलक की सर्व लक्षण सम्पन्नता संहिष्णुता और अद्भुत क्षमिष्णुता को हेख कर हीक्षा का मुहूर्त श्री संघ को सूचित कर दिया। श्रीवक गण्डु बडा महोत्सव धाम धूम पूर्वक करने लगे हीक्षा के दिन नाना प्रकार के आभूषणों

२३

से सनिकरत करके गज पीठस्थ जयसिंह कुमार को नगर में अतुरदिक्षु धूमाते हुए गुरु महाराज के अरण्य क्षमलों में द्वे गये। दर्शक जनों की लीड मधु मक्खीयों की तरह छोने लगी। नियत हीक्षा स्थान पर संवत् १६१३ ज्येष्ठ शुक्ला एकादशी के दिन शुल मुहूर्त में जयसिंह कुमार और उनकी जन्मदाता कोऽिम हेवी को शुरुवर श्री. मद्दिजयदान सूरिल ने श्री. संघ के समक्ष में हीक्षा हेही। जयसिंह का हीक्षित नाम जय विमल रथा नूतन हीक्षित हीक्षा के समय ६ वर्ष के थे। आपने अद्य समय में ही पंच प्रतिक्रमण नवसमरण साधु आवश्यक किया शुभ विचारादि प्रकरण तीन लाख कर्म अन्थ क्षेत्र समाप्ति शास्त्रों का अध्ययन विधाताकार श्री. विजयदान सूरील से कर लिया।

ऐक हिन तथागच्छाधिपति विजयदान सूरिल आपने भन ही भन विचार विमर्श करने लगे कि जय विमल सुशील विनित ऐवं महा प्रतिक्षाशाली है यहि श्री हीरविजय सूरि के पास लेज हैं तो आशा ही नहीं अपितु दृढ़ विश्वास है कि उनकी भवानी की घोष्यता के। आलेगा। इदि भेरी लुज्जये संसार में सूखे अनन्द की तरह हिन रात चमकने लगेंगी ऐसा शोय कर के शुरु महाराज ने अविलम्ब जय विमल को अतुर्मास पूर्ण छोतेही श्री हीर विजय सूरि के पास जाने की आज्ञा

३४

हेही, ज्य विमल गुरुदेव को वन्दना के बाद जब प्रयाणु
करने लगे तो उत्तमोत्तम लालसूचक "शुकुन होने लगे.

क्यों न हो महापुढ़ों का चिन्ह हो कि उनके पदारपणु
के पहुंचे ही आगे आगे आनन्द मंगल की श्रेष्ठी अठने
लगती है. तदनंतर अडे उत्सुकता से चलते हुए हीर-
विजयल के सान्निध्य में पहुंच गये. गुरुदेव के पटालंकार
शासन सम्राट श्री हीरविजय सूरिल के दर्शन से ज्य
विमल हुर्ष सागर में डुबते हुए सविधि वन्दना में
दृतपर होगये. बाद श्री हीरविजय सूरिलभी आगन्तुक
नूतन आव सुनि के शिर पर आमोदादित हृदय से अपना
हाथ फेरते हुए विहार की कुशल वार्ता पुछने लगे. प्रत्युत्तर
मिला कि आपके अनुशङ्ख से मार्ग में उसी प्रकार की
तकलीफ नहीं हुई. लघु सुनि की आकृति के आनुपूर्वी
प्रिय मधुर वयन सुनकर सर्व सुनि अनुल और श्री
संघ अडे प्रसन्न हुए. ज्य विमलल सविनय आर्य
देव के अरणों में रहते हुए विद्याल्यास में संलग्न होगये.

धृधर श्री विजयदान सूरिल सूरत अन्दर से विहार
कर अनेक लब्ध लुवों को धर्मापदेश हेते हुए श्री वटपती
(वडाली) नगर में पहुंच गये. कुछ दिन के बाद मे
आपने अपना अन्त समय जनकर शिष्योपशिष्य समुदाय
को गुप्त गूढ विषयका सारबाव सरलता से समझा दिया
अब संवत १६२१ वैशाख शुक्ला द्वादशी के दिन परम-
पद की निष्गमिता से समाधिस्थ होकर ४०८ देव को

૨૫

પ્રયક્ષ કરતે હુએ નિજ શરીરસ્થ જીવ જાયોતિ કો પરમ જાયોતિ મે એકીકરણુ કરવી (દેવલોક હોગયે) આપકો પારલોકિકતા સે જૈન જગત કૃષ્ણ પક્ષીય અમાવાસ્યા કે જૈસી અંધકારમય હોગાયા. જનતાગણ ને ગુરુ ઉપહિષ્ટ વચન કે સ્મરણ સે શોક સાંઘાન્ય કો અતિ શીંગ હી તિલા-જલી હેતે હુએ ચિર સમારક શુરુ પાહુડા સ્થાપન કરને કે લિયે એક અતુલ મનોહર સ્તૂપ નિર્માણ કરવા કર ચન્દ્રોદય હી પ્રતિક્ષા કરને લગે.

ઈધર લી હીરસુરિલુ કો હૃદય જલમધ્યસ્થ ચન્દ્ર સૂર્યાદિ પ્રતિભિમબ કે જૈસા કર્યાયમાન હોને લગા. આપ મન હી મન એહિત હોકર પૂજય કી કે વિરહ મે કસ્યાસ્તવર સે કહુને લગે. હૈ ગુરૈ ? આજ તુમહારે પરલોક સિધાર જાને સે ધીરતા નિરાશ્રય હોગાય. વિનયકા અખ કોન શરણ હૈ ? તુમહારી એસી શાન્તિ સહનશીલતા કો કોન ધારણ કર સકેગા ? વિધા વિવેક દાન શીલતા નાટ હો ગઈ, સત્ય આજ સચ્યાસુચ્ય મારા ગયા, કસ્યા અખ બિચારી કિસકી શરણ મે જાયગી ? હૈ ગુરુન્દેવ ? તુમહારે બિના આજ જગત હી શૂન્ય હોગયા । (આપની આત્માસે હે જીવ ? તેરા મણી એ ગયા તૂને અલી તક ઈસ શરીરકે સાથ સમબન્ધ કેસે રખા હૈ. તુઝે ધિક્કાર હૈ કી પૂજયપાદ કે પીછે નહીં પડા. અખ તૂં કિસકી શરણ જાયગા. આપની બાત કીસકે સામને રખેગા. તેરી શાંકા કો કૌન દેશ નિકાલા હેગા ।

२६

तूं किसकी सेवा करेगा अब तेरा आश्रवासक कौन होगा ? तूं जल्दी से जल्दी शुभ की ओज़ मे लगज़। अचेतन छाया भी अपने आश्रय को नहीं छोड़ती तो तूं चेतन छोड़ अपने आधार को छोड़ कर कैसे स्थिर हो तूं जल्दी आर खिल्कार है कि अब तक यहां वर्तमान हो। उठ जल्दी उठ सोदेग मे अडे होते हैं कि धृष्ट हेवने सामने आकर के कहा। कि हे सूरिराज ? आपकी अधीरता शोला नहीं होती। आम त्यागी और विवेकी विद्वान है। विवेकियां को पश्चाताप आत्म कल्याण मे आधक हुआ करता है। आत्मा अमर है। आत्मा और शरीर का सम्बन्ध अनित्य है। इन होने के सात्यनितक सम्बन्ध विच्छेद के लिये ही योगी जन अनेक जन्म से प्रयत्नशील रहते हैं। जन्म होने से भरण नियत ही रहता है “ जलस्य हि ध्रुवे भृत्यु ध्रुवं जन्म भृतस्यथ ” अत्येव शोक से पृथक् छोड़ आत्म साधन मे लग जाए। आपकी मानसिक चिंता फ़र छो जायगी। आप अपने शुभहेव के प्रसाद से संसार मे अतुल छोड़ अन्नालक के मुकुटालंकार बनेगे। इतना कह कर हेव के अंतर्ज्ञान होने पर श्री हीर सूरिल गई हुई आतों को भूल कर अपने नित्य नैमित्तिक कार्य मे ताहवस्थ्य हो गये।

कुछ समय मे ही द्वितीय चंद्रस्य श्री हीरस्फूर्ति भद्राराज को तपागच्छ गगन मनुष्य मे समुद्दित हेव कर जनता गण, प्रभुद्वित मन से प्रणाम पुरवसर गद भद्र

२७

स्वर से प्रार्थना करने लगे. लगवन्? अब आप ही जैन जगती का प्रकाशक हो, आपके सिवाय कोई नहीं हम लोगों का अज्ञानतमो वृन्द हो। अपहरणु करने वाला है। हम लोगों के हृदय क्षेत्र में स्वर्गीय हानसूरिलु के उपहेश भीजड़ा जानांकुर होने आया हि आप अमर होकर परोक्ष हो गये। अब पूज्य पाद-श्रीमान् के उपहेशामृत सिंचन से ही ज्ञानतद् का भौक्ष दृप इल होगा। अन्यथा परम असरस्वत है, अतःकुपा कीजिये, विशेष कुया निवेदन करे,

“विषवृक्षो पि संवर्ध्य स्वयं छेतु भसाम्प्रतम्”

साधारण लोक में भी नियम है हि विष पौधे को भी अढ़ा कर अपने आप छेदन करने में समर्थ नहीं होते। अमृत इल पौधे की उपेक्षा करना क्या उचित होगा? नहीं। कहापि नहीं।

श्री हीरसूरिलु महाराज ने जनता डी. उद्घारता को देख कर अचिर काल में ही अपने उपहेशामृत वर्षणु द्वारा शिव-सुकित कुसुम को अढ़ाने लगे।

ऐक समय में श्री हीरविजय सूरिलु सूरिमन्त्र का आराधन करने के इच्छुक होकर विहार करते हुए उसा शहर में पधारे। क्यों की यहां के लक्त श्रावकगण अड़े आस्तिक और गुरु प्रिय थे। धस नगर में आने के बाद सभ साधुओं को पढ़ाने, चोरोंवडन किया कराने

१८

और व्याख्यान आहि का समस्त लार जय विमल पर छोड कर आपने गैमासिक सूरि मन्त्र का ध्यान करना प्रारम्भ कर दिया। जब ध्यानारुद्ध सूरिलु को जन कर सूरिमन्त्राधिष्ठायक हेव ने सूरिलु की मानसिक वेहना को समझ कर स्वेनावस्था में प्रत्यक्ष होते हुए कहा कि आप अपनी समाधि में अवल रहे। और जय विमल को अपने सिर का लार सोंप हे। उनकी योग्यता अपरि पूर्ण नहीं है। इतना कहने के बाद सूरिलु की आंख खुल गई। इष्ट हेव प्रसन्न होने का एक ही कारण थाकि आप की गुरु लकित प्रशंसनीयथी। एक वक्त की वात है कि एक गांव से आपके शुरु श्री महविजय दानसूरि-श्रवण्डु का पत्र आया था उसमें सिर्फ इतना ही लिखा हुआ था कि जैसे धने वैसे जहाँ मेरे पास आये। क्योंकि जड़ी काम है। मिलने पर कहा जायगा।

इस प्रकार का पत्र हीरसूरिलु के हाथ में आया। उस दिन आप के छह दी तपस्या का पारणा था। परन्तु विना पारणा किये ही पत्र पढ़ते हैं साथ रवाना होने लगे। उसी समय श्री संघने एकत्रित होकरके प्रार्थना की कि शुरुहेव? आपको विहार करना है, लेकिन संघका आश्रह है कि आप पारणा करके पधारें। एक आध घंटा देरी से शुरुहेवकी सेवा में पहुँच जायेंगे। इतनी कृपा करें।

३६

संघ का अधिक आश्रम होने पर भी विना पारणा
किये ही रवाना हो गये। और जल्दी से जल्दी चलते
हुए गुरुहेव की सेवा में पहुंच गये। विजय हान सूरिल
के। भी उठा आश्र्य हुआ और पूछा कि इतना जल्दी
कैसे आगया?। तभी हीर सूरिलने कहा कि गुरुहेव?
आपकी आज्ञा शीघ्र आने की थी। तो मैं कैसे ठहर
सकता?। इस लिये मैं जल्दी पहुंच गया। गुरुहेव भी
शिष्य की तत्परता और गुरुनिधि। देख कर उड़े प्रसन्न
होकर अपने को धन्य समझने लगे।

इस प्रसन्न होते हुए ध्यान से सुकृत होकर विचार
किया कि ज्य विमल नामक शिष्य शेखर के। आपने पाट
पर ऐढ़ा हेना चाहिये। आपने भन ही भन विचार के।
न रथ कर कार्य इप मे लाने की पूरी काशिश करते
हुए समस्त साधु साध्वी श्रावक श्राविका इप अतुर्विध
संघ के समक्ष अपने हृदय का उद्गार जाहिर कर हिया
श्री संघ गुरु हेव के अलिप्राय के। सानन्द अनुमोदन
करते हुए प्रार्थना करने लगा कि इसी स्थान पर कुछ
दिन और छिराजिये।। परन्तु कार्यवश आर्य हेव ने
दीसा से शिष्य सहित विहार कर हिया।।

ज्य विमल मुनि सूरिल से अध्ययन करता हुआ
प्रसिद्ध प्रसिद्ध शास्त्रों मे नैपुन्य प्राप्त कर लिया व्या-
क्तरण सम्बन्धी अनेक अन्थों के पढ़ते हुए काठ्यानुशासन
काठ्य प्रकाश वाग्बटालंकार काठ्य कृपता छन्दानुशासन

૩૦

વૃહદ્દ રત્નાકર ઈત્યાહિ અન્થેં કા લી રહુસ્ય સે વાકિદ્ર હો ગયે । ન્યાય શાસ્ત્ર મે સ્થાદ્વાદ રત્નાકર અનેકાન્ત જ્ય પતાકા રત્નાકરાવતારિકા પ્રમાણુમીમાંસા ન્યાયાવતાર, સ્થાદ્વાદકલિકા, એવં સત્ત્વમતિ તર્કાહિ જૈન ન્યાય અન્થ તથા તત્ત્વ ચિન્તામણિ, કિરણુવલી, પ્રશસ્ત પાદ ભાગ્ય, ઈત્યાહિ શાસ્ત્રો કા લી અધ્યયન સે દ્વિગ્નજ પાંડિત્ય કો પ્રાપ્ત કર લિયા ।

તદ્દનન્તર હીરવિજ્ય સૂરિલુ અમાનુથામ ખર્ચન કરતે હુંએ સ્તમલતીર્થ પધારે. સ્વાગત મે શ્રી સંધ ને શુરુ હેવ કે ચરણ વિન્યાસ કે પ્રતિપાદ પર હો મોહરે ઔર એક રૂપયા રખતા હુઆ એવં મોતિયેં કે સ્વસ્તિક કરતે હુંએ સૂરિલુ કો નગર પ્રવેશ કરવાયા ભક્ત જ્ઞેં ને પ્રભાવનાહિ ખર્મ કૃત્યેં મે એક કરોડાત્મક રાજ્ય દ્વાય કા સહૃદ્યય કર અમૂહ્ય લાલ લિયા. ઈસી નગરી મે રહુતી હુધ એક પુની નામ કી શાવિકાને ખહુત દ્વાય ખર્ચ કરકે સુનદર રચના પૂર્વક શ્રી જિનેશ્વર હેવ કે પ્રાસાદ કી પ્રતિષ્ઠા એવં મૂર્તિયેં હી અંજનશાલા કા પૂર્વક સ્થાપના યથા ચોજ્ય સ્થાન પર કરવાઈ ।

નગર કે લોગેં ને જ્ય વિમલ કે પાંડિત્ય કો દેખ કર અકિત હોતે હુંએ આચાર્ય હેવ સે પ્રાર્થના કી કિ શુરુ હેવ ? જ્ય વિમલ મુનીશ્વર કી વિક્રતા કી સખી તેજસ્વીતા પન્ડિત પ્રિય કો ચાહતી હૈ દ્વિર કયા થા.

३१

“ध०ट् वैद्योपहिंट्” “जे त्यागी के भावे वा वैदा
इरमावे”.

इस न्यायसे सूरिलु ने अपना निश्चय करके संबत
१६२६ काल्पुन शुक्रवार दशभी के दिन त्यागी और वैशाखी
श्री ज्य विमल के पंडित पठ से विभूषित कर हिये.
उस समय समस्त श्री संघ ज्य ध्वनि के नारे लगाते
हुए असीम आभास से उन्मत्त हो गये. तदनन्तर स्तम्भ
तीर्थ से विहार करते हुए अहमदावाद आ पहुंचे.
अहमदाबाद के सभीपस्थ अहमदपुर के शाखापुर में
आपने आतुर्मास आनन्द पूर्वक किया.

ऐक समय सूरिलु रात्रि में संथारायोरिसी (शयन-
कालिक पाठ) पढ़ा कर गच्छ सम्बन्धी विषय की चिन्ता
करते हुए तन्द्रा हेवी के प्रत्यक्ष कर रहे थे. उस समय
अधिंठायक हेव ने कहा कि है सूरीश ? आप अपने पाठ
पर सुचेऽय पंडित शिरोमणि श्री ज्य विमल के प्रतिष्ठित
करके चिन्ता राक्षसी के सुख से आहिर भूत हो जाएं।
यह श्री महावीर परमात्मा के पाठ परमपरा पर ऐक
दिवाकर इप होने वाला है. यह शब्द सुनते ही सूरिलु
तन्द्रा सुकृत होकर अपने शिष्यों के हेव की भाते कह
सुनाए तथ बायक पंडित गीतार्थ प्रसुभ समस्त साधुने
नग्रता पूर्वक आचार्य हेव से प्रार्थना की. है अलो ? श्री
संघ के साथ हुम लोगों की ईच्छा है कि ज्य विमल
पन्थास के आचार्य पठ पर आसीन कर हेना आहिये

४२

એવં હેવ વાણી શ્રી સંધવાળી ઔર અપના અલિપ્રાય ધન ત્રિપુરિચોં સે આચાર્ય શ્રીલુ ને એવ મદ્તુ કહ દિયા. તત્પશ્ચાત્તુ અમહાભાઈ શ્રી સંધ કે અત્યાગ્રહ સે આચાર્ય પદવી કા અઠાઈ મહોત્સવ ધૂમ ધામ પૂર્વક હો ને લગા. નગર સેઠ શ્રી મૂલચન્દ્ર ને જિન ચૈત્ય જિન પૂજા ગુરુ ભક્તિ જ્ઞાન પ્રલાવના સ્વામી વાત્સલ્ય આદિ ધર્મ કુમેં કે રૂલ કે જિનાગમ મેં કહે હુએ સમજ કર અપની શક્તયનુસાર ઉત્સાહપૂર્વક શ્રી શત્રુંજ્ય તીર્થ પર ઋષલહેવ ભગવાન કે મનિદર કી દક્ષિણ પશ્ચિમ દિશા મેં ચૈત્ય બનાને કી તરફ ઈસ મહોત્સવ મેં લી પૂર્ણ સ્વોપાજીંત લક્ષ્મીકા સહૃપચોગ કરકે અમૃત્ય લાલ પ્રાપ્ત કિયા. એવં ઈસ ઉત્સવ કે ઉપલક્ષ મેં નગર સેઠ ને શહુર મેં દાનશાલાએ ખુલવાઈ. જગાહ જગાહ પર ધવલ મંગલ ગ્રાયક જૈદાયે. વર ઘોડ નિકલને લગે. ઔર સ્વામી વાત્સલ્ય કી ધૂમ મચને લગી. ઈસ પ્રકાર સર્વાલંકાર સે અદંકૃત ચંચલા લક્ષ્મી મહોત્સવ કી અપૂર્વ શોલા અદાને લગી.

ઈસ પ્રકાર સમારોહ પૂર્વક સંવત ૧૯૨૮ ફાલગ્નન શુક્રવાર સાન્તભી કે દિન શુલ સમય મેં જય વિમલ કો ઉપાધ્યાય પદ કે સાથ આચાર્ય પદ પર વિલુપ્તિ કરતે હુએ પદસાગર ઔર લાભધ સાગર પંડિત પદ સે એવં વિમલ હર્ષ ઉપાધ્યાય પદ સે અદંકૃત કિયે ગયે. સૂરિલુ ને જય વિમલ કો આચાર્ય પદવી હેમેડે સમય શ્રી વિજય સેન સૂરિ નામ કરણ કિયા। ઈસ ઉત્સવ મેં સર્વભિત્તિ

33

संज्ञनों के इच्छें की प्रलावना ही गई और याचक वर्गों के ५०४ वर्षादि कारा सन्तुष्ट किये गये:

यह होना शुरू शिष्य आचार्य श्री तपागच्छ रूपी शक्ट के चलाने मे धूरा रूप बन गये और लव्य ज्ञानों के हृदय क्षेत्रमे धर्माकुर के दोपते हुए पृथ्वीतल के पावन करने लगे. उस समय कुटीर्थियों का प्रयार अनेक स्थानों से जाठता हुआ स्वार्थ लीला की महिमा का अध्य-पतन हो गया, एक समय गुजरात प्रदेश मे विचरते हुए होने प्रतिलाशाली आचार्य के अन्यानक अभूतपूर्व घटना होने मे आहि. वह क्या ?

लूँका गच्छ का अधिकारी सर्वेसर्व मेधल नामका एक सुयोग्य विदान था. वह स्वयं शास्त्र पठता हुआ भूर्ति पूजा का उल्लेख होते कर आचार्य श्री हीरविजय सूरिल के पास अज्ञानदृपी अंधकार के हुर करने की आकांक्षा प्रकट की. एवं मेधल के २७ साधुओं ने भी उक्त सूरिल के सन्मुख उपस्थित होकर अपने हृदय की लावना हरशाई. इस पर अमहावाह मे विराजमान उक्त आचार्य हेव ने मेधल आदि साधुओं के लूँका-गच्छ की दीक्षा का त्याग करवा कर अति महोत्सव पूर्वक संवेदी दीक्षा प्रहान कर उद्घोतविज्ञमल नाम रभा अथ नूतन २७ मुनियों के संवेदी शिक्षा क्षेत्र मे उतारते हुए आवश्यक किया कांड मे कुशल बनाने

૩૪

લગે. મુનિ ઉદ્ઘોતવિજયાલુ આહિ ૨૭ શિષ્યોં ને જી
શુરૂ દેવ કી સેવા મે રહુ કર અધ્યયન કરતે હુએ વિનય
શુક્તપારસ્પરિક ભાવ સે વિદ્ધદ્રગોણી મય સમય વ્યતીત
કરના શરૂ કિયા.

કુછ સમય કે ખાદ અમદાવાદ સે વિહાંર કર કે
આચાર્ય ઉપાધ્યાય પંડિત આહિ સાધુ મહા મંદિર
સહિત આચાર્ય શ્રી હીરવિજય સૂર્યિલ વિચરતે હુએ
જી અણુહિલપુર પાટન મે આ પહુંચે. ચાતુર્મસ કા
આસન્ન સમય એવં હેવાતુ ઉપસ્થિત શુરૂવર્ય કે. નિરીક્ષણ
કરતે હુએ જી સંધ સે સવિનય પ્રાર્થના કરને પર આ-
પને ઈસ્ત્રી નગરી મે ચાતુર્મસિક નૃતન જલધાર કે જૈસી
ધર્મપદેશ સુધા કી વર્ષા કી. ચાતુર્મસ કા અવસાન
હોને પર સંવત ૧૬૭૦ ચોષ કૃષ્ણા ચતુર્દશી કે દિન
અપને અદૃધર શ્રી વિજય સેન સૂર્ય કે. ગચ્છ કી
સારણાવારણા ઓર પદિચ્ચોયણા પૂર્વક ગચ્છ રૂપ એશવર્ય
કે સાગ્રાજય રૂપ શાસન કી ગઠિ પર જોડા હિંદે. ઈસ
શુલ અવસર પર મર્દધર માલવા મેદપાટ સૌરાષ્ટ્ર બના-
રસ કચ્છ કેંકણ આહિ હુર હુર દેશ કે અનેક લોગ સંગ
દિત હુએ થે. શ્રી વિજયસેન સૂર્ય ગચ્છ સંબંધી સમ-
સ્ત અધિકાર પ્રાપ્ત કરકે ઈન્દ્રાસનાસીન ઈન્દ્ર કે સમાન
શોભાય માન હોને લગે. ।

જિસ સમય હીરસૂર્યિલ ને વિજયસેન સૂર્ય

३५

के। गच्छ सम्बन्धी अनुशा दी थी। उस समय में इस गच्छ आधिपत्य के साथ गच्छ से तेरा संबन्ध अविचल हो और आजुवन पर्यन्त गच्छ से विद्याग न हो। इतनीआत संक्षेप में सार गर्भ कही थी। ऐसे शुद्धहत शुभाशीर्वाद के शिरोधार्य करते हुये विजय सेन सूरिल शासन की शोला अधिक झटाने लगे।

ओक वक्ता पाठ्य में विजय सेन सूरिल के पाट महेत्सव पर राजा का प्रधान मंत्री हेमराज ने अतुल द्रव्य खर्च किया। उस वक्त वहां का सुप्रेद्धार कलाखान बड़ा अन्याय प्रिय था। इस अनिति के कारण सारी प्रजा अशान्ति भय अपना समय व्यतित करतीथी। सूरिल के जहिर व्याख्यान द्वारा विद्वान् की कीर्ति कलाखान के क्षेत्रोंपर पहुंची। जिससे कुतूहलता पूर्वक हीर-सूरिल को आमन्त्रण सेन “सत्ये नास्ति सत्यं क्वचित्” इस नीति के जायुक्त सूरिल निःर पूर्वक कलाखान के राज महालो में पहुंचे। कलाखान ने स्वागत पूर्वक कुशल क्षेम की आत चीत करके प्रश्न किया कि महाराज ? सूर्य उंचा ह या चन्द्र ? गुरुज्ञ ने उत्तर दिया कि चन्द्र उंचा ह। कलाखान साक्षर्य छाला महाराज ? हमारे सिद्धान्त में तो सूर्य के उंचा भाना ह। और आप चन्द्र बता रहे हैं। यह किन्तता क्यों? इस पर सूरिल ने कहा कि राजन् ? मैं न तो सर्वस छूँ न शानी छूँ और न मैं उपर जाकर के हेअ कर आया

३६

हुँ। केवल मैंने शुरुसुभ से सुना है और सिद्धान्तों में पढ़ा है। उन शास्त्रों के आधार पर ही मैं कह रहा हूँ अब तुम्हारी इच्छा हो। वह तुम मानदे।

आचार्य हेव के सरल वचन सुनकर क्लाखान विचार मध्य हो। कर मनही मन शोयने लगा कि महात्माने ठीक ही कहा है। यूँकि यह वस्तु वास्तिवक अगम्य ह और परोक्ष है। इसलिये शास्त्रीय आज्ञानुसार सूरिलु का वचन अवश्यक सत्य ही है।

इस प्रकार मानसिक विचार कर के ऐला महाराज? आपकी सरलता और विकृता पूर्ण वक्तव्यता पर यड़ा प्रसन्न हुआ हूँ। आप हमारे उपर कृपा करके काम सेवा इरमाएंगे।

सूरिलुने उत्तर मैं कहा कि राजन? आज से परस्ती त्याग का नियम लीजिये। और तुम्हारे केवलाने मैं यड़े हुए केहियां को छोड़ हीजिये। क्लाखान ने परस्ती का नियम लिया। और सभ को धर्म भूक्त कर दिया। और शानदार स्वागत पूर्वक सूरिलु को सानन्द अपने स्थान पर (धर्मशाणा) पहुँचा दिये।

तदनंतर अद्य स्वभय में ही गर्छ का उघोतक एवं व्याघ्रान पटु शिष्य विजय सेन सूरि को हेख कर विजय-हीर सूरिलु अपने भनोमन्दिर में परामर्श हेव को स्थापन करने लगे कि विजयसेन सूरिलु मेरे से पृथक्

३७

विहार करे तो अहुत देशों के लब्धें डै पवित्र करने मे जाग्यशाली बन सकेगा। और आचार्य पह डै ली गौरव छाठा सकेगा। ऐसा विचार करके विजयसेन सूरि के पृथक विचरनेकी आज्ञा हेही। गुरु आज्ञारूप माला डै अपने हृहय मे धारणु करके विजयसेनसूरि अहु संभयक साधुओं के साथ पर्यटन करने लगे। एक समय हेशाटन करते हुए अभ्यानेर नगर मे पहुँचे। उस नगर मे एक ज्यवन्त नामक शेठ ने चंचला लक्ष्मी डै सहृदयोग करने के लिये सं० १६३२ मे आ विजय सेन सूरिलु के कर कमलों कीरा अनाये हुए अनिदृ की अजनशालाका पूर्वक अतिष्ठा करवाई।

आठ वर्षों से विहार करके सूरिलु सुरत अन्दर पधारे। वर्षों की नागरिक जनता ने स्वागत पूर्वक चातुर्मास की आश्रु लरी विनति की जिसके। स्वीकारकर आचार्य हेव चातुर्मास के लिये हक्क गये सूरीश्वरलु की विभावा कीर्ति चतुष्क्षु ईलने लगी। उस कीर्ति ज्वाला डै सहन न करके एक हिंगम्भरीय भूषणु नाम का पंडित सूरिलु से शास्त्रार्थ करने के लिये तैयार होगया। तर्कज्ञ सूरिलु के लिये शास्त्रार्थ करना परम सरलता की बात थी। सूरिलु ने भूषणु पंडित का हुःसहास सुन कर कै मुत्क न्याय के पात्र समझ कर उसे खुलाया और होने। पक्ष के माननीय पंडितों की अध्यक्षता मे इसके प्रत्येक वयन डै प्रतिशाहानि प्रतिशानन्तर झैवालास सूषणु दूवार

३८

निरुहित पराजय करके विजय सेन सूरिलु हुअे तथा भूषण पंडित निरुतर होइर अनेक स्थाद्वादानुयायि पनितों की सला मे हास्य पान अने. सूरिलु सूरत अन्दर मे अनेक प्रकार से जैन धर्म की विजय पताका प्रहराते हुअे चातुर्मास पूर्ण होते ही विहार करके गुजरात मालवा मङ्गधर भेदपाट आहि होशों डो. पांचन करते हुअे अपने वचनाभृत द्वारा अव्य उवों की आत्मा डो तृष्णि करने लगे.

ऐक समय अंधकार डो नाश करता हुआ सूर्य हेव अपनी किरणों द्वारा सरौवरस्थ कमल डियों को विकसवर करने लगा. ऐव छिन्ह जैन मंदिर मे धंटा नाद होने लगा, मस्तिष्ठ मे अह्मा हो अकबर की पुकारे होने लगी. पशु पक्षी अपने स्थान से वन विहार करने लगे. पतिव्रता स्त्री अपने पति हेव के पूर्व आसन छोड कर गृह कार्य मे संलग्न होने वाली कुलठा स्त्रीये अपने कुटुम्ब मे कलह भयाने लगी. इत्याहि संसार की अहलुत लीला अपनी नृत्य करने लगी. ऐसे समय मे जारतवर्ष का सर्वे सर्वा भुगत सआद् अकबर आदशाह अपने इतेहपुर शिकरी के शाही भड़क मे जैठ हुआ राजमार्ग पर दृष्टिपात कर रहा था,

अकबर खडा मांसाहारी और खडा हिंसकी था। पांच सौ चीड़ीयों की उहा का लोजन प्रातःकाल क्लेवे

३६

में करता था। अत्यन्त कामी एवं अन्याय का मन्हिर था। समस्त क्षत्रिय राज्यों के अपने पेर में जुका हियाथा और राज्यपूत आलाओं का सतीत्व नष्ट करने में अपना सर्वस्व समझता था। भारत के तमाम राज्यों ने अक्खर की आज्ञा का पालन करना शुरू कर दिया था। परन्तु मेहपाठाधीश अक्खर का सामना १२ वर्ष तक करता रहा। आभिर हिन्दु कुल सूर्य महाराष्ट्रा प्रताप की विजय हुई। जेडि आज धतिहास के कौने कौने में प्रसिद्ध हैं। अगर इस संसार में शिवालि मराठा और महाराष्ट्रा प्रताप न होते तो न मालूम हिंदु जाति की क्या दशा होती?। परन्तु हिंदु जाति का लाभ उन्नति था कि ऐसे महा पुरुषों ने सभ्य पर जन्म लेकर के हिंदु जाति का गोरव समुक्त रखा। महाराष्ट्रा प्रताप के नाम से तो अक्खर हरवण्ठ सावधान रहता था कि भी ऐसा प्रौढ प्रभावशाली अक्खर अपने टोडरमल आहि राज मंत्री के साथ बात चीत करता हुआ उधर उधर हेथ रहा था।

इतने भेषेक खड़ा लारी जुलुस राजमहल के नीचे छाकर आनिकला। जिसमे एक पालकी ली थी। और श्री हीरविजय सूरिलि एवं जय हो ऐसे नारेलग रहे थे। अक्खर ने आश्र्य से सभीपस्थ टोडरमल को पूछा टोडरमल भोला कि जहांपनाह? यह जुलुस जैन धर्म वालों का है। जिसमे एक यम्पा नामकी आई सुन्दर

४०

वस्त्र धारणु की हुई पालकी में बैठ कर इलाहूल लेकर
के लगवतदर्शन के निमित भन्दिर मे जारही है पालकी में
बैठने का तात्पर्य यह है कि ईस आई ने छःमास
के उपवास किये हैं। इन उपवासों मे उत्तम गर्भ जल
पीने के सिवाय और कुछ ली नहीं आती जल ली
दिन मे ही पीती है। बात तो सुन है कि कुछ ली चीजें
नहीं डालती हैं यह ये वां मास है। और जैन धर्म
का आज काई पर्व विषेष है ईसलिये उत्सव के साथ
भन्दिर मे जारही है।

आदशाह सारी आत हो सुन कर आश्रय मे पढ
गया। परन्तु ये मास की तपस्या पर विश्वास नहीं
हुआ। क्योंकि एक तो आई हुसरा ये भड़ीने का निरा-
हार तप यह विद्ध मालुम हुआ। इस अकथर ने
अपने अनुयरों द्वारा कहलाया कि पालकी को उपर
लेआओ। आदशाह की आज्ञा होते ही बैन समुदाय
लयलीत होने लगा। किन्तु कर ली क्या सकता था ! आ-
धिर पालकी को उपर लेगया। आदशाह हेठल-
तासे आई की आकृति और वाणी से ध्योन
पूर्वक परीक्षा करने लगा। यद्यपि आई के तेजस्वी वहन
और निर्झट वचन को देख सुन कर तपस्या के विषय
मे अहुत कुछ सत्यता प्रतीत हुई। तथापि पूरी परीक्षा
करने के लिये एक मास तक अपने एकान्त भूल मे
उसे रहने की आज्ञा होती। और साथ मे अपने विश्वास-

४१

पात्र सेवकों के सूचना कर ही कि इस तपस्वीनि आहुष्मी हिन्दूयर्थी का अडे सावधानीसे अवलोकन करते रहना, यह क्या भाती पीती है इसकी पूरी ललासी लेते रहना और हमें सूचित करते रहना.

अकेले आहशाहुष्मी आज्ञा पाकर सेवक सभ आर्धी हिन्दूयर्थी गवेषणा करने लगे. आर्ध के लिये प मास से अधिक और एक मास निकालना कठिन साध्य नहीं था, और निकालना भी था. आत ही आत मे सभय निकलने लगा परन्तु सेवकों के दृष्टि मे तपस्वीनि का निर्मल आचार जात हुआ और किसी प्रकार से माया जल का स्वर्ण भी न आया. सेवकों द्वारा उक्ता भातें सुन कर आहशाहुष्मी आश्चर्य अंकित होगया. तदनन्तर अकेले श्रद्धापात्र तपस्विनी थान-सिंह झी भाता यम्पाणाई के पास जाकर शिर झुकाता हुआ मधुर शब्दों मे घोला हे लड़े ? तूं ईतना उठोर तप क्यों करती है ? और किसके सहारे से करती है ? तेरे कथा तकलीफ है ? ईन भातों का सत्य सत्य हाल कह. उत्तर मे यम्पाणाई ने कहा कि तप आत्म कल्याण के लिये करती हूँ. जगत् पिता परमेश्वर पार्श्वनाथ प्रलु ते और तपोभूति आत्मज्ञानी तपागच्छ नायक श्री हीरविजय सूरि गुरु हेव के अनुश्रुत से करती हूँ कह मुझे किसी तरह का नहीं है क्योंकि न तो मुझे धन झी लालसा है न पुत्रादि संतान की ईच्छा है न कुटुम्बियों का हुख है. और न शारीरिक तथा मानसिक तकलीफ है. यहि हुख है तो जन्मभरण

४२

रूप चक्रभ्रम का ही है. उसकी निवृति गुरु देव श्री हीर विजय सूरिय की अनुक्रम्या से ही हो सकती है.

इस प्रकार थानसिंह की माता चम्पाभाई के वचनों को सुन कर बादशाह तपस्वीनी को ही हुई तकलीफ़ की क्षमा मांगने लगा और आदर पूर्वक स्वर्ण चूड़ा उपहार में हेठले तपस्वीनी चम्पाभाई को धूमधाम पूर्वक अपने घर पहुंचा कर हीर सूरिय की जिजासा करने लगा. ऐसे मनोहर वातावरण सारे शहर में फैल जाने पर वैन जनता अक्खर से किये हुए सरकार पर झुशी-यादी में अपूर्व महोत्सव करने लगी.

धिर अक्खर चम्पाभाई की वैराग्यमय "भाते" पर भीमांसा करने लगा कि संसार क्षण लंगुर है. इस क्षण लंगुर संसार से पार होना परमावश्यक है. किन्तु इसका साधन भूत हीरसूरि महाराज चम्पाभाई के कर्तव्य से प्रतीत होते हैं. धिर विद्वान् या साधु आज तक नहीं मिला. क्यों कि अपनी सत्ता में हिन्दु मुसलमान भिस्ती पारसी आहि धर्मों के उपहेशाक आये तथा उनके साथ परामर्श किया. किन्तु इस विषय से अपरिचित ही रहा. अब भुदा की कृपा से आशा है कि हीर सूरि महाराज को पाकर चम्पाभाई की तरह मुझे भी आत्मकल्याण करने में अवकाश मिलेगा. ऐसी प्रधान भावना से उत्किञ्चित हेठले सूरिय के सम्बन्ध में अपने अधिकारियों में से

४३

जैनी थानसिंह शेठ के पूछा कि तुम्हारे गुरु श्री हीर-सूरिय अस्ती कहा है और उनके विषय में तुम क्या जानते हों। थानसिंह के उत्तर होने के पूर्व ही धर्मादानने सूरिय के सम्बन्ध में पूर्व परिचय के कारण सभ कुछ बातें कह सुनःही। और यह भी कहा कि सूरिय अधिकतर गुजरात ग्रान्त में पर्यटन करते रहते हैं।

उसे सुनते ही अकबर ने भेवरा जलि के भोवी और कमाल नामक हो ग्रधान कर्मचारियों के खुलाकर अमदाबाद के तात्कालीन सुखेदार गवर्नर शाहबुद्दीन अहमदखां के नाम पर एक दूरमान पत्र लिख कर गुजरात की तरफ रवाना किये दूरमान में भादशाह अकबरने सुखेदार के यह लिखा था कि जैनाचार्य श्री हीरविजयसूरि को कोई तरह की तकलीफ न होते हुए वडे सम्मान के साथ भेरे पास लेज हो। इस ग्राहक के दूरमान के लेनाकर शाहबुद्दीन को हिया। शाहबुद्दीनने दूरमान पाते ही अमदाबाद के ग्रधान ग्रधान आवहों को अपने पास लेवा कर अकबर का दूरमान पढ़कर सुनाया। और कहा कि सूरिय महाराज जहां भिराजते हों वहां जाकर अकबर की तरफ से प्रार्थना करे और साथ ही आपकी तर्फ से भी दूतहुर सीकरी पधारने की विनती डरना क्योंकि सूरिय के जने से अकबर के हृदय में जैन धर्म के प्रति अद्वा होने पर आप लेंगे की महता अधिक भद्र जायगी। अतः अविलम्बेन दूरमान सूरिय की सेवा में

४४

ઉપस्थित करते हुએ આપ અપनી તર્ફ સે લી વિનતી કરેં.

શાહબુદ્ધીન ગવર્નર સાહબ કી આજા પાકર અમદાબાદ કે મુખ્ય મુખ્ય શાવક ગણ તથા મોહી ઔર કમાલ ફરમાન કે સાથ ગંધાર પહુંચે. ગંધાર લડુંચ જિલે મે અંભાત કી ખાડી કે કિનારે પર બસા હુએ થા. જહાં કિ સૂરિલુ ચતુર્મસ મે લંઘ પ્રાણ્યુંદેં ડો પ્રતિબોધ હેતે હુએ ઉનકી પિપાસા ડો ફર કર રહે થે આપકે નિકટ પહુંચતે હી સેવા મે ફરમાન ડો ઉપસ્થિત કરતે હુએ ફરાહફુર સીકરી પદારને કે લીએ અપની તર્ફ સે લી સંવિનય પ્રાર્થના કી.

સૂરિલુ મહારાજને અકબર ફરમાન ડો પઠકર એવાં શ્રી સંધ કા સાતુરેાધ આગ્રહ હેખ કર મન હી મન શોચા કિ અકબર બાદશાહ યદ્યપિ ધર્મસ્વિલભી હૈ ફર લી સત્ય ગ્રેની તત્ત્વ જિજાસુ ઔર ધર્મ નિષ્ટ હૈ કૃચેંકી હિન્હ મુસલમાન ખિસ્તી ઔર પારસી આદિ વિરોધજોં કો અપની ચલા મે યુલા કર ઉનકે મજહબ કા સિદ્ધાન્ત સુનને કી જ્વાહિશ રહ્યતા હૈ. અતઃ વહાં જાકર ઉસે ધર્માપહેશ હેને સે બાદશાહ કે કારણુ સારી પ્રણ મે લી જૈન ધર્મ કા પ્રચાર અધિક ઝય સે હોગા. એસા વિચાર વિનિમય પૂર્વક શ્રી સંધ કી પ્રાર્થના કો સૂરિલુ ને સ્વીકાર કરલી, તદ્દનુસાર સં. ૧૬૭૮ માર્ગ શીર્ષ કૃષ્ણ ૭ કે

४५

दिन सुसमय मे गंधार अन्दर से प्रस्थान किया।

तदनन्तर अमदावाद के लक्त श्रावकसंहित सूरिल मही नहीं को पार करते हुए वटहल नामक नगर आहि गावां मे छाकर के अंलात पहुंचे जैन समुदायने लारी स्वागत किया थांड वन्दना पूर्वक कुशल क्षेम पूर्णने पर सूरिल ने धर्मलाभात्मक शुभाशीर्वाद के पश्चात धर्म सम्बन्धी प्रतांत पूर्णते हुए धर्मपदेश आरम्भ किया।

गुरुमहाराज ईसी अंलात मे एक वक्त खड़ले पधारे थे उसवक्त एक श्रावक के घर लड़का बिमार था तथ मांगलिक सुनाने के लिये गुरुदेव घर पर पधारे। तथ उस लक्तने कहा कि गुरुदेव ! यह अच्या हुंशियार हो जाय तो मैं आपके चरणों मे हीक्षा के लिये लेट कर हुंगा। गुरुकृपा एवं वास्तक्षेप प्रबाव से थोड़े ही दिनों मे लड़का बिमारी से मुक्त होगया। धूमते हुए गुरुदेव का ईस समय वापिस पधारना हुआ। उस लक्त को कहा कि अब अच्ये को हीक्षा होइजिये तथ लक्तने अपने सग्गा सम्बन्धीयों द्वारा कलह करवाया और नगर के सुषेद्धार को अहुकाया कि अच्ये की हीक्षा नहीं होनी आहिये। ईस पर सुषेद्धार ली अनेक उपदेव मचाये। परंतु गुरुकृपा से निष्क्रिय गये। नगर श्रावकने अपने अच्ये के लिये गुरुदेव से ली अपनी भाया जल झेलाने का धाटा न रखा। अपने स्वार्थ वश

૪૩

હોકર શુદ્ધેવ અ લી અપમાન કર દિયા । પરંતુ દીક્ષા કે બળય શાંતિ કા જવાબ લી નહિ દિયા । કિન્તુ શુદ્ધેવ કે મન મેં લેશ માણ ભી એવ નહીં હુંથા । હુંએ લી કર્યોં ? દ્વારે સાગર એવં નિષ્પત્તિયાંહી થે સરવે ત્યાગી ઔર વૈરાગી થે ।

કુછ દિન પ્રવચન હેકર ભન્ય જ્ઞાનોં કી મલીનતા કો મિટાતે હુંએ સૂરજ કાર્યવશ વહાં સે વિહાર કર અમદાખાદ આ પહુંચે. અમદાખાદકા શ્રી સંધ યથોચિત સત્કાર કરતે હુંએ અપને કો ધન્ય ધન્ય સમજને લગે.

ઇધર શાહખુહીનને સૂરજ કા આગમન સુન કર આદર કે સાથ અપને શાહી મહલ મેં ખુલાકર અપને ઉત્તમ હસ્તી અશ્વ રથ ઔર હીરા માણેક મોતી આદિ બહુમુલ્ય ચીનેં સૂરજ કો લેટ કરતે હુંએ કહા કિ હૈ સૂરજિરાજ ? સુજે સ્વામી અકખર કી આજા હૈ કિ હીરવિજય સૂરજ ને કુછ ચાહેં ઉંછે લેટ કર મેરે પાસ આને કી પ્રાર્થના કરેં. ઇસલિયે આપ ઈન ચીનેં કો સ્વીકાર કરકે ઝેતેપુર સીકરી અકખર કે હરખાર મે પધારને કી કૃપા કરેં. અકખર બાદશાહ આપકો ખુહ કી તરહ રાતદિન સમરણ કર રહા હૈ.

સૂરજિવરજ ને અપને સાંચુ જીવન કા પરિચય દેતે હુંએ ખાં સાહખ સે કહા કિ. રાજન્ ? સંસાર કે પ્રાણી

४७

भाव की रक्षा करने की लावना हमें सहेव रहती है। हमारे लिये मिथ्याभावशु करना पाप का धीर खोना है जिना किसीके ही हुई चीज़ को लेना हमारे लिये विष कठोरेको उडाना है। संसार की स्त्रियों हमारे लिये भाता बहन तुल्य है सोना चांदी हीरा पक्षा आदि हमारे लिये भटी के ढेले के बैसा ही है और रात को खाना पीना हमारे लिये भास और खुन के समान है। अब ऐसी अवस्था में आपकी ही हुई चीजों को लेकर हम क्या करेंगे।

आं साहू सूरिलु के कठोर नियमों को सुन कर चकित होते हुए मनही मन भूरि भूरि प्रशंसा करने लगे। अहो यह साधु निस्पृष्टियों त्यागियों में शिरोभिन्न साक्षात् भुवा की भूति है। इनके बैसा त्यागी भद्रात्मा आज तक देखने में नहीं आया। इतना चिंतन करने के बाद लेट की हुई चीजों का पुनःआवहन करके अपने सैनिकों की संरक्षणता में शाही खाले के साथ सूरिलु को जैनीय नियत स्थान पर पहुंचा दिये।

कुछ दिन अमदाबाद में ठहर कर भोवी और कमाल नामक अक्खर के प्रधान कर्मचारियों के साथ सूरिलु ने इतहपुर सीकरी की तरक्कि प्रयाण किया। रास्ते में पहले पहुंच नामका और विशाल नगर आया। उस नगर में विराजमान सूरिलु के ज्येष्ठ सहाध्यार्थी प्रभर पंडित

ઉપाध्याय श्री धर्म सागरજी तथा प्रधान पट्टधर विजय सेन सूरि आहि साधुमन्डल संहित सूरिलु के स्वागतार्थ नगर के बाहर उपस्थित हुये. उस गांव के श्रावकों ने समारोह पूर्वक सूरिलु के नगर प्रवेश करवाया. ऐसे सुअवसर पर एक श्राविका ने अहुत रूपये अर्च कर अडेलारी उत्सव के साथ कुछ प्रतिभाषें सूरिलु के कर कमलों कारा प्रतिष्ठित करवाई. उहिं रह कर वयोवृद्ध श्री धर्मसागरजी के यहाँ छाइकर विजयसेन सूरि के साथ सूरि महाराज आगे बढे. सिद्धपुर पहुंचने पर विजयसेन सूरिलु को वापिस लेज हिया. आपकी सेवा में कृपारस कौष के कर्ता श्री शांतिचंद्र पंडित रहने लगा. सूरिलु ने ली शांति चंद्र को सुयोग्य समझ कर सर्वदा के लिये साथ रहने की आज्ञा देही. और सभीपस्थ उपाध्यायवर्य श्री विमल हर्ष गणि को अकबर से मुलाकात करने के लिये झतहपुर सीकरी रवाना कर आप स्वयं वृद्धावस्था के कारण धीरे २ चलते हुये सरोतरानगर में पहुंचे. यहाँ के ढाकुर अर्जुन अकबर से आहुत सूरिलु को अपने भक्तान में लाकर घूम सत्कार सम्मान किया. ढाकुर की घूरी आदत को कछुकछुरिया सुन कर सूरिलुने भीड़ भीड़ शब्दों में ऐसा उपहेश हिया कि ढाकुर की आदत हमेशा के लिये छाइनी पड़ी ऐवं उसने मांस भद्दिरा चिकार और पर स्त्री गमन आहि कुचालीयों को जड़मूल से उभाइ फैक ही. वहाँ से सूरिलु चल कर आधू

૪૬

પહાડ પર પ્રસિદ્ધ મનીદરોં કી યાત્રા કરેકે યથા સમય સિરોઢી આ પહુંચે, થહાં કા રાજ સુવત્તાનસિંહ અત્યન્ત સમારોહ પૂર્વક સુરિલુ કી સેવા મેં સામને આયા. ઔર રાજ ને જીમસ્ત નગર ડેં અચ્છી તરહ સણ કર ધૂમધામ સે આચાર્ય શ્રી કા પ્રવેશોત્સવ કરાયા. ઈસ પ્રકાર સુરિલુ સાદળી ઘરણાશાહ કે નિર્માપિત રાણુકપુર લીર્ધ આઉઅા આદિ નગરોં મેં કમિક પર્યાટન કરતે હુંએ યથા સમય મેડતા આ પહુંચે.

માર્ગ મેં આપકે દર્શનાર્થુ ઉપાધ્યાય કલ્યાણુ વિજયલુ ને સાદળી શ્રી સંધ કે સાથ એવં આઉઅા કે નગરપતિ તરફા શોઠ ને અપને સ્વામી લાઈ કે સાથ આકર અપને અપને હૃદય કે ઉલ્લાસ ડેં પૂરા કિયા. તરફાશોઠ ને શુશ્રેષ્ઠ કી સેવા મેં આગન્તુક સ્વામી લાઈ આદિ સંજનનોં ડેં ઔક ઔક શીરાલુ સિંહા (રૂપયા) લેટ દિયા. ઈધર કલ્યાણુ વિજયલુ શુશ્રેષ્ઠકી આજા પાકર સાદળી વાપિસ દોટ ગયે. સુવત્તાન સાહિમ મેડતા નગર મેં આયે હુંએ સુરીલુ કે સ્વાગત મેં અતિશય લાગ લેતા હુઅા અપને ડેં ધન્ય સમજને લગા. વિમલ હર્ષ ઉપાધ્યામ શુશ્રેષ્ઠ કી આજા પાકર અકખર સે ભિલને કે લિયે સિદ્ધપુર સે ચલા હુઅા મધ્યવર્તી મેડતા નગર મેં અત્યાવરશ્યક કાર્યવશ ઠહુરને કે નિમિત શુશ્રેષ્ઠ સુરિ મહારાજ કે દર્શન કે પશ્ચાત પુનઃ ઉનકી આજાનુસાર સિંહ વિમલ ગણુ કે સાથ આગે બઢે. સ્વયં સુરીલુ ઝોટેહપુર કી ઔર બઢતે

૫૦

હુચે સાંગાનેર નગર મેં આ પહુંચે. જિતને મે ઉપાધ્યા-
યજી અકબર ખાદશાહ તો સુરીજી કે આગમન કી સુચના
દેકર વાપિસ શુરુ સેવા મે ઉપસ્થિત હો ગયે.

સુરીજી કે નિકટ આગમન કી અખર મિલતે હી
અકબર ને થાનસિંહ અમીપાલ ઔર લાલુશાહ આદિ
રાજમાન્ય જૈન સાહુકારોં કો આજા હી કિ સુરીજી મહા-
રાજ કી અગવાની બડે લારી હાટપાટ સે નગરપ્રવેશ
કરા કર વિનય પૂર્વક અપને દરણાર મે લે આએ
ખાદશાહ કા સળત હુકમ હેતે હી બડે બડે અદ્દસર
ઔર ધનાઢ્ય જૈન પ્રતિષ્ઠિત બ્યક્ટિત અનેક હાથી ઘાડે રથ
નગરા નિશાન બાળ ઝોઝ આદિ લેકર સુરણી કે સામે
સાંગાનેર પહુંચે. ઉન કે સાથ સુરિજી ચલતે હુચે કૃતહૃપુર
શહેર કે બાહુર જગમલ કચ્છવાહા કે મહલ મે ઉસ દિન
દાદરે. આપને ગંધાર ખાંડર સે છ મહીને કા લગ્બા
વિહાર કરતે હુચે સં. ૧૬૩૮ જાન્યેઠ કૃષ્ણા નયોદ્ધી
શુક્રવાર કે દિન કૃતોહૃપુર સીકરી નામક શહેર મે સફુશાલ
પ્રવેશ કિયા ઉસ સમય આપકી સેવા મે સૈદ્ધાન્તિક શિરેઓ
મણિ મહોપાધ્યાય શ્રી વિમલ હર્ષ ગણિઅણોતરશતાવધાન
વિધાયક એવં અનેક નૃપમનરંજક શ્રી શાંતિ ચંદ્રગણિ
પંડિત સહજસાગર ગણિ હીર સોલાંય કાંય કર્તા
કે શુરુ શ્રી સિંહ વિમલગણિ વકતૂત્વ ઔર કવિત્વ કલા
મે અદ્વિતીય નિપુણ તથા વિજય પ્રશાસ્તિ મહાકાંય કે
રચયિતા પંડિતશ્રી હેમ વિજયગણિ વૈયાકરણ ચૂડામણિ

૪૨

પંડિત લાલ વિજયગણિયોર પંડિત ધન વિજય ગણિ
આદ્ય ૧૩ પ્રધાન શિષ્ય ઉપસ્થિત થે. ।

હુસરે દિન પ્રાતઃકાલ અપને શિષ્યોં કે સાથ સુરિલુ
મહારાજ શાહી દરબાર મે પ્રધારે ઉસ સમય થાનસિંહને
અકબર કો શુરૂ કે દરળાર મે પ્રધારને કી અધર
દી. સુચના પાતે હી આવશ્યકીય કાર્ય મે સંલગ્ન હોને
કે કારણુ અકબર રવયં ન આકર અપને પ્રિય પ્રધાનશેખ
અખુલફજલ કો સુરિલુ કે આતિથ્ય સતકાર કે લિયે લેજ
કર ઉસ કાર્ય કો શીધ સર્વપન્ન કરને લગા. બાદશાહ
કા હુકમ પાતે હી અખુલફજલ સુરિલુ કે આને કે પૂર્વ
દી એક ખાડુ બિધા કર ઉનકે નીચે એક ગર્ભિણી બકરી
કો રખ કર કપડા આચછાદિત કરકે સુરિલુ કો જેઠને કે
લિયે પ્રાર્થના કરને પર ઉત્તર હિયા કિ ઈનકે નીચે તીન
જીવ હૈ અતઃમૈ નહીં જેઠ સકતા અખુલ ફજલ ને
સોચા. કિ એક જીવ હોને પર ભી તીન જીવ કેસે અતા
રહે હૈ કપડા ઉડા કર હેખા તો બકરી ને ૨ બચ્ચોં કો
જન્મ હેઠિયા. જિસસે તીન જીવ હેખકર આશર્ય સસુરદ
મેં હુખતા હુઅા અપની ટોપી કો ગળન મે ઉડા કર
સુરિલુ સે કહને લગાં મહારાજ મેરી ટોપી લાઈયેં ઈસ
પર શુરૂ હેવ ને અપને રણહણ (ઓધા) કી ડંડી આકાશ મે
ઉનકે પીછે ઉડા હી વહ ડંડી ઈસ ટોપી કો પીટતી હુદ
નીચે લે આતી હૈ તત્પત્ત્વાતુ અખુલ ફજલ લથ વિહ્વલ
હોકર સુરિલુ કે અત્યન્ત પાસ આકર સવિનય શાહી

૫૨

મહલ મે પધારને કે લિયે પ્રાર્થના કરને લગા. તદ્દનન્તર સુરિલુ નિયત સ્થાન પર પધાર કરે શોખ સે નિર્દીષ્ટ જગાહ પર આપના આસન બિંધા કરે ઐઠ ગયે.

અખુલ ઇજલ નમ્રતા પૂર્વક સુરિલુ સે કુશલક્ષેમ પૂછ કર ધર્મ સમાંધી બાતે પુછને લગા કુરાન ઔર ખુદા કે વિષય મે ઉસને નાના તરહ સે જાળવ સવાલ કિયા. જિનકા ઉત્તર છઠી ગમ્ભીરતાને કે સાથ ચુક્તિ સંગત પ્રમાણોં કારા સુરિલુ ને અન્ડન મન્ડન કરતે હુએ હિયા. સુરિલુ કે વિચાર સુન કર અખુલઇજલ બડા ખુશ હોકર બોલા કી આપકે કથન સે તો યહુ જિંદ હોતા હૈ કી હુમારે કુરાન મે બહુત કુછ ગલત બાતે લિખી હુદ્ધ હૈ. ઈસ્ટ પ્રકાર કી કઈ એક હાસ્યપૂર્ણ બાતે કરતે હુએ મધ્યાનહું કા સમય હો જાને પર શોખ સુરિલુ સે કહુને લગા. મહારાજ લોજન કા સમય હો ચૂકા હૈ યધપિ આપ જેસે નિરીહ મહાત્મા પુરુષોં કો શરીર કી બહુત કમ દરકાર રહ્યી હૈ ક્રિર લી જગત કી લલાઈ કે લિયે ઉદર કા થોડા બહુત પોખણુ કરના આવશ્યક હૈ અત એવ કિસી ઉચિત સ્થાન પર ઐઠ. કર આપ લોજન કર લીજિયે, તત્પ્રશ્ચાત પાસ હીમેં રહા હુએ કણ્ણ રાજન કે મહલ મે સુરિલુ આહાર પાની કે લિયે પધાર ગયે. જહાં પર પહોંચે હી કુછ સાધુ ગાંંબ સે લીક્ષાચરી (ગોચરી) કર લાયે થે. ગુરુ હેવ સહૈવ એક વક્ત આહાર પાની કિયાં કરતે થે. મગર વહુ લી પરિમિત ઔર નિરસ.

૫૩

ઇંધર બાદશાહ ને નિજ કાર્ય કો સમૃદ્ધન કર હર-
ભાર મે અખુલકુ જલ દ્વારા આચાર્ય દેવ કો ખુલાયા
અદભુત ઇકીર ઇપ કે વેષ મે આતે હુએ શુરૂ દેવ કો
દેખતે હી સસંગ્રહ સિંહાસન સે ઉઠ કર આગે બનતે
હુએ બાદશાહ ને સવિનય શિર ઝુક કર નમન પૂર્વક
શિષ્ટાચાર કે સાથ શુરૂરાજ કે ૨ પીંડે અપને હરભાર મે
બાને કે લિયે કદમ ઉઠાયા. મહલમે બાને પર અનેક
જડિયોં સે સુસંજિત વિશિષ્ટ આસન પર ઐઠને કે લિયે
આર્થના કરને પર સુરિલ ને ઉત્તર મે કહા કિ પ્રાય:
ઈનકે નીચે કોઇ ચિટિ આદિ સુક્ષમ જીવ હો તો મેરે વજન
સે મરણય ઈસ્તિયે જૈન શાસ્ત્રોમેં કેવળી સર્વજોં ને અહિં-
સાવારીયોં કે લિયે વચ્ચાછાહિત જગહ પર પાંચ રખને કી લી
મના કી હૈ બાદશાહ ને ઉનકી જીવોં કે પ્રતિ એસી દ્યા દેખ
કર આશ્રય મય હોતે હુએ શોચાં કિ યહ ઇકીર શાયદ જનતા
તો નહીં હૈ કિ ઈસકે નીચે કોઇ જીવ હૈ. ઈતના વિચાર
કર ગલીય કે એક પ્રહેશ કો ઉચ્ચા ઉદ્ઘાય તો ઉસકે
નીચે બહુત સી ચિટિયોં નજર પડી. ઉન્હે દેખતે હી એસી
ચકિત હો ગયા, તહેનન્તર સ્વર્ણભયી કુસી પર ઐઠને કે
લિયે આગ્રહ કિયા. પરન્તુ સુરિલ ને ઈનકા લી ઉત્તર
હેતે હુએ કહા કિ ત્યાગિયોં કે લિયે ધાતુ કા સ્પર્શ
કરના સખત મના હૈ. ઈતની ભાત સુનકર બાદશાહ અચ-
રજ મે પડ કર મૌન ધારણુ કરતા હુએ. એક તરફ
ખડા રહુ કર સોચને લગા કિ અખ એસે બાબા કો કહાં

५४

जैदावें: जितुने भे सुरिलु अपने उनी आसन बिछा कर संशिष्य ऐठ गये. उनको ऐठे हुए हेख कर बादशाह भी सुरिलु के सामने थथेचित आसन पर ऐठ गया. तत्पश्यात् अभुलझल आहि कर्मचारी अपने अपने थोऱ्य स्थान पर ऐठ गये. इतने भे बादशाह के तीनो पुत्र (शेख सलीम मुराह और हानियाल) आकर भस्तक झुका कर ऐठ गये.

आद बादशाह अकबर ने कुशलवार्तादि पूछ कर ही हुई तकलीफ की क्षमा भगी. सुरीलुने जवाब मे कहा कि हमारे लिये तकलीफ कोई नहीं है तो क्षमा किस चीज की. इतने भे शेठ थानसिंह ओला कि जहांपनाह के दूरमान को पाकर गांधार अन्दर गुजरात से पांच चक्कते हुए गुरुदेव ने यहां पर पधारने का जो क०८ किया है तद्यौं हम लोगों को माझी मांगना उचित ही है.

यह आत सुनते ही अकबर चौकना हुआ ओला कि अमदाबाद के सुभेदार शाहबुदीन अहमदखां ने अपनी कृपण्यता के कारण ऐसे बाबा के लिये सवारी का धन्तजाम तक नहीं किया. जिससे ऐसे वृक्षावस्था मे भी भेरे लिये आपडो इतना क०८ उठाना पडा. आं साडब के प्रति कोपायमान बादशाह को हेख कर सुरीलु ने कहां कि आं साडब को कोई हॉप नहीं है चूंकि उन्होंने तो सभ एक प्रथांन्ध कर दिया था. परंतु

५५

હમારે નિયમાનુસાર વે ચીને કામ મે નહીં
આને સે હમ પાંચ પૈફલણીએલે આયે.

બાદશાહને વિરિમિત હોકર થાનસિંહ કી ઓ। હેઅ
કર કહા થાનસિંહ ? એસે ઇકીરિં કે કટિન નિયમોં સે મૈ
તો વાકિએ નહીં થા તું તો અચ્છી તરહ જાનતાછી થા
કિર મુજે પહુલે હી કચોં નહીં કહા તાકિ કરમાન
ન લેજ કર આખા કે દર્શાનાર્થ અપને ખુદ હી ચલે
જાતે. નાહક ઇકીર કો તકલીએ હી. સાથ હી સાથ
સમાધિ મે વિજ્ઞ ડાલ કર મૈ પાય કા લાગી બના. થાન-
સિંહ લનજાવશ ઉત્તર ન હેકર મૌન હી રહ્યા. ઈતિને
મે બાદશાહ સ્વયં થાનસિંહ કો કહુને લગા કિ હાં મે
તેરી બનીયાસાઈ બાળ સમજ ગયા તુંને ખુદ અપને
મતલબ કે લિયે મુજે એસે કઠોર નિયમોં સે અજ્ઞાત
હી રખા. સુદિલ કા આજહિન પર્યાન્ત ઈસ પ્રાન્ત
મે ન કલી પધારના હુઅા ઓાર ન તુમકો શુરૂ
સેવા કરને કા મૌકા મિલા, યદિ તેરે શુરૂણ યહાં આજાતે
તો તુમકો ઉનકે સ્વાગત મે ખર્ચી કરના પડતા. અચ્છા
અખ લી શુરૂ ભહારાજ કી પૂરી ભક્તિ કરકે સૌલાય
પ્રાપ્ત કરલેં કચોંકિ મૈ તો સુદિલમ હું મેરે ધર ઉન કે
આના હિન્દુ કે નાતે નહીં દેંગે. અતઃ તેરે જો કુછ
ચાહુયે વો લેન કર અપને ધર મે ઉન કે યોગ્ય વ્યવ-
સ્થા કર કિસી લી પ્રકાર સે તકલીએ ન હેના. બાદશાહ કે
યહ વચન સુન કર સારી સલા દંગ દંગ હોએચ.

५६

अब बादशाह सुरिया के रहन सहन खान पीन और इंकीरपणे के भर्म को समझना चाहा। धृतने में बादशाह की मुखाकृति से आन्तरिक लाव समज के मोही नामक राजभूम्यारी ने निवेदन किया। हजुर ? इन महात्माओं के रहन सहन आहि जो है मैं अर्ज कर देना चाहता हूँ। अत आप ईजिजत वक्षावे। अकेले तो आहेश पाते ही सच्ची हुकीकत मोही कहने लगा। हे जहांपनाह ? ये महात्मा गंधार बंधर से पांव पैदल चले आरहे हैं। अपनाजितना ली सामान है वह आपही आप उठा कर चलते हैं आप नंगे पांव एवं नंग शिर हमेशा रहते हैं धोती धत्याहि कली नहीं पहनते हैं। शिर और हाथी के सभूते बाल को हाथों हाथ उभाड कर छैंकते हैं। किसी तरह का तेल भी नहीं लगाते हैं। और न कली स्नान ही करते हैं। आप धर धर एकआध टुकड़ा मांग कर प्राणी की रक्षा करते हैं। लीक्षा में सुका हुका आहि का ली विचार नहीं करते। अर्थात् कैसा भिले उनसे ही संतोष कर लेते हैं विचार धृतना ही करते हैं कि साधुओं के नियमके अनुसार होना चाहिये पानी केवल गर्म ही पीते हैं वे। ली पानी सुर्यास्त के पहले ही अंतम कर देते हैं एवं माझक चीजें कली नहीं लेते हैं। रात में तो कतई कुछ भी मुँह में नहीं डाकते हैं। तथा आप प्राणी भाव के साथ वेर न रभ कर मैत्री लाव ही रभते हैं

૪૮

આપકો ચાહેં પુને યા ગાલિયાં હે ભગર આપકી ફળિ મે
હોનેં સમાન હી હૈ. કિસી કો ન શાપ હેતે હૈ ઔર
ન વર હી. આપ રાત મે પલંગ આદિ ઝૂઈ કે વિસ્તર
પર શયન ન કર કે શુદ્ધ ઉંન કે આસન પર હી
નીચે સોતે હૈ. નીન્દ લી પરિમિત હી લેતે હૈ શેષ રાત્રિ
આય સમાધિ મે હી વ્યતીત હોતી હૈ. ધર્મેપદેશ કે
અલાવા અધિકતર મેાન હી રહેતે હૈ. આપ મે સબસે
વિશેષ ખાત યહુ હૈ કે ખી જાતિ કા સ્પર્શ માત્ર નહીં
કરતે હૈ. એવાં આપ સહા સત્ય હી જોલતે હે, ઔર ન
પરિશ્રદ્ધ કી મુદ્રા રખતે હૈ. આપ કામ કોધ લોલ મોહ
માયા ઔર રાગ દેવ આદિ કા તો સર્વથા દેશ નિકાલા
દેકર ક્ષમા રૂપી માતા કી જોઈ મે હુમેશા રમતે રહેતે
હૈ. ઈન્સે અધિક સમાચાર આપકે સહચર શિષ્યોં દ્વારા
વાકીએ હો સકેગા ઈતના કહ કર ચુપ હો ગયા. કમાલ
નામકા કર્મચારી મોહી કી કહી હુદ્ધ બાતોં કા સમર્થન
કરતા હુઅા કહુને લગા કિ ઉપરોક્ત બાતે બિલકુલ સહી
હૈ. ઈસમે કિસી તરહકા માયા જાલ નહીં હૈ.

અકણર ખાદશાહ સૂરિય કા સંક્ષિપ્ત યથાર્થ ચરિત્ર
સુન કર આશ્ર્યું મે પડતા હુઅા આપકે ત્યાગ પર મુંબ
હોકર સુકૃત કંઠ સે પ્રશંસા કરને લગા. ઈદી તરહ
સમીપસ્થ કર્મચારી વર્ગ, કુલ્ઘ હોતે હુચે અનુપમ
ત્યાગી પુરુષ હો હેખ હેખ કર ધન્યવાહ દેને લગે. અહે?
યે મહાત્મા માયાવી નહીં હૈ અલિક સાક્ષાત્ ખુદા કે પ્રતિ-

४८

बिभ्य तुल्य ही है. ऐसे महापुरुषों का हर्षन प्रभव आज्ञादय से ही हुआ करता है. आपके आने से आशा है कि हम लोगों के ही नहीं अपितु सारा शहर में अलौकिक अख्युदय (उन्नति) होने का पूर्ण समव छै.

प्रिय पाठक ! आचार्य की किंतनी आचार विशुद्धता थी शासन संरक्षक प्रभावशाली एवं धुरनधर आचार्य होने पर ली ईस प्रकार की उथ तपस्या करना क्या आश्चर्यजनक नहीं है ? किन्तु यह कहना चाहिये कि उन महात्माओं के अन्तःकरण में ही नहीं अपितु रामराम में वैराग्य लगा हुआ था. वे यह नहीं समझते थे कि अब हम आचार्य हो गये हैं अब तो हमें हुनिया अमा अमा करेगी ही. मुझे अपन्या से क्या ज़दरत है, अब तो ऐस आराम करें किन्तु उन महा पुरुषों ने ईस प्रकार की स्वार्थ चेष्टा नहीं थी. वे ऐहिक सुषों के विष भिन्नित सुधा के समान समझ कर पारलौंकिक सुषों का ग्राहण करने के लिये प्रयत्नशील रहते थे वे लोग सच्चे हृदय से उपदेश दिया करते थे अतएव उन लोगों का उपदेश भी सहल होता था. उन लोगों की “धर्मेऽपदेशो जनरंजनाय” ऐसी वागारभर प्रतारणा नहीं थी. वे “मनस्येऽवयस्येऽकर्मज्येऽकर्मात्मनाभ्” इन लक्षणों से युक्त रहते थे साथही साथ प्राचीन आचार्य यह ली समझते थे कि यहि हम सच्चे आचार में नहीं रहेगे यहि हम जैसे उपदेश होते हैं वैसे ही वर्ताव नहीं

५६

करेगे तो हमारी शिख मनुष्यीय अवधि सक्रियता के सुधरणे, धर्मादि किंतु विचार किया करते थे, किन्तु आजकल के आचार्य उपाध्याय अवधि पंडित में “धर्मो-पद्धतेषां जन रजनाय” के साथ “मनस्यन्यद् वयस्यन्यद् कर्मन्यद्” पाये जाते हैं अतः अवधि हम लोगों के उपदेशका असर पत्थर पानी की तरह आयः हुआ करता है। धर्मी हेतु हमारा दिनानुदिन अध्ययन अध्यापकता जारी है कि इसी भी हम जन युग कर अपने की तरह कुछ भी पढ़ते जारहे हैं सच्चे हृदय से पक्षपात रहित होकर विचार किया जाय तो यह बात बिलकुल यथार्थ है कि कैसा कहें कैसा करने पर ही जनता पर अलावा पठ सकता है। अस्तु प्रकृतिमनुसरामः।

एक समय सलासहों के उपाध्याय शान्ति चन्द्रल से विद्ध हो गोपी करने के लिये आदेश होकर स्वयं हीर-सूरिल से बातचीत करने के लिये एकान्त महल में चला गया वहां ऐठने के बाद अकर्णने कहा कि महाराज ? धर्म और भुदा में क्या लेह है ? वे कैसे हैं ? एक है या अनेक हैं ? और आत्मा का स्वरूप क्या है ? धर्मादि प्रश्न पुछने पर सूरिलने बड़ी मधुर घण्टा से जवाब देना ग्राम्य किया। कैसे कि—

धर्म भुदा में लास्तिवक डोर्ड लेह नहीं है। सिर्फ नाम भान्न का ही लेह है। नाम का लेह भी ज्ञान के

३०

कल्याण के लिये ही है। क्योंकि “विचित्रस्तपा खलुचित्
मृतयः” उवेंकि चित् वृतियां अनेक प्रकारकी हैं। कोई
किसी नाम से खुश रहता है और कोई किसी नाम से।
लोक में भी ऐसा हेड़ा जाता है कि ऐक अच्छी भाता
ऐक नाम से पुकारती है, पिता अपर नाम से। लाई
हुसरे से ही। इसी तरह महापुरुषों को भी अनेक नाम
से पुकारते हैं। ईश्वर, प्राण्यातिपात, मृषावाह, अदत्तादान
मैथुन, परिग्रह, कोध, भान, भाया, लोल, राग, देष, कलह
अल्याख्यान, पैशुन्य, परपरिवाह भायामृषावाह भिथ्यात्म-
शत्य ईन अदार हुखण्डों से सर्वथा रहित है वही हेव है वही
तीर्थंकर है और वही ईश्वर है। उपरोक्त हुखण्डों में से ऐक
की हुख्य देखा जायगा तब तक ईश्वर नहीं कहा जासकता।

जैन धर्म कहता है कि ईश्वर ऐक भी है और
अनेक भी हैं। जैसे कि संसार में से जो व्यक्ति कर्म-
का क्षय कर के मुक्ति में जाता है वह व्यक्ति इप जाने
से ईश्वर अनेक है जब संसार से मुक्त होने पर वे
सभी आत्मा दवस्तप से ऐक हो जाति हैं उस अपेक्षा
से ईश्वर ऐक है। ईश्वर पुनः संसार में अवतार के
धारण्य नहीं करते। क्योंकि जन्म जन्मान्तर में जन्म
अहंकृ तरने का कारण भूत कर्म का निकंदन कर दिया है।
जब कर्म सर्वथा छुट जाते हैं तब ही यह आत्मा
परमात्मा (ईश्वर) जन सकती है। क्षिर ईनको संसार
में जन्म धारण्य करने की जड़त ही नहीं रहती।

६१

धर्मवर राग द्वेष शरीर किया आहि से रहित है और उनको धर्मणा भी नहीं होती। जब धर्मणा का निरोध होनाता है, तब किसी कार्य में प्रवृत्ति ली नहीं हो सकती। ईसलिये जैन सिद्धान्त उठता है कि धर्मवर किसी चीज़ को बनाते नहीं। और किसी को सुभ वा हुःभ ढेते नहीं। यांकि वह स्वयं निरंजन और निराकार है। अब जो ईस संसार में धर्माल थल रही है वह स्वालाविक ही है। अथवा संसार के लिए सुभ और हुःभ लोग रहे हैं वह सब अपने अपने कर्मानुसार जोगते हैं।

यद्यपि धर्मवर निरंजन निराकार है ऐवं कुछ ली देते या ढेते नहीं किसी कार्य में प्रवृत्ति करते नहीं। इस ली धर्मवर की उपासना करना परमावश्यक है। ईस लिये कि हमें ली धर्मवर बनना है। हमको ली संसार से मुक्त होना है। उपासना उसकी करनी चाहिये जो कि संसार से मुक्त हो गया हो। इस प्राप्ति का आधार होना लेना नहीं है। हान होने वाला जिसको हान करता है से इस नहीं पाता है। परंतु हान होने के समय उसकी सद्व्यापना ही इस होती है। अर्थात् वही पुण्य होता है। ईसी प्रकार धर्मवरकी उपासना करने के समय जो हमारा अंतःकरण शुद्ध होता है। वही उत्तम इस है। संतो के पास जाते हैं तो क्या कुछ ढेते हैं। लेकिन संत पुरुषों के निकट जाने से हृष्य शुद्ध होना ही इस

३२

ह । वेश्या के पास जाने से क्या वेश्या नरक में हाल हेती है ? नहीं ? किन्तु वेश्या के पास घूरे जिचार पैदा होना ही नरक का कारण है । इसी प्रकार ईश्वर का ध्यान लकित उपासना, एवं प्रार्थना करने से हमारा हृदय पवित्र होता है । और हृदय का शुद्ध होना ही धर्म है ।

इस बात को सुन कर अकबरने कहा कि धर्म की उत्पत्ति कैसे होती है । और धर्म का क्या लक्षण है ? शुरुजने कहा कि धर्म की उत्पत्ति कभी नहीं होती । यह जैन धर्म का सिद्धान्त कहता है । धर्म अनाहि काल से चला आया है । जैसे शुद्ध शुणी में रहता है उसी प्रकार धर्म धर्मी में रहता है । धर्म ऐसी चीज़ नहीं है जो कि अपने आप रह सकें धर्म का लक्षण सिद्धान्तों में अतलाया है कि “वत्यु सहायो धर्मो” वस्तु आजो स्वलाव है । उसी का नाम है धर्म । अग्नि का स्वलाव है उष्णता यही अग्नि का धर्म है । पानी का स्वलाव है शीतलता यही पानी का धर्म है । इसी प्रकार आत्मा का धर्म है सत्त्विदानन्दमयता अथवां ज्ञान दर्शन चरित्र ।

इस धर्म की रक्षा करने के साधन अनेक हैं । जैसे दान, शील, तप, भाव, परोपकार, सेवा, संह्या, ईश्वर लकित, प्रार्थना इत्याहि धर्म के साधन माने हैं । इस से उत्पन्न होने वाली चीज़, वह ही धर्म । अथवा कोध मान, भाया, लोक, मोह, राग छेष, इत्याहि जो अल्यंतर

६३

शत्रु है, उन के द्वाना, हुर करना, उनका नाम है धर्म ये चीजें ऐसी हैं जो हुर्गति में गिरते हुए ग्राह्यीयां के बचा लेती हैं। इसलिये इसका नाम है धर्म। जिस से धर्म होता हो वे धर्म के कारण उड़ाते हैं। उन कारणों के कार्य में (धर्म में) उपर्योग करने से कारण ली धर्म कहा जासकता है। और इसी लिये एक प्रकार का धर्म, हो प्रकार का धर्म, तीन, चार, पांच, छ, सात, आठ, नव, दश, प्रकार का धर्म। ऐसे लेह सिद्धान्तों में माने गये हैं। संसार की ऐसी कौशि लीज, जिस से हृदय शुद्ध हो, ऐसे पवित्रता हो कर्मों का क्षय हो, आत्मा का विकास हो, वह सब धर्म का कारण है। अत ऐसे वह धर्म है। दान हेना, ऋष्यार्थ पालन करना, हुसरे की सेवा करना, अहिंसा और संयम का पालन करना, तप तपना, धृत्यादि धर्म है। क्षमा करना धर्म है। शास्त्रों का पढ़ना, संसार त्याग कर साधु भनना, दर्शकर उपासना करना, यह सब धर्म है। क्योंकि इन कर्मों से पुन्य-धर्म होता है। आत्म विकास होता है। जैन धर्म के तीर्थंकरोंने इस प्रकार धर्म का अतिपाहन किया है। अहिंसा धर्म के उपर द्विर कसी समझाउंगा। क्योंकि अली आपको आत्म स्वइप भत्ताना है। इसलिये विषयान्तर नहीं जाना चाहिये। आप आत्मा का स्वइप सुन लीजिये।

૬૪

आत्मा कहो, जुब कहो, चेतन कहो। यह सब
ऐक ही चीज़ है। पर्याय वाची शब्द है। आत्मा का
मूल स्वरूप सच्चिदानन्द मय है। आत्मा अरुपी है।
असेही है अचेही है। जैसा कि धर्मवर है। लेकिन
धर्मवर और धर्म आत्मा में इतना ही अन्तर है कि
धर्मवर निर्वैप है, निरावरण है, शुद्ध स्वरूपी है। और
यह आत्मा का हुआ है। आच्छाहित है। आवरण
संहित है। यही कारण है कि संसार में परिष्रमण
करता है। सुख हुँएं का अनुभव करता है। धन
आवरणों के जैन शास्त्रकार “कर्म” कहते हैं। चैतन्य
शक्ति वाले आत्मा के उपर जड़ ऐसे कर्म लगे हुए
हैं धर्मी के कारण यह आत्मा नीचे रहता है। जैसे कोई
तुंभा हो, उस तुंभे का स्वलाभ तो है पानी में तैरने
का, परन्तु उसके भिट्ठी और कपड़े का लेप कर खुब
वजनहार बना दिया जाय तो वही तुंभा तैरने के बलय
पानी में डुब जायगा। ठीक यही दशा धर्म आत्मा
ही है।

तब यह निश्चित हुआ कि आत्मा के साथ कर्मों
का अंधन रहा है। धर्मीलिये आत्मा के परिष्रमण करना
पड़ता है। जैन धर्म कहता है कि आत्मा और कर्म
का सर्वध अनादि काल से है। और आत्मा के उपर
रही हुई राग देख की बीड़नार्थ के कारण से है। अनादि
काल से अत्मा के साथ राग देख रहा हुआ है। किसी

६५

समय आत्मा शुद्ध थी, और ज्ञान में राग द्वेष से व्याप्त हुई। ऐसा नहीं कह सकते। क्यों कि ऐसा कहा जाय तो मुक्तात्माओं के ली राग द्वेष की चिकास लगने की संभावना रहेगी। अतः आत्मा और उस पर राग द्वेष की चिकास अनाहि काल से है। और इसीलिये कर्म के आवरण उस पर लगते रहते हैं।

आत्मा के उपर राग द्वेष के आवरण क्या लगे? यह ली नहीं कह सकते। कोई नहीं कह सकता कि आन में माटी और सोना क्या मिला। है ही। मिला हुआ ही है। हमेशा से है। लेकिन प्रयोगों द्वारा सोना और माटी अलग कर सकते हैं। इसी प्रकार आत्मा के उपर लगे हुए आवरण (कर्म-राग-द्वेष) अलग कर सकते हैं। सोना और माटी अलग करने पर सोना सोना रह जाता है और माटी माटी रह जाती है। इसी प्रकार कर्म और आत्मा अलग होने से आत्मा अपने अस्ती शुद्ध स्वरूप में आ जाती है। और कर्म अलग हो जाते हैं।

इस पर से यह सिद्ध होता है कि आत्मा पहले और कर्म पीछे, यह भीठीक नहीं है, कर्म पहले और आत्मा पीछे, ऐसा तो योद्ध ही नहीं सकते। ऐसा कहने से तो, आत्मा की उत्पत्ति हो जायगी। और यहि आत्मा उत्पन्न होने वाला है तो उसका नाश ली होना चाहिये।

५६

इस लिये आत्मा और कर्म होनें अनादि संरणनिधि है। और वहुध और पानी की तरह से आत्मग्रात है।

इस प्रकार गुरु हेव के मुख्यार णिन्द से अशोतर के सरकार से समझ कर भारभार सांजलि नमस्कार करता हुआ अकबर ने कहा हैगुरुहेव? इतने दिन मे आपके चारित्र पर ही मुग्ध था लेकिन आज तो आपकी विकृता के परिचय से क्षुग्ध हुआ हूँ अब आप से प्रार्थना है कि मेरी आत्मा का कल्याण जिस तरह हो वैसा सुगमता का भार्गु कृपया बताएं, आस आत्मा की ओज मे अहुत दिनों से लगा था लेकिन आपके जैसा महात्मा कोइ नहीं मिला था। हे महाराज? आप सर्व शाखा एवं आत्म तत्त्वज्ञ हैं आपसे कोई भात छीपी हुई नहीं है अतःकृपया यह बताएं कि मेरी जन्म कुनौली मे भीनराशि पर जो शनिक्षर आया हुआ है उनका मुझे इत लया होगा। इस पर सूरिल ने उतर हिया कि पृथ्वीपति? यह इत्याइत बताने का काम नयोत्तिष्ठि गृहस्थियों का है जिसके अपनी उविका चलानी पड़ती है वे ही इस भातों का विशेष ध्यान रखा करते हैं। हम को उत्तम भौत भार्गु के साधन भूत ज्ञान की आकृक्षा रहती है और तदर्थी ही हम लोग श्रवण भनन और प्रवचन किया करते हैं अकबर के भारभार अत्याख्य हु के पश्चात् सूरिल ने कहा है आत्मज्ञासे? आप कुनौलीस्थ थेहों की शंका न करके आत्म साधन भूत ज्ञान

૬૭

પ્રાપ્ત કરને કી કોશિશ કરેં કબોંકિ આત્મ જિજ્ઞાસુઓં કે લિયે ધતર કી જોજ ઔર શાંકા અદિચિત્ર કર (વ્યર્થ) હુઅા કરતી હૈ.

ઇધર સૂર્યાસ્ત હોને જરહા હૈ. ગુરુહેવ કે પ્રતિલેખન (પડિલેહુન વિશોષ કિયા) કા સમય ઉપરસ્થિત હોરહા હૈ. સલા મે વિક્રિગોણી કરતે હુએ પંડિત શાન્નિતચન્દ્રલુ તથા સમસ્ત સલાસહ ગુરુહેવ ઔર બાદશાહ કે આને સે વિલાઘ હેખતે હુએ તર્ક વિતર્ક મે મસ્ત હો ઐઠે હૈ. સલા કે બાહુર દ્વારપાલોં કા મન વિહૃલ હો રહા હૈ કિ અલી તક અંદર સે ડેઢ નહીં આ રહે હૈ કથા કારણ હૈ ? શાયદ ફક્કડાબાબાને પ્રલુબર બાદશાહ કો અપની ફક્કડાઈ કારા કહી લેતો નહીં ગયા. ધતને મે આગે સૂરિલ મહારાજ ઔર પીછે પીછે અકબર બાદશાહ કો સલા મંડપ મે આતે હુએ હેખ કર અપની અપની શાંકા કો હડાતે હુએ આનંદ મે મળન હો ગયો.

અકબર સલા મે આકર યથોચિત સ્થાન પર સૂરિલ કો ઐઠા કર સ્વયં ઐઠતે હી કહને લગા કિ ઇન મહાત્માઓંકી કૃપા સે મેરી રાજધાની પૂર્ણ પવિત્રમયી હો ગઈ હૈ. મે કદચેક દિનોં સે એસે ફૂકીરાં કી જોજ મે થા પરંતુ સુકદર (લાભ) સે આજ આપકે ચરણ રજ સે કૃતાર્થ હુઅા હું સુઝે આશા હૈ કિ આપ મેરે પર દયા કરકે કુછ દિન ઠહરકર સન્માગી બનાને કા કોણે કરેંગો. અખૂલફૂજલ કો ઉહેશ કરકે અકબરને કહા કિ સૂરિલ

६८

की विक्षता निस्पृहता और पवित्रता से अनुभान होता है की आपके शिष्यवर्ग ली सकल कला से परिपूर्ण होंगे इतने में अभूतकृज्ञल ऐसा उठा हो गरीबनवाज ? आपके शिष्य की वक्तृत्व कला से भावूम होता है कि आपके शुरुआती भृहस्पति के तुल्य ही होंगे. विशेष परिचय तो आपको हो ही गया होगा.

तत्पश्यात् अकणर ने थानसिंह के पूछा कि सूरिलु के कितने शिष्य होंगे. उनमें से साथ कितने हैं. ४१०५ में थानसिंह ने निवेदन किया कि हजुर आपके २५०० पश्चीश सौ शिष्य हैं. जिनमें एक शिष्य पक्षधर विजय सेन सूरिलु है और ८ उपाध्याय और १६० पंडित हैं. शेष विनापद्वी केसुनी है. उनमें से उपाध्याय श्री शांतिचंद्र गण्डु आदि १३ तो सामने हीरे रहे हैं किन्तु सुना है कि कुल ७८ साथ है. उपस्थित शिष्यों के नाम तो उपाध्यायलु बता सकते हैं. इस आत के सुन कर उपाध्याय श्री शांतिचंद्र गण्डु ने सला में उपस्थित शिष्यों के नाम की आकांक्षा की पूर्ति करके अकणर की शंका के लंका लेज दी. इस प्रकार विनोद के बाद सूरिलु ने उठ कर जाने की इच्छा प्रकट की. उस पर आदशाह ने थानसिंह के कहा कि अपने शाही बाजे के साथ धूमधाम पूर्वक आपको अपने स्थान पर पहुंचा हो. हुक्म होते ही सभ शाही झोज शाही बाजे और खडे खडे अक्सरमेव अभूतकृज्ञल के साथ थानसिंह ने सूरिलु के कर्णुराज के

૪૬

મહલ મેં પહુંચા કર સથ અપને અપને સ્થાન કી ઔર રવાના હો ગયે. અધૂલિઝલ લી દરખાર મેં આકર અકબર ડો. સૂરિલુ કે પહુંચ જને કી ખખર હેઠી. ।

ક્રિં રાત ડો. મહલ મેં અકબર ઔર અધૂલિઝલ ઘેડ કર સૂરિલુ કે સમબન્ધ મેં અન્યોન્ય બાતચીત કરને લગે. ઉસ સમય બાદશાહ ને સૂરિલુ સે ધર્શવર ઔર ખુદા કે વિષયમે જે બાતેં કીથી વો કહ સુનાઈ ઔર કહા કી સૂરિલુ વાસ્ત્વક તપસ્વી ઔર પૂરા ફેરિર હૈ ઈનકો દ્વાર દેશ સે આમન્ત્રણુ લેજ કર યુલાયા હૈ ઔર ઉન્હોને અપને લિયે ઈતના કષ્ટ કિયા હૈ તો જિસ તરફ સે યે મહાતમા સંતુષ્ટ હોકર જાવે વૈસા હી કરના અપના ફર્જ હૈ. ઈસ પર અધૂલિઝલ બોલા કી ગરીખપરવર ઉસ દિન સલા મે મોહી કે મુખ સે સુના થાકી કુંચન કામિની કા સ્પર્શ લી નહીં કરતે હૈ. તો કિસ ચીજ સે સંતુષ્ટ કરેગે હાં હો સકતા હૈ કી પુસ્ત લાંડાર દેકર અપના ફર્જ અદા કર દેગે. કયોંકિ વહુ જીન કે સાધન ભૂત હોને સે ઈનહોં કે વિશેષ ઉપયોગી હી હોગા. બાદશાહ ને ઈસ બાત કા અનુમોદન કરતે હુએ કહા કી વહુ કેસે ત્યાગી હૈ ઈસ વિષય મેં કલ ઔર પરીક્ષા કરેગે. ઈતના કહ કર અપને અપને આરામ રૂમ મેં અદેગયે.

દૂસરે દિન અકબર ને સૂરિલુ કે સાથ ધર્મ ચર્ચા કરના પ્રારંભ કિયા. ઈસ પર સૂરિલુ ને કહા હું સૌચય?

७०

धर्म के अनेक मार्ग हैं मैंने आपको अतला हिया है। किन्तु सबसे उत्तम धर्म अहिंसा ही है अहिंसा को पालने में सब का समावेश होना है सब पापों में मुख्य पाप हिंसा ही है। ज्ञाने को मारने वाला, मारने में सलाह देने वाला, शब्द से भरे हुए ज्ञाने के अवयवों को पृथक् पृथक् करने वाला, मांस खरीदने वाला, बेचने वाला, संलालने वाला, पकाने वाला, और आने वाला ये सभ छिंसक कहलाते हैं। पशुओं की हिंसा से उनके शरीरस्थ रोम तुल्य होने का पशुधातक को नरक में जाकर असह्य हुःअ जोगना पड़ता है। जो अपने सुख की इच्छा से ज्ञाने को मारता है वह ज्ञान हुआ मृत प्रायः है क्योंकि उसको कहीं भी सुख नहीं मिलता।।

इतनी हुःअ की बात है कि जब भुद के पाले हुए पशु के ली ज्ञान के लालच से होना कर देते हैं उनसे महापापी इसरा डान लेगा? जो पशु सेवक के द्विये जिना दाना चारा नहीं आता सेवक के बाहर जने पर यां यां किया करता है और उसके आने से भुश होना होता है उस ऐचारे पशु को ली अपने हाथ से मार डालते हैं। ऐह उनसे निर्दयी और कठोर हुल्य पुरुष कोन है अर्थात् कोई नहीं।

सूरिल की बाते सुन कर बादशाह ने ग्रन्त किया कि कूल कूल कंद और पौधे में ली ज्ञान है इस आने

७१

वाले को पाप क्यों नहीं होता उतर में आपने कहा ज्ञव
अपने पुन्यातुसार क्षेत्र से अधिकाधिक पहली को ग्राह्य करते
हैं वैसे वैसे अधिक पुन्यवान गिने जाते हैं। इसी कारण से
को एकेन्द्रिय से द्विन्द्रिय, द्विन्द्रिय से त्रीन्द्रिय और त्रीन्द्रिय
से चतुरेन्द्रिय इस तर सर्वोत्तम ज्ञव पंचेन्द्रिय समझना
याहिये। और पंचेन्द्रिय में भी न्यूनाधिक पुन्य वाले हैं अर्थात्
तिर्यक् पंचेन्द्रिय बड़े गौ लैंस उट आहि मे हाथी
अधिक पुन्यवान हैं और मतुष्य वर्ग में भी राज मन्ड-
लाधीश चक्रवर्ती और योगी अधिक पुन्यवान होने से
अवध्य गिने जाते हैं।

क्योंकि संथाम में यहि राज खड़ा जाता है तो
मारा नहीं जाता। इससे यह सिद्ध हुआ कि एकेन्द्रिय की
अपेक्षा द्विन्द्रिय को मारने में अधिक पाप होता है
अब अधिक अधिक पुन्यवान को मारने से अधिक पाप
कहता है। इसलिये जहां तक एकेन्द्रिय से निर्वाह हो
सके वहां तक पंचेन्द्रिय ज्ञव का मारना सर्वथा अयोग्य
है यद्यपि एकेन्द्रिय ज्ञव का मारना भी पाप अन्ध का
कारण ही है किन्तु कौर्त उपायान्तर न रहने से गृहस्थों
को वह कार्य अगत्या करनां ही पड़ता है। अतः अब किताने
ही ल०४ ज्ञव इस पाप के लाय से धन धान्य राजपाट
पुत्र क्लव वर्गेरह छोड़कर साधु ही धन जाते हैं। और अपने
ज्ञवन पर्यन्त अग्नि आहि को भी नहीं छूते तथा
भीक्षा भाव से उद्दर पोषण कर लेते हैं गृहस्थ भी जो

૫૨

અગત્યા એકેન્દ્રિય કા નાશ કરતે હૈ ઉસ પાપ કે પરિહાર કે લિયે સાધુઓં કી સેવા દાન ધર્મ ઔર હોનો સંદ્યા આદિ પુન્યકૃત્ય જન્મ લર કિયા કરતે હૈ. મોક્ષમાત્રે લુલી સાધુઓં કે ઉપર આરભ કા દોષ નહીં હોતા હૈ. ક્યોંકિ ગૃહસ્થ દોગ અપને નિમિત હી આહાર બનાતે હૈ.

ક્ષત્રિયોં કે લિયે હિંસા ધર્મકારક કહી જાતિ હૈ. કિન્તુ ક્ષત્રિયોં કા ધર્મ શાસ્વવાનુ શર્ત કે સન્મુખ હોને કે લિયે હી હૈ. કિન્તુ વહુ લી ચોણ્ય ઔર શાસ્વયુક્ત એવાં નીતિપૂર્વક નિષ્કૃપટ હોકર તથા ઈતના હી નહીં કિન્તુ ઉત્તમ વંશી વીર રાજ કે સાથ હી કરના ચાહ્યો. પરંતુ આજકલ નિરપરાધી જીવોં કો મારને હી મે અપના ધર્મ સમજતે હૈ. લેકિન વાસ્ત્વક યહુ બિલડુલ અનર્થ-કારક હૈ રાજ વિચકાણુ ક્ષત્રિય હોકર લી હિંસા કો હેખ કર ડર ગયે. કિંતને હી મુર્ખ ગંવાર તો હિંસા કરને મે બડી બહાદુરી માનતે હૈ. ઔર કહતે હૈ ક્રિ હિંસા કરને સે હિંસકો કી સંખ્યા અદૃતી હૈ જિસસે ચુદ્ધાદિ કર્ય મે વિશોષ વિજય હોને કી સમાવના હૈ. કિન્તુ ઉન લોગો કી યહુ કલ્પના નિર્મૂલ હૈ. ક્યોંકિ હેખિયે રાજ વિચકાણુ. ઔર પ્રાચીન બર્હિશને યદિ હિંસા કા ત્યાગ કિયા ઔર હિંસા કર્મ કી નિંદા લી કી તો કુયા ઉનકા રાજ્ય નાટ હો ગયા ? અથવા વે દોગ લડાઈ મે અસકત હો ગયે ? યા વે શર્ત સે હાર ગયે ? નહીં ! ઔર વથેણ માંસ ખાને વાલે કયા વિજયી હુંએ ?

૭૩

એક વહ ભી વિચાર કરને કી બાત હૈ કે એક પક્ષી કો મારને વાલા એક હી જીવ કા હિંસક નહીં હૈ કિન્તુ અનેક જીવાં કા હિંસક હૈ. કચોંકિ જિસ પક્ષી કી મૃત્યુ હુઈ હૈ યદિ વહ જીવની જતિ હૈ ઔર ઉસકે છોટેછોટે અથ્યે હો તો વે માં કે મરણને સે કયા લન્દા રહુ સકતે હૈ કલી નહીં. એક ઔર શોધને કી બાત હૈ કે ખુદા હુનિયા કા પિતા હૈ. તથ હુનિયાં કે બકરી ઉટ ગૌ વગેરેહ સભી પ્રાણિયાં કા વહ પિતા હુઆ તો ક્રિદ વહ ખુદા અપને કિસી પુરાકે મારને મેં ખુશી કિસ તરહ હોણા ? અગર હોતા હો તો ઉસે પિતા કહુના ઉચ્ચિત નહીં હૈ. ઈસલિયે બકરી ઈંદ કે રોજ જે સુસલમાન દોંગ હિંસા કરતે હૈ કિંતના અત્યાચાર કરતે હૈ ?

અહિંસા હી સમસ્ત અભીષ્ટ વસ્તુઓં કો દેને વાતી હૈ. પ્રાણિયોં કે વધાંધ આદિ કલેશોં કો કરના જે નહીં ચાહતા હૈ વહ સખ કા શુલેચ્છ અત્યન્ત સુખ રૂપ સ્વર્ગ અથવા મોક્ષ કો પ્રાપ્ત હોતા હૈ. એવાં જે પૂરુષ ડાંસ મશાકાદિ સુક્ષમ અથવા બડે જીવાં કો નહીં મારતા હૈ વહ અલિલવિત પદાર્થ કો પાતા હૈ. ઔર જે કરના ચાહેં વહ કર સકતા હૈ. અહિંસાવાહી પ્રતાપી પૂરુષ જિસ ચીજ કા વિચાર કરેં. વહ ચીજ અનાયાસ એવાં તુરન્ત હી મિલ જતી હૈ.

જે પૂરુષ સખ આણિયાં મેં અપની આત્મા કે

५४

समान वर्ताव करता है वही पंडित और नेत्र वाला है गौ लैंसे अकरी वगोरह और अनंदज अर्थात् सभ प्रकार के पक्षी उद्दिनज याने वनस्पति और स्वेदज याने अटमल भवधर डांस जुंआ लीभ वगोरह समस्त जन्मुओं की ले मनुष्य हिंसा नहीं करते हैं वेही शुद्धात्मा और हया पश्यथु सर्वोत्तम है बहुत से साधुजन अपने जीवन की भूम्यां में हेठले निज मांस के द्वारा हुसरों के मांस की रक्षा कर के उत्तम गति को प्राप्त हुए हैं अहिंसा सभ प्राणियों की हित करने वाली माता के समान है और अहिंसा ही संसार रूप मरु देशमें अमृत की नाली के तुल्य है। तथा हुःअरुप हावानल को शान्त करने के लिये वर्षाकाल की भेष पंडित के समान है एवं जब भ्रमणु रूपं महा दोग से हुई ज्वों के लिये परम औषधि की तरह है। अहिंसा समस्त त्रोतों में भी मुकुट के समान है अत्येव है महीपते ? आप भी सर्वं सुख जननी अहिंसा को स्वीकार करते हुए प्रजा से भी ज्वों की रक्षा करवाते हुए अहिंसामय राज्य को नीति से भालन करे। और आपके हिल में कोइ भी शंका न हो तो पूछ कर निवृति कर दीजिये।

और जैन धर्म में हया डो ग्रधान पद हिया गया है। सभ धर्म ईसी को अवलंभन करके रहे हैं। दान, शील, तप, भाव परोपकार इत्यादि शुल कियाए होती हैं। उन सभका मूल हया है। जैन धर्म में कहा है कि “धर्म-

૭૫

“सर्स ज्ञानुषुणी हया” धर्म की माता हया है। हया के उपर ही सब की दारसुदार है। लेकिन हया के स्वरूप को समझना चाहिये। लोग हया हया खुब पुकारते हैं। परन्तु हया क्या चीज़ है, अभी समझें नहीं।

अहिंसा और हया में अहुत अन्तर है। किसी उव के तकलीफ नहीं हेना, मारना नहीं, सताना नहीं, उसके हिल में चोट पहुंचाना नहीं, यह अहिंसा है। लेकिन इस अहिंसा का पालन कौन कर करेगा? जिस के हृदय में हया छाँगी वही। इसलिये हया, यह अन्तःकरण के लावों का नाम है। हुःअी के हेष्टकर के अपने हृदय में हर्द छाना यह हया है। अथवा मेरे इन शब्दों पर फ़सरों के हुःअ छाँगा ऐसा विचार छाना उसीका नाम हया है।

इसरी बात यह है कि इसमें भी मुख्य करके निरपराधी लोगों की हिंसा का त्याग बताया है। इसलिये यह नहीं समझना चाहिये कि भीषु, सांप, शेर, घटमत, जूँ आदि उव हमारे अपराधी हैं और अपराधी समझ कर के उसको मार हिया जाय। अरी बात यह है कि संसार में कोई भी उव मनुष्य का अपराधी नहीं है। सांप, भीषु, शेर आदि जनवर तो खुद ही मनुष्य से इतने उत्तर हैं कि वे मनुष्य से छिप कर ही रहना चाहते हैं। जहां जहां मनुष्यों की आभाधी होती है वहां वहां

૭૬

से वे हुर ही चले जाते हैं। और जब तक वे किसी
हथाव में, लय में, आहृत में, नहीं आते अथवा वे
गळताते नहीं, तब तक भनुष्य पर कली हमला नहीं
करते। उन जियारे निर्देष जुवों को अपराधी समझ कर
उनकी जान लेना, भनुष्य का लय कर अत्याचार है। गुनहा
है। इस गुनहा की सजा, भनुष्य लोग अनेक अकार की
जिमारियां, भूकम्प, जलप्रलय, आग, आदि के द्वारा पाते
हैं। जो भनुष्य शुद्ध अहिंसा का; शुद्ध हया का
पालन करता है; उसको कोई जुव तकलीफ नहीं होता।
इसलिये निरपराधी विशेषण का हुरुपयोग नहीं करना
चाहिये।

निरपराधी विशेषण होने का तात्पर्य यह है कि
मानो कोई भिन्नस्टेट है और एक खून का गुन्हेगार उसके
सामने आया। आनून की हप्टि से उसको पांसीकी सजा
करनी है। उस समय उस अपराधी को हाँड करना, सजा
करना, उस भिन्नस्टेट के लिये वाणिज है। इसी अकार
कोई हुप्ट आहमी किसी अहन ऐटी के उपर अत्याचार
करता है। यारी करता है। तो उस समय वह अपराधी
सन्तान जायगा। और उसके अपराध को सजा करना
गृहस्थ के लिये अनुचित नहीं समझा जायगा। इसलिये
हर एक प्राणी पर हया रखना परम कर्तव्य है चूंकि
अहिंसा पालन करने वाला अडा जाग्यवान् होता है
और अहिंसावाही की आज्ञा जनता सहस्रं द्वीकार करती

७७

है। सौभ्याकृति से सम्पन्न एवं परम त्यागी बनता है। यश आरा दिशाओं में व्याप्त हो जाता है। चिरलुधि तथा आरोग्यशाली बनता है। जो सभ ज्यें के उपर हया करता है वही सच्चा धर्मी कहा जाता है। और धर्मी भनुध्य अवश्य सहजति का पात्र बन जाता है। और उनको हमेशा सुभ और सम्पदा अनायास ही मिल जाति है। इसलिये हे राजन्! सर्व प्रकार से हया का पालन करना अपना परम पवित्र कर्तव्य समझें। इसी में तुम्हारा कल्याण है।

सूरिल का मार्मिक उपदेश हतचित से श्रवण कर अक्षर सविनय कहने लगा हे शुरु देव? मैंने ऐसा नहीं जाना था कि आप ऐसे हयाशील एवं लकुतपत्स्वल हैं आपने जैसे परोपकार लाव स्पष्ट रूप से प्रकट किया है तथा अमूल्य सहृपदेश हिया हैं इसके लिये मेर्हसी ज्ञान मेरी ही नहीं अल्प जन्मांतर मेरी भी आसारी रहूँगा। इतने हिन मेरा वास्तविक अहिंसा से वाकीह नहीं था अब आपकी कृपा से कुछ हृदयगम्भ हुआ है। और होने की आशा है, किससे मेरा सविष्य सुधर जायगा। अतएव आपसे पुनःअर्ज है कि यहां कुछ हिन ठहर कर मेरी सवित्रयता मेरा ज्ञान का सहस्रोग होकर कृतार्थ करे। और एक विनती है कि आप जो मेरे लिये तकलीफ उठाकर हुर देश से पधारे हैं इसके अद्वेष मेरी मैं जो कुछ होना चाहता हूँ उसे स्वीकार करें।

७८

आपके कथनातुसार मेरी लक्ष्मी यधपि आपके उपयोग मे नहीं आती क्योंकि आप अपने शरीर पर भी भूर्छा नहीं रखते हैं तो लक्ष्मी को तो कहना ही क्या ? इस भी निवेदन है कि मेरे आश्रु से आपके उपयोगी पुस्तक लंडार लेकेवें।

यह पुस्तक लंडार इतहपुर शिकरी पर पद्मसुन्दर नामक नागपुरीय तपागच्छीय ओक जैन यतिलु का था उसका अंतःकाल होने पर ग्रेम के नाते हरभार मे भंगवा लिया। और उसी समय चिचार कर लिया था कि जब कोई सुयोग विद्वान् महात्मा भिलेगों तब उन्हे लेट कर हुआ। इस लंडार मे पुस्तकों के सिवाय कुछ नहीं है सिर्फ् भागवत महाभास्तु पुराण रामायणादि शैव शास्त्र याय व्याकरण साहित्य वेदान्त सांख्य भीमांसा छांद अलंकार जैनागम और नानादेशीय धर्मितास आदि अनेक अन्य हैं। इस लंडार के योग्य पात्र न होने के कारण मैंने किसी को देना उचित न समझा किन्तु आज मेरे भाग्यवश आप कैसे सुविहित महात्माओं का आगमन होगया। इसलिये आपको सुपुर्द कर मेरे शिर का लार हटा कर रहा हूँ इतना कहने के बाद खानखाना नामके अद्वारा पुस्तकों की भंजुषा (पेटीर्ये) सामने भंगवा कर आपको लेट कर ही।

सूरिलु ने उसे अस्वीकार करते हुये कहा कि

૭૬

આવશ્યકતાનુસાર પુસ્તકે હમારે પાસ હૈ. દ્વિર લેકર ઉસકી આશાતના કથોં કરે આત્મ સાધન મેં મુખ્ય સહાયક હોને કે કારણું પુસ્તકોં કા રખના આવશ્યક હોને પર લી જરૂરત સે અધિક રખના મમત્વ કે હેતુ પરિશ્રહ મૂર્ખ રૂપ હી હોણતા હૈ. ઈતને મેં અખૂલ-ઇજલ સૂરિલુસે કહુને લગા હે મહારાજ ? ચાહિ આપ ઈસકો લી સ્વીકાર ન કરેગો તો હમ લોગો કી આત્મા અત્યન્ત ફુખમય હોણવેગી. તો દ્વિર આપકી અહિંસા કેસે રહેગી. અકખર ઓર અખૂલઇજલ કે અત્યાશ્રહ સે બાધ્ય હોકર સૂરિલુને પુસ્તકોં કો સ્વીકાર કરકે “અકખરીથ લાંડાગાર” કે નામ સે આગરા મેં શ્રી સંધ કો સુપુર્દ્દ કર દી.

સૂરિલુ કે પાસ અકખર બાદશાહ તથા અખૂલઇજલ આહિ વિનોદકી બાતે કરતે થે। ઈતને મેં વીરખલ ને પૂછા કિ મહારાજ ? શાંકર સગુણુ હૈ ? સૂરિલુને કહા કિ હાં સગુણુ હૈ। ઉસને કહા કિ મેં તો શાંકર કો નિર્ણયુણી માનતા હું। શુરૂળને કહા નહીં। કદમ્પિ નહીં। મેં પૂછતા હું કિ શાંકરકો આપ ઈશ્વર માનતે હૈ ? વીરખલ બોલા અહાં। સૂરિલુ ને કહા કિ ઈશ્વર જાની યા અજાની ? વીરખલ, ઈશ્વર જાની। સૂરિલુ બોલે જાની કિસકો કહુતે હૈ। વીરખલને કહાકિ જાન વાતા। સૂરિલુને કહા કિ જાન શુણુ હૈ કિ નહીં ? ઉસને કહા કિ જાન શુણુ હૈ। સૂરિલુ ને કહા જાન શુણુ હૈ ? વીરખલને કહા કિ અહાં, જાન શુણુ હૈ। શુરૂળને કહા કિ જખ આપ જાન કો શુણુ

८०

मानते हैं तथ शंकर भी ज्ञान युक्त है। ईसलिये शंकर संशुण्ड छो गया। ईस पर वीरणद ऐला कि महाराज? आपनेतो बहुत ही सरल एवं सुन्दर रीति से स्पष्ट रूप से समझा दिया, और भैं भी समझ गया। आप कीःअदौकिक विद्वता पर अड़ा आनंद आ रहा है। देखिन द्विर कभी समय पाकर आपसे आतचीत कर अपने को धन्य समझुँगा। ईतनी भातें कर सब सला विसर्जन हो गई।

चातुर्मास का आसन्न समय हेष कर सूरिल ने भादशाह को संकेत करके आगरा तरक विहार कर दिया आगरा भादशाह की मुख्य राजधानी थी। वहां की जनता की अनन्य लकित से विवश हो कर सं० १६३६ को चातुर्मास आपने आगरा भैं ही ठान लिया। वहां के नागरिक लोगों की लावना को अपने उपहेश ग्रासाद्वारा अक्षरशः परिवर्तन करते हुये आपने अहिंसा हेवी की स्थापना करके चातुर्मास उठते ही कुशावर्त हेशस्थ शोर्य-पुर भैं अधिष्ठित श्री नेमीश्वर लगवान् की हीदक्षा से वहां पर पधार कर पिपासित चक्षुओं को तृप्त करते हुये वापिस आगरा पधारने पर चिन्तामणि पाश्वनाथ ग्रासाद की धुमधाम पूर्वक प्रतिष्ठा की। ईतने भैं अकेलर भादशाह का राजहृत आपको खुलाने के लिये आजर आर्थना करने लगा। हे विश्व रक्षक? आपके लिये भादशाह बहुत लालायित है। आपकी हैनिक चर्चा किये

८९

विना उसे चैन नहीं पड़ती, इतने हिन चातुर्भासि की वश्छ अगत्या समय भिताया है अब आर्थिना की है कि एक बार और कृपा करके पधार जावे. अतः है मुक्ता प्रिय? आप वहां पधारने के बाहु अन्यत्र पधारें. लूपाल को सन्मार्ग में लाने से सारी प्रजा अपने आप सुधर जायगी. एक लूपाल को अपने काशु में लाने से अनेक जनता स्वतः काशु में आजलती है हुराचारी ऐवं हुराथष्टी जन भी शासक की साम दाम हंड और लेहरुपी नीति से विवश हो वश में आ जाते हैं. आपकी हया सुनकर कुद्दी लोग पुकार रहे हैं कि एक बार वो महात्मा और आजलता तो हम लोग भी कैद आने से छुटकारा पा जाते अतऐवं हु परोपकारीन्? आप अवश्य पधारें.

सर्वलुवोपकारी श्री हीरविजयसूरि महाराज ने सभ भाते सुन कर प्रत्येक पशुपक्षीआहि लुवों को मुक्ता करवाने के मन ही मन संकल्प करते हुए उसी हृत को अपने आने का दिवस कह कर आगे लेज दिया.

इतहपुर में हुत के सुख से सूरिमहाराज के आने की निश्चित खबर सुनकर अकेले अथुलझल थानसिंह और कर्मचारी आहि सभ कुद्दी पशु पक्षी अपने अपने मनोरथ रथ को बढाते हुए गुरुहेव हैं आने के हिन की प्रतीक्षा करने लगे.

कुछ समय ऊतीत होने पर इतहपुर शिकरी के

८९

पास आये हुए सूरिलु की अपर पाते ही अडे समारोह के साथ उन्हे शाही महल में लाकर विश्राम के लिये योग्य स्थान पर ऐठा करके अकभर अपने महल में चला गया। बाद में जनता भी तितर छागाई।

अकभर के हुसरे हिन सूरिलु आम जनता के समक्ष धर्मोपदेश देने लगे जिसमें कितने ही ल०४ ल०५ पर-आत्मा के स्वरूप के समझ करके अपेय अलक्ष्य महिरा मांस और कुब्यसनें के छोड करके सन्मार्ग गामी होते हुए सूरिलु का शुरु तुल्य मानने लगे। अकभर के भी हृष्टय में इस उपदेश का गहरा असर पड़ा। जिसका इत्यत्वद्वय यह हुआ कि अकभर का पाषाणुपत् कठोर हृष्टय भी भोग की तरह कौमल बन गया।

ऐक समय बादशाह ने सूरिलु से कहा कि शुरुहेव ? आपने जो क०८ किया है उसके लिये मेरे हिल में हॉ हैं जिसकी निवृति तभी होसकती है जबकि आप हम से कुछ लेकरवें। उतर में सुरिलु ने कहा शाहंशाह ? यहि आपकी भिभारी सुअे देने से ही हट जाती है तो मेरे आत्म कल्याण में सहायक चीजें होकर आप कृत कृत्य होनाहोये। वे चीजें ये हैं कि—

आपके जैल आने में कितने ही वर्षों से जो कैदी अडे हुए सड रहे हैं उन अलागे पर दूधा करके छोड हीजिये। जो भियारे निर्दोष पक्षी पिंजड में बन्द किये हुए हैं

८३

उन्हें निकाल कर स्वच्छ हचारी थना ही किये. आपके शहर के पास डाबर नामक १२ कोश का लभा ओडा तालाब है उसमें हजारों जले तथा बंसीये देखना ढाली जाती है. उनको सर्वहा के लिये बन्ह कर ही किये और हमारे पर्युषणों के पवित्र हिनों में आपके सारे राज्य में कोई भी मनुष्य किसी भी लुप्त की हिंसा न करे. ऐसे इरमान की उद्घोषणा कर ही किये.

इतनी आते सुन कर यादशाह ने कहा महाराज? आप अपने लिये तो कुछ नहीं कहा. उतर में सूरिल ने कहा कि संसार में ग्राणी मात्र डौं में अपनी आत्मा के समान ही समझता हूँ. अतएव उनके हित के लिये जो कुछ किया जायगा वह मेरे ही हित के लिये होगा.

इस पर अकबर ने सूरिल के समक्ष ही जैल में से डेहियों डौं अलयहान फेंकर निकाल हिये. पिंडड में से पक्षियों डौं निकाल कर गगनभागी थना हिये. अब डाबर तालाब में जले तथा वसिये ढालने की संत मना करही. और पर्युषणों के अतिरिक्त ४ हिन अधिक मिला कर १२ हिन अहिंसा पदाने का हुक्म निकाल हिया. उन हुक्मों के इरमान निम्न प्रकार हैं पहले सूखा शुजरात हुसरा सूखे मात्रवा तीसरा सूखे अजमेर चौथा छिल्ली और इतहपुर पांचवा लाठोंर और सुलतान के गवर्नर को लिख कर लेज कि अपने अपने समस्त क्षेत्र में कोई भी मनुष्य ला. कर. १० सेलगा कर ला. शु.

८४

६ तक अर्थात् १२ दिन ज्वलिंगा न करे. यह असूल हमेशा के लिये कायम समझना. ईस प्रकार इरमान लिख कर अकबर ने सूरियों को भी एक एक प्रति लेट करदी. ईस इरमान का इल रूप आज भी मालवे की धार रियासत में ईस नियम का पालन किया जाता है. इरमान को नक्ल ईस प्रकार है.

ईश्वर के नाम से ईश्वर बड़ा है.

महाराजाधिराज जलालुद्दीन अकबर खादशाह

गांगु जा इरमान नं. १.

मालवा लाहोर हिल्ली मुलतान अजमेर आदि के मुत्सु-
हियों को विद्वित हो कि हमारी कुल ईच्छाएँ ईसी भात
के लिये हैं कि शुभायरणु किये जय और हमारा ऐप्ठ
मनोरथ एक ही अलिग्राय अपनी प्रबल के मन को प्रसन्न
करने और उन्हें आकर्षणु करने के लिये सहेव तत्पर हैं.

ईस कारणु जब कभी हम किसी भत वा धर्म के
ऐसे पुरुषों का जिक सुनते हैं जो अपना ज्वलन पवि-
त्रता से व्यतीत करते हैं अपने समय को आत्मध्यान
में लगाते हैं और जो केवल ईश्वर के चिन्तवन में लगे
रहते हैं तो हम उनके पूजा की आद्य रीति नहीं हेषते
हैं. केवल उनके चित के अलिग्राय को विचार कर उनकी
संगति के लिये हमें तीव्र अनुराग होता है और ऐसे
काम करने की ईच्छा होती है जो कि ईश्वर को प्रसाद

८५

हो। ईस कारणु जैनाचार्य हरिलक्ष्म सूर्य (हीरविजय सूरि) और उनके शिष्य ने गुजरात में रहते हैं और हाल ही में यहां आये हैं उनके उच्चतम और असाधारण पवित्रता का वर्णन सुन कर हमने उनको दरणार में हाजिर होने का हुक्म दिया। और वे आदर के स्थान को यूमने की आज्ञा पाने सम्मानित हुए, आप अपने देश जाने के लिये विदा होने के समय निम्न लिखित प्रार्थना की कि यहि भादशाह अनाथों का सच्चा रक्षक है तो यह आज्ञा होइ कि लाहों भास के १२ हिनों में वे पचूसर (पञ्चषष्ठु) कहलाते हैं जिनका जैनी लोग विशेषकर पवित्र समजते हैं कोई भी मनुष्य उन नगरों में ज्व न भारे जहां उनकी जाती रहती है तो ईससे हुनियां में अशंसा होगी अहुत से ज्व वध होने से बच जायेगे और सरकार का यह उत्तम कार्य परमेश्वर को पसन्द होगा, जिन मनुष्यों ने यह प्रार्थना की है वे हुर हेश से आये हुए हैं, और उनकी छिछा हुमारे धर्म के प्रतिकूल नहीं है, उन शुल कार्यों के अनुकूल ही है, जिनका माननीय पवित्र मुसलमान ने उपहेश दिया है ईस कारणु हमने उनकी प्रार्थना को मान ली और हुक्म दिया कि उन १२ हिनों में किसी ज्व की हिंसा न की जायगी।

यह नियम सहा के लिये कायम रहेगा, और सभ को ईसकी आज्ञा पालन करने और ईस भात का धर्म करने के लिये हुक्म दिया जाता है कि कोई मनुष्य अपने धर्म

८६

सम्बन्धी शर्यों के करने में हुआ न पावे. मिति ७ ज्मा-
हुल सीनी सन् ६६२ छिअरी.

अकबर ने इरमान हेते हुए सुरिल से यह ली
कहा कि मांसाहार एवं भद्र पान के प्रिय भेरे अनुचरों
को ज्वरहत्या अन्द करने की बात दृचिकारक नहीं होने के
कारण धीरे धीरे अन्द करने की डैशिश करेंगा. पहले की
तरह मैं सी शिकार नहीं कहेंगा. और ऐसा प्रभन्द कर
दुंगा कि प्राणीमात्र को किसी तरह की तकलीफ न हो।

एक हिन सुरिल के विवेक पर मुँध होते हुए
अकबर ने आपको शुद्ध मानते हुए सारी प्रजा के समक्ष
शुरुहेव को जगद शुरु की पद्धति होती छिस समय एक
आट ने शुरु स्तुति की. जिसमें अकबर ने उस को लाख
इपये हे दिये। और जगद शुरु पद्धति के समय अकबर ने
महान् उत्सव मनाया। जिसमें कुल एक करोड़ का खर्च
कर दिया। धन्य है अकबर की शुरु अक्षित को।

उस उत्सव का आनन्द अनुपम रहा। इस खुशी-
यादी में भैड़तीय शाह सदारंग ने हजारों रूपये तथा हाथी
घोड़े गरीब शुरयों एवं याचकों को हान हेकर संतुष्ट कर
दिये। कुही सभ लोग सुरिल की जय जय ऐदने लगे।
पिंडड से निकलते हुए पक्षीगण आपके शुण्यगान करते
हुए अपने अपने परिवारों से भिंतने के लिये उत्सुक
होकर यथेन्द्रि परिभ्रमणु करने लगे। शहर में यादों और

८७

हुंकुलि नांद होने लगा। शेठ साहुकार लोग श्रीकृष्ण मिठाई कपडे रूपये धृत्यादि की प्रसापना होने लगे। उस समय अकबर बाहशाह का माननीय प्रतिष्ठित जेताशाह नाम का एक नागोरी श्रावक था। अकबर के कहने से जगदू शुरुहेव ने दीक्षा होकर लुतपिक्ष नाम रखा। परन्तु वह बाहशाही चति के नाम से ही प्रसिद्ध हुआ।

धधर शेठ थानसिंहने मणेत्सवपूर्वक अपने मन्दिर में जिन प्रतिमा की जगदूशुरु हेव के कर कमलों द्वारा अतिष्ठा करवाई। उस समय श्री शान्तिचंद्रल वाचक (उपाध्याय) पद से विभूषित हुए, ऐवं हुज्जुमल ने आपके कर कमलों द्वारा हुसरा प्रतिष्ठा मणेत्सव करवाया। उपरोक्त कार्य करते हुए जगदू शुरु श्री मद्विजय हीरसुरिल महाराजने अकबर के अत्याशह से चातुर्मास सं. १६४० में फैतड़पुर शीकरी पर ही ठा लिया। धर्मेपदेश द्वारा जनता को सचेत करते हुए समय को सार्थक करने लगे। पर्युषण पर्व आने पर अहिंसा पद्धाने की उद्देश्याख्या अकबर ने समस्त राज्य में करवाही जिससे जैन धर्मकी करुणा का प्रवाह सब दिशाओं में झेल गया।

चातुर्मास के बाद अकबर के आशह से उपाध्याय शान्तिचंद्रल को यहाँ छोड़ कर सूरिल विहार कर के आगरा लेते हुए मथुरा के प्राचीन जैन स्तूपों की यात्रा करते हुए ग्वालियर पहुंचे जहाँ कि गोपगिरी पर्वत पर आधि हुई विश्वल काव्य लंब्याकृति जिन प्रतिमा (खावन

૮૮

ગણ કે નામ સે પ્રસિદ્ધ હૈ.) કે દર્શાન કર સંં ૧૬૪૧ કા ચાતુર્મસ કરને કે લિયે દ્વારાધારાદ આ પહુંચે. ભવ્ય જીવોં કો પ્રતિષ્ણાધ હેતે હુએ અહિંસા પરમો ધર્મ પર અત્યંત જોર હેકર આતતાવિદ્યોં કી ખૂરી આદત કો છોટાતે હુએ ગાવોગાવ ધુમતે હુએ પુનઃઆગાર પધારને પર સંં ૧૬૪૨ કા ચાતુર્મસ સંધ કે આચહ સે કરકે યણા પર શ્રી જૈન જૈનેતર મુસલમાન આદિ કો સદ્ગ્રહોધ હેને લગે. જિસસે કિતને હી હિન્દુ મુસલમાન લોગો ને મધ્ય માંસ કા આણુંથન પરિત્યાગ કર દિયા.

આગારે મે વિરાજમાન જગદ ગુરુ કો જનકર કે દર્શનાર્થ અકખર આકર જનતા કી બઢતી હુદ્ધ સદ્ગ્રહાવના કે હેખ સુન કર અત્યંત હવિંત હુએના.

એક સમય જગદ ગુરુ ઔર અકખર પરસ્પર આલાપ સંલાપ કર રહે થે ઉસ સમય પ્રસંગ વશ ગુરુજી ને કહા કી અથ મેરી ચૌથી અવસ્થા આગાઈ હૈ હિન પ્રતિહિન શારીરિક શક્તિ ભી ઘટ રહી હૈ. અતએવ ઐસા વિચાર હૈ કી ધિધર ઉધર ન ધૂમ કર ગુજરાત મે રહે હુએ શરૂંજ્ય ગિરનાર આદિ પવિત્ર તીર્થોં કી યાગા કરકે શેષ જીવન એક તીર્થ સ્થાન પર વ્યતીત કરું.

આપ સે એક માંગ હૈ કી ગુજરાત આદિ દેશોં મે રહે હુએ શરૂંજ્ય ગિરનાર આણુ તારંગા કેસરિયાળ સમેત શિખર ઔર રાજગૃહી કે પાંચ પહાડ આદિ જો

૮૬

હમારે અડે અડે તીર્થ સ્થાન હૈ ઉન પર કિતનેક અવિચારિ ખુદ્ધિલીન સુસલમાન હિંસાન્દ્ર કૃત્ય કર હમારે દિલ કે હું આતે હૈ એઓ તીર્થ કી પવિત્રતા કો નષ્ટ ભ્રષ્ટ કર દેતે હૈ ઈસલિયે આપ સે અતુનય હૈ કિ ઈન તીર્થોં કે વિષય મેં એક ઐસા શાઢી કરમાન હોણના ચાહ્યે જિસસે કોઈ મનુષ્ય ઈન તીર્થોં પર કિસી લી પ્રકાર સે અતુચિત વ્યવહાર ન કરને પાવેં.

ઈસ પ્રકાર જગદ્ શુદ્ધ કે દ્યામય વચન સુન કર તુરન્ત હી બાદશાહ ને અપને કરમાન મે ગુજરાત કે શાનુંભ્ય પાના પુરી ગિરનાર સમેત શિખર ઔર કેસ-ચિયાળ આદિ જૈનસમ્પ્રદાય કે પવિત્ર તીર્થ હૈ. ઉનમે જે કિસી તીર્થ પર કોઈ લી મનુષ્ય અપની દખલગિરી ન કરે. ઔર કોઈ જન બુઝ કર કિસી જનવર કી લી હિંસા ન કરે. યે સથ તીર્થ સ્થાન જગદ શુદ્ધ શ્રી મહિલ્ય હીર-સુરિલુ મહારાજ કો સૌંપે ગયે હૈ. ઐસા કરમાન અકબર ને લિખ કર સુરિલુ કે કર કમલોં મે સાદર સવિનય સમર્પણ કર દિયા. ઉસ કરમાન કી નકલ યહુ હૈ.

સર્વ શક્તિમાનુ પરમેશ્વર.

જલાલુદ્દીન માહુરમદ અકબર બાદશાહ ગાંધુ કા કરમાન નં. ૨
--

શુરવીર તૈમૂરશાહ ફા એદા મીરશાહ ઉસકા એદા સુલતાન મહુમ્મદ મીરજા ઉસકા એદા સુલતાન અહુ સૈયદ ઉસકા એદા શેખ ઉમર મીરજા ઉસકા એદા અણર બાદશાહ ઉસકા એદા હુમાયુ બાદશાહ ઉસકા એદા અકબર બાદશાહ જો દીન ઔર હુનિયા કા તેજ ન.

સૂધે માલવા શાહજહાનાબાદ લાઇન સુલતાન અહુ-
મદાબાદ અજમેર મરેઠ ગુજરાત ખાંગાત તથા મેરે તાથે
કે ઔર સભી સુદકોં મે અણ જો મોળુદ્દ હૈ તથા પીછે
સે જો નિયત કિયેં જાય ઉન સભી સૂધેદારોં કરડિયોં
ઔર જગીરદારોં કો સૂચિત કિયા જાતા હૈ કિ—

હમારા કુલ ધરાદા અપની પ્રજા કો ખુશ કરને ઔર
ઉસકે હિલ કો રાણ રખને કા હૈ. કિયોંકિ રધ્યત કા જો
મન હૈ સો પરમેશ્વર કી એક બડી અનામત હૈ ઔર
વિશેષ કરકે વૃદ્ધાવસ્થા મે મેરા યહી ધરાદા હૈ કિ મેરા
લલા વાંચને વાલી પ્રજા સુખી રહે. તથા હમારા અંતઃકરણ
પવિત્ર હૃદય વાલે ધરબર લક્ષ્ય સંજગ્નનોં કી ઓજ મે
નિરંતર લગા રહુતા હૈ. ધર્સલિયે અપને રાજ્ય મે રહે
હુએએસે સાધુ પુરુષ કા જબ કલી હમ નામ સુનતે હૈ તો
તુરન્ત ઉંહેં બડે આહર કે સાથ અપને પાસ યુદ્ધ કર
સત્તસંગતિ કર આનન્દ પ્રાપ્ત કરતે હૈ.

હમને ગુજરાત મે રહુને વાલે જેનરવેટાબાર સર્વ-
દાય કે પ્રધાનાચાર્ય શ્રી હીરવિજય સૂરિજી ઔર ઉનકે
શિષ્યોં કો અપને દરખાર મે આમન્ત્ર દ્વિયા। ઉનકે દર્શન
એવાં મુલાકાત સે હુમેં બહુત ખુશી હુઈ જણ વે વાપિસ
જાને લગે તથ યહ ઉંહોનોં કહા કિ આપકી રાષ્ટ્ર સે એક
ઔસા આમ હુકમ હોબના ચાહિયે કિ સિદ્ધાચલજી ગિર-
નારાણ તારંગાળ કેસરિયાનાથજી ઔર આયૂજ કે તીથે
જો ગુજરાત મે હૈ તથા રાજગૃહ કે પાંચ પહાડ ઔર

૬૧

सम्भेत शिखरलु उई पार्श्वनाथ पहाड़ ने अंगाल मे है. उन सभी पहाड़ों के नीचे सभी मन्दिरों की डेढ़ियों के पास तथा सभी लक्षित करने की जगहों मे जे जैन श्रेताम्भर धर्म की है उनकी आरों ओर डेढ़ ली आहमी किसी जनवर को न मारे. यह मांग करी अब ये महात्मा हर हेशों से आये है और उनकी मांग यथार्थ है.

यद्यपि मुसलमानी मज़हब से कुछ विरुद्ध मालूम होती है तो भी झुदा (परमेश्वर) को पिछाने वाले आहमियों का यह हस्तूर होनाता है कि डेढ़ किसी धर्म मे हखल न हो. इस कारण से हमारी सभज मे यह अरण हुरस्त मालूम ही तहकीकात करने पर भी मालूम हुआ कि ये सभी स्थान अहुत असे से जैन श्रेताम्भर धर्म वालों के ही है. अत्येव उनकी यह अरण मन्जूर की गई है कि सिद्धाचल गिरनार तारंगा केसरियालु और आधू के पहाड़ ने शुश्रात मे है तथा राज गुह के पांच पहाड़ और सम्भेत शिखर उई पार्श्वनाथ पहाड़ ने अंगाल मे है तथा और भी जैन श्रेताम्भर सम्प्रदाय के धर्म स्थान जे हमारे ताए के मुद्दों मे है वे सभी जैन श्रेताम्भर सम्प्रदाय के आचार्य श्री हीरविजयसूरि के स्वाधीन किये जाते है. किससे शान्तिपूर्वक उन पवित्र स्थान मे अपनी धर्मर लक्ष्य अच्छी तरह किया कुरें.

यद्यपि इस सम्बन्ध मे ये तीर्थस्थान आहि हीर-

६२

विजय सूरि डॉ हिंदे जाते हैं परन्तु वास्तव में ये सभा केन श्वेताम्बर धर्म वालों के ही हैं।

जब तक सूर्य से दिन और चांद से रात रोशन रहें तथा तक यह शारीरत इरमान केन श्वेताम्बर धर्म वालों में प्रकाशित रहे, तो ऐ भी मनुष्य इस इरमान में दण्डन न करे। इन पर्वतों की जगह नीचे ऊपर आस पास सभी यात्रा के स्थानों में और पूजा अकित करने की जगहों में तो ऐ किसी प्रकार की छल हिंसा न करे इस हुक्म पर गोर कर अमल करें। तो ऐ भी इससे उत्तरा वर्ताव न करे। तथा हृसरी नर्त सनंह न मांगे, किभा ता, उ भी, माहे उठी अहेष्ट मुता अिक रविउत अवल सन् उष जुखस्ती।

इरमान के साथ ही साथ अकबर ने प्राथना की कि हे गुड हेव ? आप त्यागी पुरुष हैं तथा विश्व के हित चिंतक हैं अतः आपको यहां से जाने के लिये भैं कुसे कहुं तथा ना भी कुसे हाँ अंतिम में अर्ज यही है कि सभय सभय पर मेरे योग्य सेवा कार्य इरमाने रहें और आप कैसे गुड हेव का भी इर्ज है कि मेरे कैसे अधम सेवक को न भूलें।

विनीत बादशाह के प्रिय वयन सुन धर्माशीर्वाद प्रदान करते हुए नव पद्धतिवित पौधे की रक्षा निभित उपाध्याय शान्तियन्द को रथ कर प्रजा सहित मुगल

६३

सआट को आश्रितासन हेते हुये शेष शिष्य सहित सुरिल
ગुजरात की तरक्कि रवाना हो गये.

ઇधर ઉપાધ્યાય શાન્તિચન્દ્રલુ જગદુ શુરૂહેવ કે વિરહ
સે ખિજી પ્રાણિઓં ડો અપને ઉપહેશામૃત ક્ષાર શાન્તવના
હેને લગે, ઔર શુરૂ સહૃદાય ઔજસ્વી લાઘણુ હેતે હુએ
જનતા કો રંજિત કરને લગે, તથા બાદશાહ સે સન્માનિત
આપ દરખાર મે ભી પ્રતિરોજ વિક્રિ ગોઢી કરને લગે.

એક વક્તા અકબર બાદશાહ ઔર ઉપાધ્યાય શાન્તિ-
ચન્દ્રલુ પરસ્પર વિનોદ કી આતો કર રહેથે । ઉસ વક્તા
અકબર ને કહા કી મહારાજ ? કુછ ચમત્કાર તો દિખલાયો
ઉત્તર મેં ઉપાધ્યાયલુ ને કહા કી ચમત્કાર હેખના ચાહુલે
હું ? અગર હેખને કી દર્શા હું તો મેરે સાથ આપ કે
બગીયે મેં ચલિયેં । ક્રિં કયા થા । તુરન્ત હી અકબર
ઔર ઉપાધ્યાયલુ બગીયે મેં ગયે । વહાં પર શાન્તિચ-
ન્દ્રલુ ને અકબર કા પિતા હૂમાયુ આદિ સાત દાદા પ્રદાદા
કા દર્શન અકબર કો કરવાયા । અકબર ઈસ્ટ પ્રકાર ઉપા.
ધ્યાયલુ કે ચમત્કાર કો હેખ કર બડા આશ્રમ્ય મેં પડ
ગયા । ઔર જેન ધર્મ કે પ્રતિ અટલાશ્રદ્ધા અકબર કે
હૃદય મે હો ગઈ । યહ સણ ઉપાધ્યાયલુ કી અતુકૃપા
કા ફ્રલ હું ।

કુછ દિન મે આપણી ધવલ કીતીં ચારેં ઔર ફેલતી
હુદ્ધ કો હેખકર રસ્પર્દાલુ દિગ્ભાર લટ્ટારક વાદી ભૂષણ ને
શાસ્ત્રમ્ય કરને કી ઉદ્ઘોષણા કર હી ઉપાધ્યાયલુ કે શાસ્ત્રમ્ય

૬૪

કરના બાયે હાથ ડા ખેલ થા કચોં કિ આપ એક હી આથ એક સો આડ અવધાન કરને સે અસાધારણું પ્રતિલા કો પાકર દિગ્બિજય કે જૈસા અદ્વિતીય વિક્રાન્ત બન ગયે થે. ઔર ભૂતપૂર્વ મે બાગડ કે ધરશિલ, નગરાધીશ તથા બેધપુરીય ભૂપતિ મહલહેવ કે લતીજ રાજ સહસ્રમણું કી અધ્યક્ષતા મે શુદ્ધિચન્દ્ર નામક દિગ્બિજયાર્થ ઢો એવં અનેક દિગ્ગજ વિક્રાન્તોં કો પરાજય પૂર્વક જ્ય પતાકા ઝેંછરાતે હુચો રાજપૂતાના કે અનેક રાજાઓં કે મનોરંજક બન ગયે થે. ક્રિય વે સમય આને પર સોસાહ અગ્રેસર હો ઉત્તર પક્ષાવલભી હોકર ઈડરગઢ કે મહારાજ શ્રી નારાયણ કી સલા મે વાદી ભૂખણુ કે સાથ ઉપાધ્યાય શાન્તિચન્દ્રળ વાહવિવાહ પૂર્વક અન્ત મે ઉસે પરાજય કર આપને વિજય માલા પહુન લી. ઈસ પ્રકાર ઉપાધ્યાયળ કી અન્નેય વિક્રતા કો હેઠ કર અકબર કા મુર્જિયા હુચા દિલ હરા લરા હોગયા. ઔર સૌંદર્ય ઔર ઔદ્ઘાર્ય ગુણોં સે પ્રશાસાત્મક ઉપાધ્યાય દચિત કૃપારસ કોષ કો આપકે મુખાર બિન્દ સે ૧૨૮ પદો કો સુન કર અકબર મુક્તત કંઠ સે પ્રશાસા કરતા હુચા વિશેષ દ્વારા જીવન બનાતા હુચા આપમે અનુરક્ત હોગયા. જિસસે શાન્તિચન્દ્રળ કે કથનાનુસાર જજિયા કર મૃતદ્રોવ્ય બ્રહ્મણ કરના કર્તાઈ બનં કર દિયા ઔર અકબર ગાય લૈસ હૈલ બકરા આદિ પશુઓં કો કસાઈ કી છુરી સે ખચાને કે લિયે સાલ લર મે છ મહીને તક સલી જીવોં કો અલય હાન હેકર

६५

अहिंसा का परम पुण्यार्थी बन गया। अक्षयर के भारत में
छ मास अहिंसा पवाने का दिन निम्न प्रकार पाया
जाता है।

पर्युषणुपर्व के १२ दिन सर्व लविवार के दिन,
सोहियान एवं धृति के दिन संकाति की सर्वतीथियें अक्षयर
के जन्म का पूरा मास भिहिर और नवरोजा के
दिन सआट के तीनों पुत्रों का जन्म मास और दशम
(माहूरम) के दिन। अंग्रेज इतिहास कार केन्याज हिस्ट्री
ओह इंडिया डोल्कम ४ में लिखते हैं कि अक्षयर धर्म
भील की जगह पर पशुओं को धक्का करवा कर एक ही
साथ चारों तरफ से घेरा डाल कर १५ हजार पशुओं को
पांच दिन में फूर रीति से मारताथा। आठ में लिखा
है कि जब जैन अहिंसा धर्मका सिद्धान्त अक्षयरने
स्वीकार किया तब से पूर्वकीकी हुई हिंसा का अन्तःकरण
में हुआ रूप पश्चात्ताप करता था। पश्चात्ताप उसको
कहते हैं कि किये हुए पापों की मांझी मांगना एवं उन
पाप की नीन्हा करना कि मैने बहुत धूरा किया। और
लविष्य में इस प्रकार कठोर कर्म नहीं करूँगा। इस प्रकार
मन में आवेदना करना पश्चात्ताप है।

3. स्मृथ लिखते हैं कि जैन धर्माचार्यों ने निःसं-
देह वर्षोंतक अक्षयर को उपहेश हिया। बादशाह फूर
उपहेश का गहरा प्रलाप पड़ा। जैन साधुओं ने बादशाह

६६

से ईतना जैन सिद्धान्त का पालन करवाया कि लोग सभी
गये कि अकुण्ड अब जैनी हो गया।

डा. स्विमथ महाशय अकुण्डः नामक पुस्तक पृष्ठ
१६६ में लिखते हैं कि सन् १५६२ के बाद उसकी
जै दृतियां हुई हैं- उनका भूल कारण उसका स्वीकार किया
हुआ जैन धर्म ही था। अभुल इजलने अन्त में जै
विद्वानों की सूची ही है। उसमें तीन महान् समर्थ
विद्वानों के नाम आये हैं। कम्से हीरविजय सूचि, विजय
सेनसूचि और लातुचन्द्र उपाध्याय वे तीनों जैन गुरु या
जैन धर्माचार्य थे।

आधुने अकुण्डी में एक बात और लिखते हैं कि
अकुण्ड का हुक्म था कि भेरे राज्य में कसाई, भर्तीमार,
तथा मांस विकेताओं को अलग भोखला में रहना
चाहिये। और किसी के साथ लेल संलेल न करें। अगर
इस हुक्म का छमेशा के लिये नहीं पालेगे तो वे सज्ज
सज्ज के पाव अनेगें।

आधुने अकुण्डी में अभुल इजल लिखते हैं कि
“अकुण्ड उठता था कि भेरे लिये ईतनी सुख की बात
होती यहि भेरा शरीर ईतना अड़ा होता कि मांसाहारी
लोग उवल भेरे शरीर ही को आकर संतुष्ट होते और
इसरे लोंगों का अक्षण न करते। अथवा भेरे शरीर का
एक अंश काट कर मांसाहारियों को भिला होने के बाद
यहि वह अंश वापिस प्राप्त होता तो ली में बहुत

૬૭

પ્રસન્ન હોતા। મૈં અપને શરીર દ્વારા માંસાહુદિયોં કે તૃપ્તિ કર સકતા”।

ધ્યન્ય હૈ પ્રતાપી જગદ્દુ ગુરુ દેવ કો આપકે પ્રલાવ સે એક હિંસક મુગલ સમાટ અકબર ને અહિંસા પરમો ધર્મ કા પાલન કર ભારત મે દ્વારા લાગીરથી હો અહાદી.

બાદશાહ કે યે સથ કાર્ય કર હેને પર જગદ્દુ ગુરુ દેવ કો ખુશ અખર હેને એવં દર્શન કરને કે લિયે ઉપાધ્યાય શાન્તિચંદ્રલુ ને અકબર સે અપને ગુરુલુ કે ચરણોં મે જને કી ઈજાજત માંગને પર અકબર કે આશ્રમ સે અપના સહાધ્યાયી પંડિત લાલુચંદ્રલુ હો દરખાર મે જોડા કર આપ ગુજરાત કી તરફ રવાન હોકર માર્ગ મે ઉપરેશામૃત કી વર્ષા કરતે હુચે ચથા સમય પટન (પાટણ) આ પહુંચે. તત્ત્વસ્થ જગદ્દુ ગુરુ દેવ કો સવિધિ વન્દના કે પશ્ચાતુ કિયે હુચે અકબર કે કાર્યો હો સુનાતે હુચે આપત ઇરમાન પત્ર કો ચરણ કમલ મે લેટ કર ગુરુ દર્શન સે પ્રકુલ્પિત હુચે. સૂરિલુ ઉપાધ્યાયલુ કે દ્વારા કિયે હુચે કાર્યો પર પ્રસન્ન હોકર મન હી મન પ્રશંસા કરતે હુચે આમ જનતા હો ખુશ અખરી ખાતે સુનાને લગે.

ઈધર શ્રી વિજય સેન સૂરિલુ લેવરા કી તરહ વિચરણ કરતે હુચે હો ચાતુર્માસ કે બાદ સં ૦ ૧૬૪૨ કા ચાતુર્માસ કરને કે લિયે પતન નગર મે આ પહુંચે. કુછ સમય કે બાદ અરતર ગાંધીય જૈનાચાર્ય સે ધર્મ સાગરલુ કે બનાયે હુચે “પ્રચન પરીક્ષા” નામકે અન્ય મે આપને

शास्त्रार्थ प्रारंभ किया, यह वाद विवाह लगातार और हृषीकेश राज तक राज सभा में होता रहा। अन्त में सूरिशेखर विजय सेन सूरिलु की जय हुई और भरतर गच्छ के आश्चर्य की अहंकारना अन्तम हो गई।

भरतर गच्छार्थी की अप्रतिष्ठा होने पर आपके अक्षतगणु दुष्ट होकर अमहावाहस्थ कल्याणराज नामक साधु को बहुकाया कि आप राजकीय सत्ता को लेकर विजय सेन सूरिलु के शिष्य के साथ शास्त्रार्थ कर पराजय करके अपना गौरव बढ़ायें। इस पर कल्याणराज नामक साधु ने आनंदाना नामक राजेन्द्र की सभा में सामंतादिक राज कर्मचारी और नगर के प्रतिष्ठित व्यक्तियों के सामने सूरिलु के शिष्य के साथ विवाह उठाया। परिणाम में कल्याणराज को पराजय कर सूरिलु के शिष्य ने अपने शुरुलु की महता को बढ़ाते हुए सकल जन को वश में कर लिया और औष्ट्रिक भूत के अनुयायियों का भी संशयस्पृश अधिकार को ह्रस्व कर दिया, आपकी जय ध्वनि से नगर शुंज उठा।

यह विजय ध्वनि विजयसेन सूरिलु के क्षम्य गोचर होते ही प्रेरणा करने लगी कि आप अमहायाद पधारे। तदनंतर सूरिलु पतन नगर से विहारी होकर अहंपकाल में ही अमहायाद पधार गये। आपके सामैया (स्वागत) से राज की तरह से हाथी बोड नगारा निशान आदि सामर्थीकारा शहर में अच्छी अच्छी सजावट की गई।

નગર કી નારિયાં ને સ્વર્ણ કી ચોકી પર હીરા માધુક મેતિયોં કે સાથિયે (સ્વસ્તિતક) ઔર નન્દાવર્તી બના કરેલે ધવલ મંગલ ગીત ગાતી હુદ્ધ શ્રદ્ધા પૂર્વક સૂરીળ કી પૂજા કી. આવક ગણું ને જાન પૂજા પ્રસાવના સ્વામી વાત્સલ્ય આહિ મેં લાગ લિયા.

જખ સૂરિલ ને ધર્મ દેશના આરમ્ભ કી તથ કૃતું હુલતા સે ખાનખાના રાજ રાજ કર્મચારી કેન ઔર બેનેતર ધર્મવિલંઘી અનેક સંજગન ઉપસ્થિત હુએ સૂરિલ કા માધ્યર્થ ઉપરેશ જનતા કો લોહ ચૂંબક કી તરફ અપની ઔર આકર્ષણ કરેને લગા.

ચાતુર્માસ નિકટ આજને પર રાજ પ્રભા કે અત્યાર અહ વશ સૂરિલ ચૌમાસા આડમણ પૂર્વક અમદાબાદ મેં કર કે આસ પાસ કે શહરોં મેં લંબ અવેં કો પ્રતિઓધ દેને લગે.

ઇધિર જગહ શુળ્ક વિજય હીરસૂરિલ મહારાજ આગરા ઇતહસ અભિરામભાદ ઔર આગરા ઈસ પ્રકાર ચૂર ચાતુર્માસ કરેને કે બાદ મરુધર દેશ કો પવિત્ર કરતે હુએ ઇલોધી તીર્થ કી યાત્રા કરેં ચાતુર્માસ કે લિયે નાગપુર (નાગૌર) પધારે. યહ ચાતુર્માસ પૂર્ણ હો જાને પર શુજાત કી તરફ પ્રયાણ કિયા। તથ માર્ગ મેં અનેક થાવો મેં ધૂમતે હુએ મેહતા પધારને પર પૂર્વ પરિચિત કે હેતુ ખાન આના નામક સુષેષારને લંબ સ્વાગત પૂર્વક નગર પ્રવેશ કરવાયા। કુશલ મંગલ કી ખાતચીત કરતે

१००

हुए खानधानाने प्रश्न किया कि महाराज ? ईश्वर रूपी है या अरुपी ? सूरिलुने कहा कि अरुपी है। उसने कहा कि जब ईश्वर अरुपी है तब तो ईश्वर की भूति स्थापन करने की क्या जरूरत है ?

इस पर सूरिलु ने बड़ी गंभीर वाणी से कहा कि राजन् ! भूति जो है वह ईश्वर का स्मरण्यु कराती है। जिसकी भूति होती है उस व्यक्ति को वह याद दिलाती है। अगर डोर्ड मनुष्य कहता है कि मैं भूति को नहीं मानता हूँ। वह अवल इन्हें का पागल है। क्योंकि संसार में ध्याता ध्यान और ध्येय इन त्रिपुरी के बिना डोर्ड ली मनुष्य सिद्धी पढ़ नहीं पा सकता। संसार में किसी भी पदार्थ का आलम्बन लिये बिना ध्यान नहीं हो सकता। हुनिया में अरुपी पदार्थ का शान भी भूति से ही होता है। जैसे कि आप मुझे साधु और हिन्दु कहते हैं। और मैं आप को मुस्लीम कहता हूँ। यह सब इन वेष रूप भूति के आधार पर ही निर्भर है। इसलिये भूति मानना हरेक व्यक्ति बरम कर्तव्य एवं आवश्यक है। डोर्ड भूति को नहीं मानता है परन्तु प्रकारान्तर से तो मानना ही पड़ता है।

सूरिलु के वचन शान्त चित्त से श्रवण कर खानधाना घोला कि आप के कहने से यह सिद्ध हुआ कि भूति मानना चाहिये। अच्छा मान देते हैं। परन्तु जिसकी पूजा क्यों करनी चाहिये ? अपने को क्या लाल ?

१०९

गुरुहेव ने मधूर ध्वनि से कहा कि महानुलाव ? जो मनुष्य मूर्ति की पूजा करते ह, वे मूर्ति की पूजा नहीं करते हुए मूर्ति कारा ईश्वर की पूजा करते हैं । क्योंकि पूजा के समय पूजक की लावना यही रहती है कि मैं साक्षात् ईश्वर की पूजा कर रहा हूँ । न कि पत्थर की । जैसे उदाहरण लीजिये कि आप लोग मरणद में पश्चिम हिंशा तरक्क निवाज पढ़ते हैं, तो क्या पश्चिम हिंशा के ही खुदा मानते हैं ? नहीं । कहना होगा कि पश्चिम हिंशा के आश्रित्य खुदा को प्रसन्न करते हैं । मूर्ति पत्थर की अनवा कर मन्त्राहि से प्रतिष्ठा करने का तात्पर्य यही है कि अलियेक कारा मूर्ति में ईश्वरत्व का आरोप किया जाता है ।

मूर्ति पूजा करने से लाल यह होता है कि अपनी आत्मा निर्भव अनती है । क्योंकि सामने जैसा प्रतिभिम्ब होता है वैसा ही लाव पैदा होता है । जैसे कि वेश्या के भक्तान पर जने से भूरे विचार पैदा हो जाते हैं । और धर्म स्थान में जने पर सुन्दर विचार उत्पन्न हो जाते हैं । इसी प्रकार मूर्ति पूजा से आत्मा का परिणाम शुद्ध हो जाता है । और भेद होना अनिवार्य है । ईसलिये निर्भव होना ही लाल का सुभय कारण है ।

इस प्रकार युक्तियुक्त गुरुहेव का चारुर्य वचन सुन कर खानधाना बड़ा प्रसन्न होकर मुझे कछुठ से प्रशंसा करने लगा । और ऐसा कि महाराज ? अकेले खाद्याङ्क

१०२

ने जो आपको मान सत्कार पूर्वक जगद् शुरु पह ग्रहान किया वास्तिवक उन शुणों से आप यथार्थ विलूप्ति है। महाराज ? मेरे पर हया करके कुछ चीजें स्वीकार कीजिये। सूरिल चीजें का धन्कार करते हुए साधु ज्ञवन का पूरा परिचय हेकर अपने उपाश्रय में पधार गये। और यहां से आगे चलते हुए सिरोही आ पहुंचे। इतने मे शुरु हेव के पत्रानुसार विहार कम को जानते हुए विजयसेन सूरिल सी उत्कृष्टावश कुछ पूर्व ही शुभ्रत से रवाना हो। कर सिरोही आ पहुंचे। होनो शुरु शिष्यों के मिलाप से जो आनन्द श्रोत बहा वह अनिवार्यनीय है। कुछ दिन के बाद विजय सेन सूरिल शुरु आज्ञा पाकर स्तम्भ-तीर्थ की यात्रा करने के लिये रवाना हो गये। जगद् शुरु हेव ली सिरोही से विहार करके भग्नसुदामाद पहुंचे। यहां पर हिन्दुकुल सूर्य जगत् विख्यात भग्नसुदामाणा प्रताप सिंहल ने जगद् शुरुहेव श्री मदिज्य हीर सूरिल को भेवाड प्रदेश मे पधारने के लिये आर्थिना पत्र लेन। उसकी नक्त आनुपूर्वी ईस प्रकार है।

पत्र भेवाडी लापामे—

स्वस्ति श्री भग्नसुदामाणा भाशुल स्थाने सरथ ओपमा लायक श्री पूज्य लट्टारक ल महाराज श्री हीर-वजे सूरजि चरण्य कुमला अये स्वस्ति श्रो वजे कटक चांवडारा डेरा सुथाने महाराजाधिराज श्री राणा प्रताप-सिंहल ली परे लागेण्ठा खंचसी अठारा समाचार भला

૧૦૨

હું આપરા સદા બદા છાઈજે. આપ બડા હૈ પૂજણીક હૈ. સદા કૃપા રાખે વીસુ સસહ (શ્રેષ્ઠ) રખાવેગા. અપરંચાપરો પત્ર અણું દના મણે આયો નહિં સો કૃપા કર લખાવેગા શ્રી બડા હજૂરરી વગત પદ્ધારવો હુચો જિમે અઠા સુંપાછા પદ્ધારતા પાતસાં અક્ષ્યાળ ને જેના ભાફ મણે થાંન હૈ પ્રતિ બાધ દીઢો જીરો ચમત્કાર મોટો બતાયો જીવ હિંસા છરકલી (ચિદિયા) તથા પંથેર (પક્ષી) વેતી સો માઝ કરાઈ જીરો મોટો ઉપકાર દીઢો સો શ્રી જૈન રા પ્રમે આપ અસાહીજ અહોતકારી અખાર કીસે હેખતા આપ જયું હેર વે નહીં આવી પૂર બહી દસ સ્થાન અત્ર વેહ શુજરાત સુદા ચાડ દસા મણે ધરમરો બડો અહોતકર હેખાણો જી પછે આપરો પદ્ધારણોં હુવો નહીં સો કારણું કહી વેગા પદ્ધારસી આગે સુ પડ્યા પ્રવાના કારણું રા દસ્તુર માઝું આપ્રે હૈ જ માઝું તોંલમુરનાં સામો આવો સાખત રેગા. શ્રી બડા હજૂરરી વખત આપ્રા શુદ્ધ રે સામો આવારી કસર પડી સુણી સો કામ કારણું લેખે ભૂલ વહી વેગા. જીરો અહેસો નહીં જાણોગા આગે સુ શ્રી હેમા આચારણ ને શ્રી રાજમણે માન્યા હૈ જીરો પટો કર હેખાણો જિ માઝું આપરા પગરા ભટારક ગાદીપ્ર આવેગા તો પટા માઝું માન્યા જાવેગા. હેમાચારણ પેલા શ્રી વડગચ્છ રા ભટારકણ ને બડા કારણું સુ શ્રી રાજ મણે માન્યા જિ માઝું આપને આપરા પગરા ગાદી પ્ર પાઠહવી તપાગચ્છરાને માન્યા જાવેગા રી સુવાયે દેસમણે આપરા

१०४

ગચ્છ રે હેવરો તથા ઉપાસરો વેગા જીરો મુરળિં શ્રી રાજ સુ. વા ફૂલ ગચ્છરા ભટારક આવેગા સો રાખેગા શ્રી સમરણુ ધ્યાન હેવ યાત્રા જઈ આઠ કરાવ સી ભૂલરી નહીં ને વેગા પદારસી, અવાનગી પંચાલી જોરો ।

સ. ૧૬૪૫ રા વર્ષે આસોજ સુહ પ શુરૂવાર

ઇધર સ્તમલતીર્થ વિજયસેન સૂરિલુ કે પહુંચને પર ભાવી પ્રતિષ્ઠા કા કાર્ય કુમ શુરૂ હો ગયા. ઈસ કાર્ય કુમ કે સંચાલક વજિયા રાજ્ઞિયા નામક શાવક થે સં. ૧૬૪૫ જ્યેઠ શુક્રવાર દ્વારા દ્વારા કુરૂતી મે વિજયસેન સૂરિલુ કે કર કમલોં દ્વારા શ્રી ચિંતામણિ પાર્વનાથ તથા મહાવીર સ્વામી કી પ્રતિષ્ઠા કી ગાંડ ઔર સપ્તકુણિધર પ્રાર્વનાથ કી પ્રતિમા ૪૧ દ્વારા કી મુખ્ય ગઢ્હી પર સ્થાપન કી અલોકીક સૌન્દર્યશાલી પ્રતિમા કા ચમતકાર ચારોં ઓર ફેલને લગા.

પ્રતિષ્ઠા કે ખાંડ વજિયા રાજ્ઞિયા નામક હોનો લાધચીં ને એક મનિદર ઓર બનવા કર આપહી કે કર કમલોં દ્વારા પ્રતિષ્ઠા કરવાઈ. ઈસ મનિદર મે બારહ સ્તમલ છ દ્વાર સાત હેવ કુલિકા (હેવસ્થિયા) ઔર ૨૫ સોાપાન (સીઢી) હૈ. જિસમે આહીશ્વર પાર્વનાથ મહાવીર આહિ ૨૫ જિનભિરભ યથા ચોખ્ય સ્થાન પર સ્થાપિત કિયે. ।

ઉપાધ્યાય શાન્તિચન્દ્રલુ કે સ્થાનપર લાનુચંદ્ર ઔર સિદ્ધિચંદ્ર હોનો શુરૂ શિખ્ય અકબર કે દરખાર કો સુશોલિત

१०५

करने लगे। (भानुचंद्रल भाष्य लक्ष्म कृत कादम्बरी के प्रसिद्ध टीकाकार हैं।) आपने अक्खर को सूर्य सहस्रनाम पढ़ा कर तेजस्वी बना हिंदि सिद्धिचंद्र सदृश शतावधानी थे और इरसी के अच्छे जनकार थे। अतेव ईनके उपर भादशाह का विशेष प्रेम होने के कारण “भुशइ-हेम” की पहवी अक्खर ने हैरी। शुद्ध शिष्यों कारा जगद् शुद्ध हीर विजय सूरिल के उत्तराधिकारी आचार्य कुल किरीट विजय सेन सूरिल की विद्वता ओर अलौकिक प्रतिभा सुन कर अक्खर प्रसन्न चित होकर भुवाने के लिये आमन्त्रण पत्र लेना जिसमें लिखा था कि आपके प्रिय शिष्य भानुचंद्रल के कथनानुसार निश्चय लिया है कि आज से शतुर्जय तीर्थ का कर मेरे राज्य में कोई नहीं लेगा, अब आपका पवित्र शतुर्जय तीर्थ कर मेरान पूर्वक आपको सहर्ष हो रहा हूँ। साथ ही साथ निवेदन है कि आपके पट्टालंकार असाधारण असावशाली विजय सेन सूरिल को लाहोर लेजने की कृपा करें।

भग्नसुद्धाराह नगर में भड़ाराण्या प्रताप का एवं अक्खर भादशाह का विनती पत्र पाकर जगद् शुद्ध हेव यहां से रवाना होकर राधनपुर पहुँचे। ईतने में स्तम्भ तीर्थ की प्रतिष्ठा करके विजय सेन सूरिल आपके अरण्यों में आ पहुँचे। आप शुद्ध सेवा में रहते हुए शुरू मुखार विन्द से होने आमन्त्रण पत्र के वृतान्त से वाकीहु छोकर आमेहित होने लगे। कुछ दिन ते बाह

૧૦૬

જગદુ શુરૂ ને કહા કિ હે સેન સૂરિ? અકબર ને તુમહારે
લિયે આમનત્રણુ લેણ હૈ ઔર તુમ ડો જાને સે લાલ હી
છાગા ઈસંલિયે જઈ જાના ચાહુયે. જગદુ શુરૂ દેવ કી
આજા પાકર વિજયસેન સૂરિલુ સંં ૧૬૪૬ માર્ગ શીર્ષ
શુક્લા તૃતીયા કે દિન શુભ મુહૂર્ત મે રાધનપુર સે લાહોર
કી તરફ રવાના હુએ. જહાં કિ અકબર બાદશાહ ઈન્તજારી
મે જૈદા થા.

વિજયસેન સૂરિલુ વિહાર કરતે હુએ પાટણ આદિ
નગર વાસિયોં ડો પ્રતિભોધ હેતે હુએ દેલવાડા આખુ
તીર્થ કી યાત્રા કરકે સિરોહી પથારે. સિરોહી કા અધિપતિ
સુરત્રણુ એવં નાગરિક લોગો ને મિલ કર સૂરિલુ કા
શાનદાર સ્વાગત કિયા આપકે ઉપરેશ સે રાજ ને મધ્ય
માંસ કા પરિત્યાગ કિયા. યહાં સે સૂરિલુ ચલ કર નારદપુરી
આએ. જહાં કિ આપકી જન્મભૂમિ થી ચાહે જૈસી અવસ્થા
મેં કયોં ન હો મગર જન્મભૂમિ પર અપના સ્વાલાવિક
પ્રેમ ઉચ્છલને લગ જાતા હૈ કહા હૈ કિ “જનની જન્મ
ભૂમિશ્ક સ્વર્ગદાયિ ગરીયસી” યહુ લોકોકિત ભી વાસ્તવિક
ચુરિતાર્થ હૈ સૂરિલુ ભી જન્મભૂમિ ડો હેખ કર આનન્દ-
મય હો ગયે વહાં સે પ્રયાણુ કર મેડતા નગર કે રાજ કા
સતકાર સ્વીકાર કર વૈરાટનગર આદિ શહરોં મે હોતે હુએ
લાહોર સે છ કોશ કી ફરી પર લુધિયાના નામક શહર મે
આ પહુંચે. યહ સમાચાર લાહોર કે કોને કોને મે છ ગયા. કી સૂરીલુ પથાર ગયે

१०७

तदनन्तर अकभर बादशाह के मन्त्रियों में से एक अमूल्यकृजल का लाई क्षयल (जो दश हजार सेना का अधिपति था) और अत्येक नागरिक जन गुरु दर्शन के लिये लुधियाना आये. आगान्तुक लक्तों के साथ सूरिलु पंचकोशी वन में पधारे यहां कि अकभर का महल था. पंचकोशी वन में आये हुए सूरिलु को समझकर आतुर्यन्दरु संशिष्य शुद्धयरण्डों में आये. यहां से संशिष्य विजयसेन सूरिलु लाहोर शहर के पास एक गांज नामक शाखापुर में आ पहुंचे.

इधर बादशाह के हुकम से शहर की सज्जवट होने लगी और व्याख्यान का पंडाल तैयार होने लगा. सूरिलु के आवास स्थान की सज्जवट अद्भुत चिंग विचिंग भय होने लगी.

सूरिलु को होने के लिये अकभर चतुरंगी सेना शाही बाजे एवं दाज भान्य घडे घडे अक्सर सहित मन्त्रियों के साथ लकड़ धूम धाम पूर्वक लाहोर नगर में ग्रेश कराते हुए पंडाल में विजय सेन सूरिलु के मुखार विन्द से भांगलिक प्रवचन सुनने लगे. कुछ समय बाद अकभर के आशह से सूरिलु ने लातुर्यन्द्र को उपाध्याय पद से विलुप्ति किया. पहली के उपलक्ष में श्री संघ ने बड़ा भारी उत्सव किया. जिसमें शेष अमूल्यकृजल ने ली ६०० रुपये हिये और गरीब गुरुओं को अपने वक्त

१०८

हेकर संतुष्ट किये.

विजयसेनसूरिल अक्षर के दरभार में कितने ही पंडितों के। परास्त करते हुए आपनी धबल कीर्ति का चारों ओर फैलाने लगे आपही के शिष्य नन्ही विजय ने आपके समक्ष राज सला में उत्कृष्ट आठ अवधान किये। उस सला में भारवाड के राज महल हेव के पुत्र उद्यसिंह कुछ के लूपति मानसिंह खानखाना शेख अमूलकुञ्जल आजमखान बालौर के गजनी खान आदि थहुत से अडे अडे राज महाराज और अद्वितीय लोग उपस्थित थे नन्ही विजय का अद्वितीय कला कौशल हेख कर चकित होता हुआ आदशाह ने सला में विजयसेन सूरिल के समक्ष नन्ही विजय को “भुशद-हेम” की उपाधि से विलूप्ति किया।

एक समय विजय सेन सूरिल से अक्षर ने पूछा कि जगद् शुद्ध हेव का स्वास्थ्य कैसा है ? किस हेश और कौन नगर में बिराजमान है ? जनतागण शुद्धहेव की लकित कैसे करते है ? ओर भेर लिये क्या इरमाया है ?

इन प्रश्नों का उत्तर विजयसेन सूरिल हेने लगे हेराजेन्द्र ? आपके साम्राज्य में रहते हुए जगद् शुद्धहेव सब तरह से सुख शांति भयसमय व्यतीत कर रहे हैं। ऐसं सम्प्रति शारीरिक तकलीफ नहीं है और शान ध्यान तथा ज्ञान और समाधि में लयलीला होकर ईश्वर

१०६

की उपासना कर के प्रभु को प्रसन्न कर रहे हैं. गुजरात के अन्तर्गत साधनपुर नगर में बिराजमान है जनतागण्य आपकी अडित में रह कर अमूल्य लाल उठा रहे हैं. आपके द्विये सर्व प्रथम धर्मलालात्मक आशीर्वाद हेकर इरमाया है कि सभ प्राणियों को अपने आत्म तुच्छ समझते रहें एवं धर्म कार्य कारा अपने अकन्टक राज्य को द्वितीया चंद्र के जैसा बढ़ाते रहें. अपनी प्रब्ल को प्रब्ल संतान ही समझते रहें.

सूरिल का भधूरता,-सरलता, चतुरता और वाङ्प-
दुता को हेथ सुन कर हंसता हुआ अङ्गभर ने सभा
को हर्षित करही,

विजयसेन सूरि आहि संशिष्य हीरसूरिल के चरणों
में अनुरक्त अङ्गभर को हेथ जैनेतर धर्मविद्यापी सभ
दोग कहने लगे कि अङ्गभर जैनी होगया अङ्गभर से
सम्मानित सूरिल को निरीक्षण कर आक्षण्यों के हृदय में
भहुत कोध उपला. द्विर सूरिल के ग्रन्ति अश्रद्धा पैदा कराने
हे द्विये अङ्गभर को अक्षण्योंने कहा है राजराजेश्वर? जैनी।
दोग जगन्नियन्ता निर्विकार अक्षा विष्णु भर्हेश-ईश्वर
को नहीं मानते हैं और सूष्टि के कर्ता ईश्वर को नहीं
मानते हैं, ऐसे अनीश्वर वाही के मतानुसार अदना आप
जैसे सआटों को श्रेयस्कर नहीं है अत्येव हम दोगों की
अर्ज है कि आप उनके पंजे में न पड़ कर पहले
के जैसा ही वर्तव करते रहें.

११०

आश्वाणों के वचन सुनते ही डोपाजिन से जलते हुए भादशाह ने राज सभा में होधावेश के। छिपा कुर सूरिल से कहा कि लोग कहते हैं कि कौनी लोग ईश्वर को नहीं मानते हैं तो उनके क्यिए कान्द आदि सभ व्यर्थ ही हैं कि सलिये आप तात्त्विक बातें जाता कर हृष्टय स्थध्वानत को छोर कर हीजिये। वरना अन्योन्याश्रय से भेरा कल्याण होना असम्भव है।

विजय सेन सूरिल आश्वाण हेवता ही ईलाई हुई भाया। को मन ही मन सभज कर उतर हेने लगे। हे शाहंशाह ! जो अठारह हृष्टयों से रहित है जिसमें शांत रस है जो तीनों काल का प्रकाशक है जिस प्रकाशक के सामने सूर्य भी झीका पड़ जाता है और जन्म मरणादि से रहित है। जिसमें विषयों का सर्वथा अलाव है इस प्रकार के चिह्नात्मा अचिन्त्य स्वरूप परमात्मा (ईश्वर) है। ऐसे परमेश्वर को हम लोग मन वचन काया से साहर मानते हैं तो अनीश्वर वाही हम लोग कैसे हुए आप स्वयं शोच सकते हैं। क्या उसने हुतुमान् नाटक का काव्य यह नहीं पढ़ा है ?

यं शैवा समुपासते शिव ईति अक्षेति वेदान्तिनोऽ
ओऽक्षा युद्ध ईति प्रभाषुः पटवः कर्मेति भिभांसकः
अर्हन्निन्त्यथ जैनशासनरताः कर्तौति नैयायिकाः
सोयं वो विद्धातु वाञ्छित इत्थं गैतेक्यं नाथा हृषिः १

१११

परमेश्वर के शैव लोग शिव शण्ड से, वैदान्ती
भूषा शण्ड से, और भुषा शण्ड से, भिमांसक उर्म शण्ड
से, जैनी अर्हन् शण्ड से, नैयायिक कर्ता शण्ड से ईश्वर
के पुकारते हैं सचमुच कहा जाय तो उपर के श्लोक से
३५४ प्रतीत होता है कि जैन लोग ईश्वर के मानते
ही हैं इस प्रकार सूरिण के वचन पर ६६ विश्वस्त
होकर अकबर ने लड़काने वाले आक्षयों के इटकार हिया।

एक दिन राजा के अपने महल में प्रसन्न चित
से ऐठा हुआ हेख कर समझ विजय सेन सूरिण ने
कहा कि हे नर हेव ? आपने जैसे दाखी और जजिया
कर छोड हिया है ऐसे मृतमनुष्य के द्रव्य के ली छोड
हीजिये जिसमें आप अधिक प्रशंसा के पाव घनेगों।
लक्ष्मी रवलाविक चांचल है द्विर असन्मार्ग से आई हुई
लक्ष्मी कितने दिन हड्डर सकती है अतः अवश्य ही छोड
हीजिये।

शुल चिंतक विजय सेन सूरिण के हित वचन सुन
कर अकबर ने मृत मनुष्य के द्रव्य के सर्वहा के लिये
तिलान्नली हेठी बाह आदशाह के आश्रु से लालें
चातुर्मास करते हुये उद्द वाहियों के साथ बाह विवाह
कर जयपताका के लहराने लगे। उस वक्त आदशाह ने
भुश होकर के विजय सेन सूरि के “सवाई” पहली
प्रदान की।

११२

इस पदवी के समय अकबर की सला में १४० विद्वान् थे। जब सवाई पदवी ही गई। तब अकबर ने ५ विद्वानों की मुख्य कमेटी बनाई। जिसमें प्रथम हीर विजय सूरिल और पांचवें विजय सेन सूरिल थे।

जब की सवाई विजय सेन सूरिल लाहौर के लिये प्राणियों को प्रतिषेध हेते हुए सत्य और अहिंसा के पूजारी बनाते थे। तब जगह गुरुदेव पाटण औमासा के बाद सकल हुरित को ध्वंस करने वाली, भन वांछित इल को हेने वाली, श्री सिद्धाचल (शत्रुंजय) तीर्थ की यात्रा करने के लिये विष्णुर कर पतन राधनपुर पालनपुर अमदावाद छाकर के अंतर्मात्र पधारे। मेघल पारेख के आश्रम से नव निर्मित मन्दिर की प्रतिष्ठा शानदार उत्सव के साथ जगह गुरु के कुरु कमलों क्षारा की गई। यहां पर एक मणि अज्ञ एक ही टाइम में आने वाला अडा उष्टु शरीर वाला सुलतान हृषीभव नामक एक जेल रहता था। वह अडा कामी एवं पूरा लोखी था। किसी कारण से सूरिल का अपभान करके नगर बहार निकाल हिया। सारी जैन समाज में हाहाकार भव्य गया। सूरिल के भन में तो कुछ भी विचार पाहुर्वाप नहीं हुआ। परन्तु लाली में साधुओं को तकलीफ न हो। इन के लिये प्रतीकार करना जरूरी समझ कर धनविजय नामक शिष्य को अकबर के पास लेला। वहां जाकर के उपाध्याय शान्तिचन्द्रल क्षारा अकबर को सभ तुष्ट धरना कह सुनाई। सूनते ही अकबर की झङ्कटी

११३

यह गाई और कोधावेश में आते ही हुक्म लिख हिया
कि हीरविजय सूरिलु की भूराई (अपमान) करने वाले
को मार हिया जाय । इस प्रकार का झरमान लिख कर धन
विजय के साथ अपने कर्मचारीयों को लेज हिये । धन
विजय शुरू सेवा में पहुँचते ही सभ झरमान की आते
निवेदन करते हुए कर्मचारीयों को सामने उपस्थित कर
दिये ।

इस प्रकारका झरमान लेकर कर्मचारी अकबर की
आज्ञा से सूरिलु के पास पहुँच गये हैं । यह आत
हथीधल को मालूम हुआ । अनर्थ हुआ कि भैरे लिये
अकबर ने प्राण्यान्त आज्ञा देती है अब क्या करें ? किधर
जाए ? किं उर्त्तर्य भूंड होकर सूरिलु के चरणों में ही
जना उचित समझा । चूंकि अकबर के प्राण्यान्त हुक्म
को वापिस लोटा देने की शक्ति सूरिलु ही में है । ये
चाहेगें तो मुझे अबा देंगे । ऐसा अंतःकरण में भूम
शोच कर उपायान्तरन भिलने के हेतु सूरिलु के चरणों
में आ पड़ा । और कहने लगा कि महानाज ? मैं ने
आपका अपमान कर अहुत छी भूरा किया । भैरे अपराध
को क्षमा कर आप हाथी घोड़ा अतुरंगी सेना आदि चीजें
को स्वीकार कर मुझे कृतार्थ करें । क्योंकि आप परोपकासी
घेवं हयागु हैं । सभ जुवों के बाता हैं । अतः भैरे
घेक अपराध को क्षमा कर अकबर के हुक्म को लौटा
देना आपके ही उपर आधार है । मैं आज से झुंडा

११४

की शपथ पूर्वक कहता हूँ कि आयंदा कोईली महात्मा का कली अपमान नहीं करूँगा । और आप नगर में पधारे ।

सूरिलुने कहा कि सुलतानल ? देखिये यह नगर आपका है और मेरा आपने अपमान किया । इस ली आप मुझे आमंत्रण हे रहे हैं ईस्तिये में चलने के लिये तैयार हूँ । क्यों कि मेरे हृदय में आपके प्रति भूरे विचार नहि है अगर हो तो मैं आपके नगर में आउंगा क्यों ? यह तो आप जूह ही विचार कर सकते हैं । अकेले को हुकम तो प्राणान्त आगया । परंतु मैं आपको कहता हूँ कि आप निश्चिंत अपना राज्य पालन करें । किन्तु किसीली साधु का तिरस्कार कली भत करना और अपनी प्रजा को शान्ति से पालन करना । हण्डीबल को ऐसा कहकर सूरिलु शिष्य सहित उपाश्रय में पधार गये । हण्डीबल ली अपनी राजधानी में चला गया ।

एक समय सूरिलु मुंहपति सुंह के उपर बांध कर व्याख्यान पढ़ रहे थे जिसमें हण्डीबल ली सामील था । प्रवचन के अंत में हण्डीबल ने पूछा कि जगद् शुरो ? आप मुख पर कपड़ा क्यों बांधते हैं ? सूरिलु ने कहा कि व्याख्यान पढ़ते समय मेरे मुख से शुंक पुस्तक पर कहाचित् पढ़ जाय तो ज्ञान की आशातना होती है । ईस लिये कपड़ा रखने से होष नहीं लगता है । पुनः हण्डीबल

૧૧૫

ને પૂછા કિ મહારાજ ? કયા થુંક નાપાક હૈ ? સૂરિલુને
કહા કિ જાણ તક સુંહ મેં હૈ તથ તક પાક હૈ ઔર
બહાર નિકલને કે બાદ નાપાક હૈ ।

જગદ ગુરુ હેવ કે માધ્યર્થ વચન સુનકર સુંધ ભાવ
સે આર્થના કરને લગા કિ મહારાજ ? મેરે યોગ્ય સેવા
કાર્ય કરમાધિયે । ઈસ પર સૂરિલુને કેદ્દિયાં કો સર્વદા કે
લિયે સુકૃત કરવાદિયે । ઔર દારુ ભાંસ એવં પરસ્કી
ગમન સર્વથા બંધ કરવા હિયા । સાથ હી સાથ સમસ્ત
નગર મેં કોઈ લુલ હિંસા ન કરેં ઈસકે લિયે અમારી
પટહ અજવા હિયા । હણીખલ ભી ઉપરોક્ત કાર્ય કરતા
હુઅા અપની રાન્ય લક્ષ્મી કા સદ્ગુર્યય કરતા હુઅા ન્યાય
નીતિ સે પ્રણ કા પુલન કરતા હુઅા અપને કો ધન્ય
ધન્ય સમજને લગા ।

અમારાવાદ કા સુષેદાર આજમખાન, પાટણ કા
સુષેદાર કાસિમખાન આદિ બડે બડે રાજી મહારાજાઓં
કો અપની ઔજસ્વી ભાષા મેં ઉપરેશ હેકર સર્વે અહિંસા
કે પૂલારી બનાયે । એવં ભાંસ મદિરા પરસ્કી કા
આજવન પર્યાન્ત પરિત્યાગ કરવાયા । અપૂર્વ પ્રલાવશાલી
સૂરિલું કે સામને જાણ ભારત વર્ષ કા સર્વે સર્વી અકથર
ભાદ્રશાહ શુક્ર ચૂકા થા । તો છોટે બાળાં કા તો
કહુના હી કયા થા । ઈસ પ્રકાર ઉપરેશ કારા સંસાર મેં
અહિંસા કી ભાગીરથી બહાને વાલે યહી સૂરિલું હુએ હૈ ।

૧૧૬

ખાલાત મેં કુછ દિન ઠકર કર કે વિહાર કર અનેક ગાંચોં મીં ધૂમતે હુએ સાં. ૧૯૪૬ કે ઝાલગુન માસ મેં તિર્થ સ્થાન પર પહુંચ ગયે. આપકે પહુંચને કે પૂર્વ હી સમાચાર પાડર મારવાડ, મેવાડ, માલવા, ગુજરાત દક્ષિણ, અંગાલ, કચ્છ આહિ પ્રદેશોં કે કરીબ તીન લાખ મનુષ્ય દાખલે હો ગયે. પહુલે ઈતને મનુષ્યોં કા જત્થા એક સાથ હોના અસમલવ થા. કયોંકિ યાનિયોં સે કર લિયા જતા થા. અથ શાસન સાંઘાર્દ્જગદ્ર થુરુ હેઠળ ફી દેશના સે મુગલ સાંઘાર્દ્જ અકબર ને યાનિયોં કા કર માર્ક કર દિયા. જિસસે યાંની અધિક ઉપસ્થિત હુએ.

તિર્થ પર શાહ તેજપાલ, શાહ રામાજ. શાહ કુબેરલુ જસુ ઠકુરલુ ઓાર શેઠ સુલા શાહ ઈન પાંચોં ધનિયોં કે દ્વારા બનાયે હુએ પાંચ વિશાળ જિન મંહિરોં કી પ્રતિષ્ઠા હો સહસ્ર સુનિયોં સે સમન્વિત વિભુધ શિરોમણી જગદ્ર ગુરુહેવ શ્રી મદ્દિજ્ય હીર સ્તૂરીશ્વરલુ મહારાજ કે કર કમલોં દ્વારા કી ગઈ. ઈસ સમય આઈ હુક્ક જનતા આનંદ સાગર મેં મીનવત્ર કલ્લોલે કરને દાખ્યી.

ઈસ સમય એક ડાસુર નામક શેઠને શુરુ વંદન કર કે જ હુલાર દ્વારે ગુરુચરણોં મેં લોટ કર વાસ્ક્રોપ કર વાયા. રામાજ ૨૨ વર્ષકી અવસ્થા મેં પતિ પત્નીને સંધ્વી કિદુષેઠ આહિ પર વ્યક્તિયોં કે સાથ અન્ધાર્યે પ્રતિ

૧૧૭

ધારણ કિયા । ઈસ વકત આચે હુએ ભક્તોને અપને અપને ગાવ મેં પધારને કે લિયે એવં યૌમાસા કે લિયે વિનતિ કી । પરંતુ ઉના સંધ કી વિનતિ કો સ્વીકાર કી ।

કુછ દિન કે આદ વિહાર કરતે હુએ જગદ શુરૂ દેવ શ્રી સંધ કે સાથ ઉન્નતપુરી (અના) મેં પધાર કર શ્રી શ્રીમાલ શાતીય શાહબદેખ ડો હીક્ષા ફેકર કે ચાતુર્માસ કા સમય ધર્માપદેશ દરા યાપન કરને લગે જનતા કા પચિં અંતઃકરણ તપ જપ ધ્યાન શુરૂ સેવા આદિ ધર્મ કાર્યો મેં દિનાનુદિન અધિકતર બઢતા ગયા જગદ શુરૂ દેવ કે પ્રતાપ સે કેન જગત મેં હી નહી અપિતુ ઈસ પૂત ભારત મેં અહિંસા દેવી કી નિરંતર પૂજા હોને લગી ।

પ્રિય પાડક ? પૂજય શુરૂદેવ કા અમૂલ્ય સમય અહિનીશ તપોમય હી વ્યતીત હુએા । કુચોંકિ આપ સે કી હુઈ તપસ્યા કા ઉલ્લેખ નિમન પ્રકાર પાયા જાતા હૈ । તેથે ૨૨૫ । એથે ૧૮૦ । ઉપવાસ ઉ ૬૦૦ । આભિલ ૨૦૦૦ । નીવી ૨૦૦૦ । વીશ સ્થાનક કી તપસ્યા વીશ વાર જ્યારહ મહિને કા પ્રતિભા તપ । સૂરિમંત્ર આરાધન તપ । તથા વિજય દાન સ્તુરિલુ કે દેવ લોક હો જને પર શુરૂ લક્ષિત કે નિમિત ઉપવાસ આભિલ એકાસણુ ૧૩ માસ તક કુમસર, તથા ચાર કરોડ સંજનય, એવં દશપૈકાલિક

૧૧૮

नित्य जपना, और ईनके अलावा ध्यान ज्ञान में कितना समय जाता था वह जानी गम्य है ।

आपके आज्ञाकारी साधु २५०० थे । जिस में एक आचार्य । ८ उपाध्याय । १६० पण्डित (पन्थाच) शेष मुनि विना पदवी के थे । साध्वी लगभग पांच हजार सुनी जाती है । ईतना सांचान्य होने पर ली गई का नाम भान्र ली नहीं था । और ग्राण्डीयों के हित के लिये कितना कठोर-उत्तम विहार किया है वह सब आप के सामने ही है ।

एक समय की बात है कि गुरुदेव असाध्य रोग रूपी काल के गाल में पड़ गये । उस समय विहार की शक्ति न होने पर हुसरा औमासा ली थंडी करना पड़ा । गुरुदेव का स्वास्थ्य प्रतिकूल सूनकर जमनगर के जामसाहेब का सुख्य वल्लर अपना लघुशाली सुख साता पूछने ऐवं वंदन करने के लिये आये थे । उन्होंने गुरुदेव की सौनेया से नव अंग पूजा करके एक लाख का अंग लुछाया किया । और अनेक याचक वर्गों को दान होकर संतुष्ट किये ।

जब उना में जगह गुरु भिमारी में अस्त छोगये थे तब ली औषध का सेवन नहीं किया । ईन पर श्री संघ ने सत्याश्रह करके कहा कि अगर आप औषधी नहीं लेंगे तो हम लोग आज से अन्न पानी त्याग कर देंगे । और स्तनपान भी भाता खर्चे को नहीं होगी ।

૧૧૬

ઈસ પ્રકાર અટલ લક્ષિત સંધ કી હેખ કર શુરુહેવ ને ઔષધ સેવન કરના સ્વીકાર કિયા ।

એક હિન કા જિઝ હૈ કિ જોયરી મેં ખીચડી લાયે થે શુરુહેવ ને ઉનકો ઉપયોગ મેં લી । થોડી દેર કે બાદ જબ ઉસ લક્ષિત કો માલૂમ પડતી હૈ કિ ખીચડી મેં આરા અધિક પડ ગયા હૈ. દૌડતા હુંથા ઉપાશ્રય મેં આકર કે કહતા હૈ કિ શુરુહેવ ? આજ ગલતી હુંથ કિ ખીચડી મેં લુણુ અધિક પડ ગયા । ઈસિલિયે જગ્ઘ શુરુહેવ કો નહીં વપરાના । પરંતુ જગ્ઘ શુરુહેવ તો પહુલે હી વાપરે કર જૈઠ ગયે થે । ઈતની આરી ખીચડી હોને પર લી શુરુહેવને એક સી શાફદ શિખ કો નહીં કહા । અહા પર ડિતના શુરુહેવ ને કંદ્રોલ કર રખા ? । કહુને કા તાત્પર્ય હૈ કિ રસ નિરસ કેસા મિલતા ઉસસે હી અપના નિર્વાહ કર લેતે થે । પરંતુ કિસી કો કહતે નહીં । ઈની પર શિખ વર્ગ અહૃત ગણરાયે કિં શુરુહેવ કી તબિયત અધિક બિગડ જાયણી । ચિન્તા કરને લગે । તણ જગ્ઘ શુરુહેવ ને આદ્યાસન ભરે શાફદો મેં કહા કિ ચિન્તા ન કરેં । મેરા સ્વાસ્થ્ય ઈનસે નહીં બિગડેગા ઔર સુધરેગા ।

ઉત્તરાત્તર શુરુહેવ કા શરીર અણુ શીણુ હોતા હુંથા હેખ કર શી સંધને વિજય સેન સૂરિણ કો સૂચના હી કિ આપ જદ્દી પધારિયે । કચોં કિ જગ્ઘ શુરુહેવ કા સ્વાસ્થ્ય દિનાનુદિન અધિક બિગતા ભરહા હૈ ।

१२०

ਉਸ ਸਮਯ ਵਿਅਖ ਸੇਨ ਸੂਰਿਲੁ ਲਾਹੋਰ ਦੇ ਵਿਹਾਰ
 ਤੇ ਮਹਿਮ ਨਗਰ ਮੇਂ ਚੌਮਾਸਾ ਕੇ ਉਫੇਸ਼ ਦੇ ਆਰਡੇ ਥੇ ਇਹਨੇ
 ਮੇਂ ਉਜਾ ਕਾ ਪਤ੍ਰ ਮਿਲਾ, ਪਤ੍ਰ ਕਾਰਾ ਸਮਾਚਾਰ ਜਾਨ ਕੇ ਮਹਿਮ-
 ਨਗਰ ਮੇਂ ਚਾਤੁਰੰਬਾਂਸ ਨ ਕੇ ਅਤਿਸ਼ੀଘ ਚਵਤੇ ਹੁੰਏ ਪਾਟਥੁ
 ਜਾ ਪਹੁੰਚੇ ਕਿ ਚਾਤੁਰੰਬਾਂਸ ਲਾਗੁ ਹੋਗਿਆ ਜਿਸਦੇ ਆਪ ਵਿਵਸਥ
 ਛੱਡੇ ਵਹੀਂ ਐਠਾਂ ਗਈ। ਕਿਨ੍ਤੁ ਆਪਕਾ ਮਨ ਗੁਰੂ ਲਹਿਤ ਮੇਂ
 ਚਲਾ ਗਿਆ ਥਾ ਕੇਵਲ ਧਣਾਂ ਪਰ ਸ਼ਾਰੀਰ ਮਾਗ ਛੀ ਥਾ, ਅਤੇ ਆਪ
 ਆਪਕੇ ਲਿਏ ਚਾਰ ਮਾਸ ਨਿਅਲਨੀ ਚਾਰ ਯੁਗ ਦਾ ਹੋਗਿਆ।

ਅਖ ਕੁਮਸ਼: ਪਚੂੰਥਣੁ ਪਰਵ ਆਗਿਆ ਸੂਰਿਲੁ ਕਵਿਪਸੂਨ
 ਸੁਨਾਨੇ ਲਗੇ ਗੁੜਹੇਵ ਕੀ ਕੂਪਾ ਦੇ ਪਰਵ ਨਿਰੰਜਨ ਪੂਰਵਕ ਨਿਕਲਿ
 ਗਿਆ। ਸਮਵਤਸਤ੍ਰੀ ਕੋ ਪਚਟਪਰ ਅਮਰਤ ਆਮਣਾ ਕੇ ਵਿਅਖ
 ਸੇਨਸੂਰਿਲੁ ਅਪਨੇ ਪ੍ਰਿਯ ਲਭਤੋਂ ਕੋ ਪਤ੍ਰ ਫੇਨੇ ਲਗੇ। ਜਿਸ ਮੇਂ
 ਏਕ ਪਤ੍ਰ ਅਕਥਰ ਤੇ ਨਾਮ ਦੇ ਲਾਖ ਕੇ ਆਵਕ ਕਾਰਾ ਲੇਡਾ
 ਅਪਨੇ ਗੁੜਹੇਵ ਕੋ ਸੁਖ ਸਾਤਾ ਏਵਾਂ ਵਨਦਨਾ ਤੇ ਲਿਓ
 ਏਕ ਮਨਡਲੀ ਲੋਜ ਹੀ।

ਈਧਰ ਸੂਰਿਲੁਕਾ ਪਤ੍ਰ ਲੇਕੇ ਆਵਕ ਅਕਥਰ ਤੇ ਫਰਖਾਰ
 ਮੇਂ ਪਹੁੰਚਾ ਉਸ ਸਮਯ ਅਕਥਰ ਕੀ ਸਵਾਰੀ ਧੁਮਨੇ ਤੋਂ ਲਿਏ
 ਬਾਹਰ ਨਿਕਲੇ ਰਹੀ ਥੀ ਈਸਲਿਧੇ ਪਤ੍ਰ ਨ ਫੇਕੇ ਸਵਾਰੀ ਤੋਂ
 ਪੀਛੇ ਵਹ ਲੀ ਚਲਨੇ ਲਗਾ ਕੁਝ ਛੁਰ ਭਾਨੇ ਪਰ ਏਕ ਤਾਲਾਅ
 ਮੇਂ ਮਚਲਿਧੇਂ ਕੀ ਸ਼ਿਕਾਰ ਕਰਤਾ ਹੁੰਦਾ ਏਕ ਮਨੁ਷ਾ ਕੋ ਅਕਥਰ
 ਫੇਖਤੇ ਹੀ ਉਥੇ ਪੁਲਾ ਕੇ ਮੀਠੇ ਮੀਠੇ ਸ਼ਾਫ਼ਾਂ ਮੇਂ ਸਮਝਾਨੇ
 ਲਗਾ ਲੇ ਵਤਸ ? ਤੁਝੇ ਮਚਲਿ ਆਹਿ ਸ਼ਿਕਾਰੇਂ ਕੀ ਬਹੁਤ

१२१

शौक है लेकिन निष्कारण निरपराधी ज्ञव हिंसा से अपनी आत्मा को तृप्ति करना मुनासिंध नहीं है ज्ञव प्राणीमात्र में समान है सुख हुआ का अनुसव सब आण्वियों को अपने जैसा ही हुआ करता है। अस्तु। यदि इस बात पर आस्था नहीं हो तो निरपराधी साधारण लोगों की हिंसा छोड़ कर भैरव देहस्थ मांस से ही अपनी लालचा पूर्ति किया कर। इसकी बात पर्युषण उपर्युक्त ऐसी प्रकार की ज्ञव हिंसा करना सभत भना है। यह बात जग जाहिर है क्या तू ने नहीं सुना है ?

शिकारी भन ही भन शेयरने लगा। कि प्रथम तो मैं नियंत्रण का दंडी हूँ और इसका भधूर शप्हो से समझा रहा है इस पर भी अगर भैरव शिकार नहीं छोड़ा तो भैरव जैसा आत्मघाती कौन होगा ? ऐसा विचार कर उसने ठहा कि हे जहांपनाह ! आपके हुक्म के जलंधन कर भैरव के कलंक का पात्र भना और आपने अपना शरीर भैरव लोकन के लिये हेम चाहा। इनसे भी मृत ग्रामः होगया। विशेष आपसे न घोल कर आज से यह अतिशा। करता हूँ कि भैरव ज्ञवनभेदापि ज्ञव हिंसा नहीं कहेगा। इस पर भावशाह धन्य वाह देकर आगे बढ़ गये।

यहां के सभ वृत्तान्त हेतु सुन कर आए हुआ श्रावक क्षुप्य होकर राजसवारी के साथ हरभार में आकर्ष

१२६

पत्र नजराने कर कहने लगा हुजूर ? यह पत्र विजयसेन सूरिय ने लेजा है.

अकथर आदशाह पत्र पठ कर जगद् शुरुदेव की हालत खराख समझ कर असीम चिंता सागर में डुबते हुए बहुत समय तक भौंन रह गये और जगद् शुरुदेव के दर्शनार्थ जाने के लिये लावना करने लगे.

धधर उन्नत नगर में जगद् शुरु श्रीमद्विजय हीर सूरीश्वरलु महाराज अपना अन्त समय जान कर औरासी लाख ज्वायोनियों के साथ क्षमापन करते हुए चार शरणों (अरहित सिद्ध साधु और डेवली भाषित जो धर्म) के स्वीकार करके अपने मंडल के ऐवं श्रद्धालु श्रावकों के एकत्रित करके अंतिम उपदेश देने लगे.

हे श्रद्धालु मुनिगण ! ऐवं लक्ष्मि श्राव ? अब थोड़ी ही समय में मेरी मृत्यु होने वाली है इससे मुझे चिन्ता नहीं है क्योंकि मरण का लय नाश करने के लिये तीर्थ-कर कैसे महापुरुष ली समर्थ नहीं हुए कहा ली है कि

तित्थयरा गण्य हारी सुरवधुणा चक्षि उसवा रामा ।

संहरिआ हय विहिणु का गण्यणु धिर दोगाणु ।

जब तीर्थ-कर गण्यधर देवता चक्रवर्ती उशव राम आहि सभी इस प्रकार मृत्यु के प्राप्त हुए तभ ईतर दोगों का तो कहनाही क्या है ?

૧૨૩

હે ભન્યાતમન્? આપ દોણોં કોલી અપને અપને સંયમ
કી આરાધના મે કિસી પ્રકાર કી ચિન્તા નહીં હૈ ચૂંકિ
પદ્ધતિ વિજય સેન સુરી મેરે સ્થાન પર મૌજૂદ હૈ ધીર
વીર ગમ્ભીર વહુ આચાર્ય તુરહારે કેસે પંડિતો દ્વારા
સુખય કર સેવનીય હૈ. સર્વદા ઉનકી આજા પાલન કરતે
હુએ પરસ્પર પ્રેમ લાવ સે રહુ કર પરમાત્મા વીર કે
શાસન કી ઉજ્જ્વલિ કરને મે કટિષ્ઠ રહુના. ઈસ પર સાધુ
ઓર શાવક હોનો ને તથાસ્તુ કહુતે હુએ આપકે વચ્ચોનો
કો સાદર સ્વીકાર કિયા.

ઈસ પ્રકાર સખ કો સાવધાન કરકે પંચ પરમેષ્ઠી કી
સાક્ષી પૂર્વક અનશન કરકે મોક્ષ સુખ કો હેને વાલા નમ-
સ્કાર મહૂા મન્ત્ર કા ધ્યાન ધરતે હુએ મન વચન ઓર
કાયા કે પવિત્ર દોણોં સે આત્મ નિનંદા કે સાથ પ્રાણી માત્ર
સે મૈત્રી લાવ અદાતે હુએ જગ્હ શુરુ નિબંધ નાયક સં.
૧૬પર લાદ્રવા શુક્લા એકાદશી ગુરૂવાર કે દિન લવ
સમાનધી ઔદ્ઘાસ્તિક શરીર કો છોડકર દેવ દોક સિધાર ગયે.

આપકે સમીપસ્થ શિષ્ય મન્ડલ ઓર શાવક આઉં
મૂચ્છામય હોકર કૂટ કૂટ કર રૈને લગે. કુછ દેર કે બાદ
શુરુ વચનામૃત કો સમરણ કર ધીરતા ધારણ કરતે હુએ
શાવક ગણ સંગઠિત હોકર મૃત શરીર કો ચંદનાદિ અનેક
પ્રકાર કે સુગંધિત દ્રવ્યોં સે વિલેપન કર એક સુસુનંદર
વિશાળા નામક શિખિકા મે બૈઠા કર અણિ સંદકાર ભૂમિ

१२४

भर लेणाकर के अन्दन श्रीइल और गो धृत से ढाढ़ किया
करने लगे। शमशान भूमि से लौट करके स्नानोत्तर उपार्थ
आकर शान्ति का पाठ श्रवण्य पूर्वक अपने अपने धर
चढ़े गये।

तदनंतर सण ब्राह्मिस ईकुट्टे होकर शासन नायक
के स्वर्ग गमन का समाचार पत्र तथा संहेश कारा गामो
गाम केजे एवं विजय सेन सूरिल के पास पाठ्य
नगर मे हुःभ्रष्ट समाचार पहुँचा, वे पत्र पढ़ने लगे
तो उनका एवं अनुयायियों का हृदय कम्पायमान होकर
शोक सागर मे डुब गया। शोकातुर पहुँ धर सेन सूरिल
स्वेष्ट गह गह वाष्णी से छोलने लगे।

डे शुद्धेव ? मुझे विना दर्शन किये ही आप
कहां पधार गये आप मेरे मुकुटालंकार थे हया सागर
की सेवा निभित ही लाङ्कार से चढ़ा था किन्तु अलाभ
वश दर्शन न पा सका आपने मेरे किये थोड़ा सा ली
विलम्ब नहीं किया मेरे मन की बात मन ही रह गई
डे मेरे लगवन् ? आप कैसे सूत्रधर के विना हुम
क्षीण किस के आधार पर खड़े होगे अपनी आरम कथा
किसे सनाउगां किसको शुद्धेव शब्द से पुकारेंगा।
किसकी आङ्गा भाला यहनुँगा डे प्रलो ? अब आप कैसे
दिवाकर के विना मेरे हृदय गगन मन्त्रल मे कौन
बहकेगा, ओर अकेले कैसे कहार हृदयको कौन

१२५

पिधावेगा। शुद्धेव के बिना कौन उपहेशाभूति की वर्षा करेगा। इस भारत के ग्रामियों को हुरानार से कौन अचावेगा अथ प्रतिपक्षियों की भावा राक्षसी को कौन तिलांजली हेगा। अहिंसा हेवी की पूजा कौन करेगा हे शुरै ? आज आपके परदोक सिधार जने से धीरता का कौन आधार ढागा बिनय का कौन शरण होगा सत्य आज सचमुच मारा गया कड़वा बिचारी अथ किसकी शरण में जायगी शान्ति को कौन धारण कर सकेगा। क्षमा बिचारी कुट कुट कर दौरही है संसाम का साथी कौन अनेगा हे शासन शिरोभृष्टि ? आप अमर अजर होगे क्यों कि असंभव लुबों की रक्षा के साथ पुन्य तीर्थ और जगिया आदि के कर भोयन करवाया है आपकी अमर कीर्तिलता जब तक सूर्य चन्द्र है तब तक अना रहेगी अत्येव सविनय प्रार्थना है कि जे ल०य लुब आपको सच्चेहृष्ट्य से पुकारे उनके लिये भनोवांछित हल की पूर्ति करते रहे।

ईधर अकुभर के पास मे ली जगद शुद्ध के देहावसान का पत्र आपहुं था। पत्र पढ़ते ही अत्यन्त हुःअमर्य होकर सारे राज्य मे हडताल की उद्घोषणा करवा ही और अपने हरभार मे नाय गान आदि सभ भन्ह करवा हिया। और अजिन संस्कार के लिये ओशसी शीघ्रा जमीन लेट कर सच्ची श्रद्धांजलि अकुभर ने ही अकुभर कारा ही हुध उन्नतपुरी की जमीन पर एक

१२६

विशाल रमणीय स्तूप बना कर शुद्धेव के पादुका स्थापित कीये गये, वह आज भी विघ्मान है उस जमीन पर रहा हुआ आम्र वृक्ष ला. शु. एकादशी के दोज बां जली देव होता है. और उस रात में उनका ध्यान धर ऐठे तो आयशः दर्शन ली हो जाता है ऐसा सुना जाता है,

विशेष आधू पाट्ठु स्तम्भस्तीर्थ राजनगर अभावाद सूरत हैदराबाद आगरा महुआ मालपुर पतन-सांगानेर जयपुर आदि शहरों में हीर विहार (हीर मंदिर) होया जाता है. इस मन्दिर में प्रतिष्ठित शासन सआड़ की चमत्कारिक प्रतिमाकी श्रद्धापूर्वक पूजा लकित करने वालों का हुःअ दारिद्र द्वर हो जाते हैं और वह पुढ़िय लक्ष्मी पार्व एवं विजयी बन जाता है.

विजय सेन सूरिण साधु मन्डल ओर श्रावक समुदाय की उदासीनता हेखर अमीट शोक के अगत्या भिटाते हुए लब्ध लुब्धों को आश्वासन होने लगे. यातुर्मास पूर्ण होते ही शासन का सारा भार अपने स्कंधों पर लहर करते हुए लाभशालियों को धर्मोपदेश होते हुए भूमन्डल को पावन करने लगे.

प्रिय पाठक ?

विश्वेषकारी शासन चूडाण्डियि सूरि पुर्जी जगद् शुद्ध देव कौसे महापुढ़िय आज दिन तक संसार में होते तो न मालूम कितना उपकार करते. यह अनिर्वचनीय है

१२७

अंत मे सविनय यही ग्रार्थना है कि छिद्रान्वेषण
को परित्याग करते हुये शुच्छुक पक्ष पाती होकर महावीर
स्वामी के परमपरागत विजय हीर सूरिल आहि महा-
पुरुषों से उपर्हिट आपत वयन पर अटल विकास रथ
कर अपनी आत्मा को ज्ञान ज्ञेति मे लयतीन करते
हुये अवश्य आत्म कद्याणु करें। हमें
शोयना चाहिये कि ज्ञ यवन ज्ञति अक्षयर ली हीर
वयनामृत पान कर के सहेव के लिये अमर सा अनगया
तो हम से क्या अलज्य है? हम स्वयं पूर्व उपार्जित
कर्म से पूत है एवं उच्च शिखर की सीढ़ी पर आड़दं है.

मै आशा रभता हूँ कि वर्तमान स्वतन्त्र भारत
के अनुसार आधुनिक उपहेशक आचार्य एवं शिक्षक
आहि ली भमत्व पण्डा को भिटा कर अहिंसापासक जगद्
शुरु हेव का अनुकरण करते हुये लेह भाव को ली अक्ष-
रशः भिटाते हुये वास्तिवक उन्नति के शिखर पर घड़ें।
अन्यथा भारत की उन्नति के अलय अपनी आत्मा की
ली उन्नति आकाश कुसुम के जैसी परम असम्भव होगी।
ईष्टहेव हमें सह भुद्धि प्रहान करें। ताकि हम अनुपम सुख
मापत कर सकें। अङ शान्ति. ॥१॥

श्री छिद्रान्वेषणासि भुमुक्तु अव्यानन्द विजय,
“ शास्त्री ”



॥ वन्दे श्री हीरभगद् गुडम् ॥

मुनिराज श्री दर्शन विजयल (विपुली) कृत
जगद् गुड शासन सआद् अकेले प्रति बोधक
श्रीमह विजय हीर सूरीश्वरल की
भट्टी पूजा
अथम जल पूजा.

—ः होड़ा :—

जय जय सुमति जिषुंहल, जय सुपार्व जिषुंह ।
जय जय आहीश्वर प्रबो, जय जय पाखंजिषुंह ॥१॥
जय जय सूरि वाचक मुनि, जिन शासन शिषुंगार
जय शुड हीर सूरीश्वरा, शुग प्रधान अवतार ॥२॥
जय आरित्र विजय शुड, चरणमै शीष नमाय ।
जग शुड की पूजा रचूं, सब छी डो सुभद्राय ॥३॥

(ढाळ १)

(तज्र आओ आओ आहीश्वर वाया, भडो धक्षु रसदान)
आवो आवो ओ घ्यारे सज्जन,

करो शुड शुण गान ॥ टेक ॥
महावीर के पाट परम्पर, हुओ श्री शुग प्रधान ।
वचन सिद्ध और उच्च तपत्वी,
जगच्चन्द्र सूरि जाण ॥ आवो ॥ १॥

१२६

जिनके चरणमें शिख जुकावे, मेह पाट का राणु ।
 तपा तपा कहके भुवावे, जैग सिंह अवतान ।२०
 श्री हेन्द्र सूरीश्वर त्यागी, हेव पूजय श्रुतवान ।
 कर्म अन्थ आहि शास्त्रोळा, किया जिनने निरभाषु ।३०
 दाढा साहेब धर्म धोष सूरि, त्यागी युग प्रधान ।
 महामंग वाही व प्रभाविक, हुआ धर्म के प्राणु ।४०
 हेवपत्तन में मंग पहों से, सागर रत्न प्रधान
 शुद्ध के चरणां मे उच्छाले, रत्न ढेर को आन ।५०
 निर्धन पेथड जिनकी कृपासे, अने बडा हिवान ।
 शासन का अंडा कहरावे, शुरु कृपा अवतान ।६०
 जिनके वयन से यक्ष कपर्दी, छोडे मांस अलिहान ।
 सेवक होकर शत्रुंजय पर, पावे अपना स्थान ।७०
 जेवणियों ने कारभाषु कीना, यहु सुनियों का आणु ।
 उनको पाटे पर चिपटा कर, हिया शुरुने जान ।८०
 शुद्धके कंठ को मंत्र से खांधा, थूं ली उनसे वाणु ।
 तपगच्छ को उपद्रव नहीं करना, स्थांसित कर अज्ञान ।९०
 एक योगी चूडे के धारा, करे गृह्ण को पदेशान ।
 उसके उपद्रव को हटाया, पाया, अहु सन्मान ।१००
 रात में शुद्धका पाट उठावे, गोधरा शाकिनी जाणु ।
 उनसे ली तथ मुनि रक्षाका, लीना वयन प्रभाषु ।११०
 सांप काटते कहा संघ से, अपना लविष्य जान ।

१३०

संघने ली वह जड़ी लगाई, हुये शुद्ध सावधान । १२।
 असम अहुकी अवधि होते, शासन के सुलतान ।
 आनंद विमल शुद्ध जिन्हों के, नमे राज सुर त्राण । १३।
 कियोद्धारसे मुनि पंथ के, उद्धरे युग प्रधान ।
 शान झूपासे हर हटावे, कुमति का उद्धाण ॥ आ. ॥ १४
 जेसदमेर मेवात मौरणी, वीरभगाम महान ।
 सत्य धर्मका अंडा गाडा, हिन हिन बढते शान । आ. । १५ ।
 मणि लद्द सेवा करे जिनकी, विजय दान शुद्ध मान ।
 उनके पट प्रलाविक सूरि, हीर हीर की आण । आ. । १६
 हिन शुद्धओं की करे आशातना, वह जगमे हैवान ।
 अकित नीर से चरणों पूजे, चारित्र दर्शन शान । आ. । १७

काव्यम् (वसंत तिळक)

हिंसादि दृष्टव्य विनाश युग प्रधान,
 श्रीमह जगद्गुरु सुहीर मुनीश्वराण्याम्
 उपर्याः सृत्यु लव हुःभ निवारण्याय,
 सङ्कृत्या प्रश्नात्य विमलं चरणं यज्ञेऽहु ॥ १ ॥

मंत्र

ॐ श्री सङ्कल सूरि पूरहर जगद्गुरु लट्ठारंक श्री हीर
 विजय सूरि चरणोल्लये ॥ जलं सर्वर्पयामि दवाहा ॥ १ ॥

१३९

द्वितीय चंहन पूजा

होड़ा,

विजय दान सूरि विचरते आये पाठणपुर ।
 उपहेशसे लवि लुपड़ा, मार्ग बतावे धूर ॥ १ ॥
 गुरुवर की सेवा करे, माखिलद्र महावीर ।
 करे समृद्धि गच्छ में, काटे संघ की पीर ॥ २ ॥
 इस समय गुरु हेवड़ा, हुआ शिष्य का लाल ।
 तपगच्छ में प्रतिदिन बढ़े, धर्मलाल भनलाल ॥ ३ ॥

(ठाकुर २०)

(तर्ज धन धन वो जगमें नरनार)

धन धन वो जगमें नरनार, जो शुद्धेव के गुणको गावे । ठेर ।
 पालनपुर लूभिसार, ओसवाल वंश उदार ।
 महाजन के धर श्रीकर, प्रद्वाहन पास की पूजा रचावे । धन ।
 धन शोडल कुराशाह, नाथी हेवी शुक्ल चाह ।
 चले जैन धर्म की राह, धर्म के भर्मको हिलमें ढावे । ध. १२ ।
 संवत् पन्द्रहसे भान, तिर्यासी मिगसर भाणु ।
 हीरलुका जन्म प्रमाणु, शान शौकत जे कुलकी अदावे । ध. १३ ।
 शिशु वयमें हीर स पूत, परतिअज्युं शारद पूत ।
 खल धुषिध से अद्भूत, जान क्षय उपथम के ही प्रसावे । ध. १४ ।
 पुरिकमण्डा प्रकरणु दाल, योग शास्त्र व उपहेश माल ।

१३२

पयन्ना चार रसांस, पठे गुड के ली दिलको हुआवे । ४. १५।

हीरलु पाटणु में आय, नमें हान सुरि के पाय ।

सुने वाणी हर्ष अदाय, पाठ दिल संयम रंग जमावे । ४. १६।

पन्द्रहसे छयाणु की सात, दी दीक्षा हीर सुकुमाल ।

अने हीर हर्ष सुनि बाल न्याय आगम काजान अदावे । ४. १७।

संवत् सोलासे सात, पन्यास हुए विख्यात ।

हुए वायक संवत आड, पाट सुरिकी इशमें पावे । ४. १८।

हुए पूज्य सूरीश्वर हीर, नमे सुआ राज वलूर ।

अनहन अर्चित गंलीर, धीर चारिक्र सुदर्शन गावे । ४. १९।

अव्यभ-हिंसादि.

मंत्र अँ श्री० चन्हनं समर्पयामि स्वाहा ॥२॥

तृतीय पुण्य पूजा

: दोहा :

हीर हर्ष हुए सूरि, हुआ धर धर आनंद ।

थासन की शोला अदी थश ईशा शुणु कंद ॥ १ ॥

(दोहा ३०)

तर्जु-कहमों की धाया में, अलु के पैर पूजना)

हीर सूरीश्वरलु, गुड के शुणु गाएचि ॥ टेर॥

हीर सुनीश्वर, हीर सूरीश्वर, । अकल महीमा रे

१३३

अकित से इव पाठये ॥ हीर ॥ १ ॥

इतेहपुरमें उपकेश धरमें । है तथ अकित रे
तपसे ही सुभ प्राप्तये ॥ हीरा ॥ २ ॥

सती शिरोमणि सहगुणी रमणी । आविका चम्पा रे-
छे भासी तप धार्ये ॥ हीरा ॥ ३ ॥

हेव कृपा से शुरु कृपा से । तप गुण बढते रे
कृपा को वारी जार्ये ॥ हीरा ॥ ४ ॥

हुई तपस्या भोक्ष समस्या । आनंद हेतु रे
उच्छव रंग आहिये ॥ हीर ॥ ५ ॥

तप की सवारी भूलूस लारी । आजिंत्र आजे रे
जय नारे ही मिलाये ॥ हीरा ॥ ६ ॥

अकबर ओले लोक है लोले । तुठी तपस्या रे
चम्पा को कहे आहिये ॥ हीर ॥ ७ ॥

पूछे चम्पा से डिन की कृपा से । दौल भनाये रे
सच्चा ही भतवाये ॥ हीर ॥ ८ ॥

पाश्वं प्रलु डी हीर शुद्ध डी चम्पा सुनावे रे
कृपाका इव पाठये ॥ हीर ॥ ९ ॥

कृपालु नामी हीरलु स्वामी । ढाना शाहीने रे
धनसे ही मिलना चाहिये ॥ हीर ॥ १० ॥

शुद्ध चरनमें अकित सुमन है । चारित्र दर्शन रे
कर्मों का गढ़ धाये ॥ हीर ॥ ११ ॥

१३६

કાવ્યમુહિંસાહિ.

મંત્ર અંગ્રોડ પ્રષ્પાણિ સમર્પણામિ સ્વાહા ॥ ૩ ॥

ચતુર્થ ધૂપ પૂજા

: હાહા :

અકુભર દિવમેં ચિંતવે, ભારત કા સુલતાન ।

ભુલાઉં શુરૂ હીરળ, જૈનોં કા સુલતાન ॥ ૧ ॥

થાનસિંહ ઓસવાલ કો, એદે અકુભર શાહ ।

ભુલાવોં શુરૂ હીર કો, સુધરે લુવન રાહ ॥ ૨ ॥

થાનસિંહ કહે જહાંપનાહ, ફર હી હૈ શુરુરાજ ।

અકુભર કહે પરલી ઉન્હેં, ભુલાવો મથ સાજ ॥ ૩ ॥

(ગાલી ૪૦)

(તાજ્-શહીદોં કે ખુન કા અસર હેઠ લેના)

હીરસૂરિ કો ભુલાના પડેગા,

હમ કો લી દર્શન દિવાના પડેગા ॥

ધન શુજ્રે હૈ એસે શુરૂ સે,

વહાં સે શુરૂ કો ભુલાના પડેગા ॥ હીર ॥૧॥

રાજા રાહું દર્શન પાવે,

ઉનકા હી દર્શન દિવાના પડેગા ॥ હીર ॥૨॥

નામ લાય સે હુઃખ વિડારે,

એસે ઝુકીર કો યહાં લાના પડેગા ॥ હીર ॥૩॥

१३५

वहीं से रहारा हेवे यम्पा डो,

उस ओलिया से भिलाना पडेगा ॥ हीर ॥४॥
धर फुनिया डो दिल से छोड़े,

झुदा का अनहा अताना पडेगा ॥ हीर ॥५॥
सभ ज्ञान की रक्षा आड़े,

यही कृपारस भिलाना पडेगा ॥ हीर ॥६॥
त्यागी ध्यानी परिडत शानी,

उन्हों का उपदेश सुनाना पडेगा ॥ हीर ॥७॥
सभ मजहब से वाकेक साहिब,

उनका ली भजहब सुनाना पडेगा ॥ हीर ॥८॥
तेरांशुरु है भेरा शुरु है,

ठेका ली छो तो तुडाना पडेगा ॥ हीर ॥९॥
शाह अकबर यों भाव अतावे,

हीरे का याक भिलाना पडेगा ॥ हीर ॥१०॥
चाहिं दर्शन शुरु चरखु भे,

ध्यान का धूप जमाना पडेगा ॥ हीर ॥११॥

आव्यभू-हिंसाहिं

भंग-ओ झी० धूपं सभर्यामि स्वाहा ॥ ४ ॥

पंचम हीपक पूजा

—: होड़ा :—

अथ अकबर गुजरात भे, लेने भौही कमाल ।

१३६

યોલાવે શુરૂ હીર કો, ઇતેહસુર ખુશહાત ॥૧॥
સંવત્ સોલસો ચાલિસા, આયે શ્રી શુરૂ હીર ।
બને શુરૂ ઉપરેશ સે, ધર્મી અકબર મીર ॥૨॥

(ઢાલ ખ)

(તર્ફ-ધરી ધન્ય આજ કી સથ કો, મુખ્યારુ હો ૨)

ઈસી હુનિયાં મે હૈ રોશન, “જગદુ શુરૂ ” નામ તુમહારા ટેકા
કદ કો હીની જિન લીક્ષા, કદ કો જ્ઞાન કી લીક્ષા :
કદ કો નીતિ કી શિક્ષા, કદ કા કીના ઉદ્ધારા ॥ ઈસી ॥૧॥

હું કાપતિ મેવળ સ્વામી, અદુર્ધસ શિષ્ય સહગામી ।
સૂરિ ચેલા બને નામી, કરે ભુવન કા સુધારા ॥ ઈસી ॥૨॥

કીડી કા ખ્યાલ દિવલાયા, અજા કા ઈલિમ ભતલાયા ।
સુનિ કા માર્ગ સમજાયા, સંશય સુલેતાન કા ટારા ॥ ઈસી ॥૩॥

શાહી સન્માન તો પાયા, પુરુષ લાંડાર ભી પાયા ।
બડા આથા મેં ખુલવાયા, અકબર નામ સે સારા ॥ ઈસી ॥૪॥

તપગંછ કૈષ દિલધારા, કરે કલ્યાણ ખટચારા ।
ઉસી કા ગર્વ ઉતારા, સલી કે હુઃખ કો ટારા ॥ ઈસી ॥૫॥

ઇતેહસ, આગરા, મથુરા, શોરિપુર, લાલ, માલપુરા ।
ભુવન પ્રભુ કે બને સનૂરા, મોગલ કે રાજ્ય મેં સારા ॥ ઈસી ॥૬॥

કરે કોઈ શુરૂ પૂજન, દીયે હાથી હુરે ઉલાન ।
કરે વખાહિ સે હુંછન, યતિમ યાચક કા દિલ ઠારા ॥ ઈસી ॥૭
તીરથ કા ટૈકસ હટવાયા, જગ્નિયા કર ભી મિટવાયા ।

१३७

शर्तंजय तीर्थे हिर पाया, शुद्ध आधिन बने सारा ॥८८सी. ८॥
 अकृपणर ने समझ लीना, बड़ा हरभान लिख दिना ।
 हुक्म सालाना है महिना, यही उपकार तुम्हारा ॥८९सी. ९॥
 जगत पर कीना उपकारा, जगद् शुद्ध आप है भ्यारा ।
 अकृपणने यूं उच्चारा, दिया विदेह जयकारा ॥९०सी. १०॥
 शुद्ध उपदेश को पीकर, अकृपणर का हुक्म लेकर ।
 जिता शाहल बने मुनिवर, बना शाहि यति भ्यारा ॥९१सी. ११॥
 नमे सुवत्तान आजमधान, सिरोही देवडा सुवत्तान ।
 नमे प्रताप देक प्रधान, शुद्धों का है नहीं पारा ॥९२सी. १२॥
 मुगल सआट हरभारा, खुला शुद्ध मे शुद्ध द्यारा ।
 पीछे जिनचन्द्रसिंह भ्यारा, गये सेनाहि शुद्ध सारा ॥९३सी. १३॥
 शुद्ध आरित्र सीतारा, विमल हर्षन का आधारा ।
 जिना शुद्ध कोइ नहीं चार, शुद्ध दीपक से उज्जियारा ॥९४सी. १४॥

काव्यभू-हिंसाहि.

मंथ-छ श्री. हीरकं समर्पयामि स्वाहा ॥ ५ ॥

४०ठी अक्षत मूल.

— : होङ्का : —

जरद शुद्ध करे जगत भी, भ्रातु ग्रेम ग्रयार ।
 अहिंसा के उपदेश से, अहिंसक बने नरनार ॥१५॥

१३८

(दोष ६)

अहिंसा का डंका आत्म में, श्री जगद् शुद्धने भजवाया ।
 महावीर का डंका भारत में, श्री हीरसूरि ने इहराया गयेरा
 भयरानी रोह नगर स्वामी, शिकार डंका छोड़े सुख कामी ।
 सुलतान सिरोही का नामी उनका हिंसाहि छुटवाया ॥१॥
 अक्षयर सुखह भें आता था, सवा सेर कुलेवा आता था ।
 चित्तियों की लुभ मंगाता था, उस से उनका दिल हटवाया ॥२॥
 कुछ पशु पक्षीको भारथा, और कृष्णर जुलम गुजराथा ।
 अक्षयर कायह नित्य चारा था, उसके लिये माझी मंगवाया ॥३॥
 पिंजर से पक्षी छुडवाये, कुछ केदी को भी छुडवाये ।
 कुछ गैर ईन्साइ को हटवाये, कुछियों का लुपन सुलजाया ॥४॥
 काला ठानून था जजिया कर, जनताको सतावे हुःअ हेकर ।
 अक्षयरको मजहुब समझाकर, जजिया कर पाप को धुलवायापा-
 पर्युषण बारह दिन खारे, किसी लुपको डोईभी नहीं मारे ।
 अक्षयर सुं आळा पुकारे, दूरमान पत्र शुद्ध ने पाया ॥५॥
 संकानित के रविके दिन में, नवरोज मास ईद्दके दिनमें ।
 सूक्ष्मियानभिहिर के सबहिन में, लुपधात शाहीने दृक्वाया ॥६॥
 हिर जन्म मास अपना सारा, लुपधात सुं छै महिना टारा
 चारिन सुदर्शन लय हुआ, शुद्ध चरण में अक्षत पद पाया ॥७॥

काव्यमूर्हिंसाहि.

मंत्र-अ॒ श्री, अक्षतान् सभैर्यामि स्वाहा ॥ ८ ॥

१३६

सप्तमी नैवेद्य पूजा

हाँ॥

જगद् શુરૂને અવન મેં, કીના તપ શ્રી આર ।
 તેલે એલે સૈંકડેં, પ્રત લી ચાર હળર ॥૧॥

આભિલ નીવી એકાસણ્ણા, ઔર વિવિધ તપ જના ।
 પ્રતિદિન બારહ દ્રોષ કા, કરે શુરૂ પરિમાણ ॥૨॥

કાઉસગ્ગ ધ્યાન અલિથહ કરે, પ્રતિમા બાર મનાય ।
 દશવૈકાલિક નિત્ય જ્યે, ચાર કોડ સજાય ॥૩॥

પરિડત એકસૌ સાઠ થે, ચાંદુ કઈ હળર ।
 એક સૂરિ ઉવજગાય આઠ, યહ શુરૂ કા પરિવાર ॥૪॥

(હાઁ-૭)

(તર્જ-કેસરિયાને તેસે જહાજ તિરાયા)

જગદ્ શુરૂ આજ અમોલક પાયા, નર લંબ સકલ મનાય
 ॥૪૨॥

જગદ્ શુરૂ ને જગત કે લિત મેં, કારા અવન બિતાયા ।
 આપકે શિષ્ય પ્રક્ષિષ્યોં ને શી, કીના કામ સવાયા ॥૪૦ ૧॥

વાયક શાન્તિચંદ્ર ગણિને, કૃપાંશુન્થ બનાયા ।
 મુનઉર શાહ ને અપને અવન મેં, મુરદા નહીં હફનાયા ॥૪૦ ૨॥

કલ્યાણુમલ કે કષ્ટ પિંજરસે, ખંભાત સંઘ કા છુડાયા ।
 ઝૂમાણું કા ઈદમ બતાયા, જરૂરૂતિ બનાયા ॥૪૦ ૩॥

४५०

भानुचंद्र ने शाही कारा, वाचक का पढ़ पाया ।
शाही के पुत्र को ज्ञान पढ़ाया, तीरथ पढ़ा पाया ॥७०४॥

पटधर सेन सूरि आलम भे, गौतम कृत्य गवाया ।
पाटण्डि राजनगर खंभात भे, पर गच्छी को हराया ॥७०५॥

सूरत भे श्री भूषणहेव को, वाढ भे दूर अगाया ।
शाही सला भे पांच से लट से, वाढ भे जय अपनाया ॥७०६॥

अक्षर से वट जड्य को पाया, भूत धन आहि हटाया ।
सवाई हीर का लिरह पाया, परतिअ पुन्य गवाया ॥७०७॥

अक्षर के पष्ठित सल्यें भे जिनका नाम लिखाया ।
विजय सेन भाष्यचंद्र अमर है, शासन दाग सवाया ॥७०८॥

अष्टावधानी नंहन विजयल, सिद्धिचंद्र गणिताया ।
विवेक हर्ष गणी इन्हेने, शाही से धर्म कराया ॥७०९॥

पठ पट्ठ धर श्री हेव सूरिने, शाही से जय पाया ।

सुरहेव चंद्र आहि हेवेने शुरु का भान अदाया ॥७०१०॥
विरुद्ध जहांगीर महातपायूं, सलीम शाह से पाया ।

राष्ट्रा जगतस्त्रिहसे ली दद्या का, चार हुक्म लिखवाया ॥७०११॥

वाचक विनय ने लोक अकाश से, संच्चा पंथ भताया ।
यशो विजयल वाचक शुरु के, ज्ञान का पारन पाया ॥७०१२॥

अनतर अति जिनचंद्र झूरिने, जगतुरु का अश गाया ।
इरमान सर्वताह की अहिंसा का, अक्षर शाह से पाया ॥७०१३॥

शुरु के नाम से पाले धन मूल, यश सौख्य सवाया ।

१८९

आरिन्द्र दर्शन शुरु चरणों में, लाव नैवेद्य घशया ॥७० १४॥

काव्यम्—हिंसाहि

मंत्र अ. श्री. नैवेद्य समर्पयामि स्वाहा ॥ ७ ॥

अष्टमी इलं पूजा

—: होहा :—

सोबो बावन लाहों मे, सुही ज्यारस की रात ।

शुरुए स्वर्ग में ल असे, उना में प्रभयात ॥ १ ॥

अनिनदाङ्क के स्थान में, इले बांज ली आम ।

हिखावे गभी मुकुट छोड, अकधर अपने धाम ॥ २ ॥

अकधर से पाकर जगीन, लाडकी करे वहां स्तूप ।

जे प्रतिष्ठ परचा पूरे, नमे हेव नर भूप ॥ ३ ॥

आधू पाटघु स्थानना, राजनगर जयकार ।

सूरत हेद्रायाह में, अने श्री हीर विहार ॥ ४ ॥

आगरा भहुवा मालपुर, पटघु सांगानेर ।

नमुं प्रतिमा स्तूप खाहुका, जयपुर आदि शहेर ॥ ५ ॥

(शाल-८)

(तज्ज्ञ—सरेता कड़ां भूल आये)

आवो भाई आवो, शुरु के शुलु गायो ॥ देर ॥

हेवी कडे हेवेन्द्र सूरि के, चरणु कमल में लयो ।

अहती उनके गर्छ की हाँगी, कुपथ में भत लयो ॥ १ ॥

१४२

पदावती कडे तिलक सूरि के, शिष्य को स्तोत्र पढाओ।
 प्रतिदिन तपगच्छ बढ़ता रहेगा, प्रलसूरि मत धरनाओ। गु. २।
 भण्डिलद्र कडे दान सूरि के, विजय दान वरसावो। ३।
 कुशल कड़ंग। विजय तपा आ, विजय द्वजा फूरकावो। गु. ३।
 औसे गच्छ में जगद् शुरु, श्री हीर सूरि के गावो।
 वर्ष ईक्षीस हब्लर चलेगा, वीर शासन मन लावो। गु. ४।
 देश प्रदेशों में कथों होडा, शुरु चरणों में जावो।
 संआम सोनी पेथड सभ ही, लक्ष्मी ईज्जत पावो। गु. ५।
 जगद् शुरु के चरणु कमल में, इल पूजा इल पावो।
 यारिन दर्शन ज्ञान न्याय से, जय जय नाह गजवो। गु. ६।

आव्यभू-हिंसादि०

भान्न-छू झी. इलं समपंचामि स्वाहा ॥ ८ ॥

कलश :

(राग-भट्टस-अथ तो पार भये हम साधो)

आज तो जगद् शुरु शुणु गाया, आनंद भंगल हुर्ष सवाया ॥ टेश॥
 वीर जगत् शुरु आठ पदभ्यर, हुओ सूरि गणी मुनिराया।
 हुओ शुष्ठि विजय गणि जिनने, संवेगरंगका कलश चढाया ॥ १॥
 आप के आदिम पहु प्रलावक, सुष्ठित विजय गणि शासन राया।
 आप के पहु में विजय कमल सूरि, स्थविर विनय विजयल
 गवाया ॥ २ ॥

१४५

आप के शिष्य शासन दीपक, श्री चारित्र विजय शुरु राया ।
 आदिम लेन गुरु कुल स्थापक, जिन के यश का पारन पाया ॥ ३ ॥
 आप के सेवक दर्शन ज्ञानी, न्याय ने जयपुर में शुभ गाया ।
 संवत् उन्नीसौ सताष्टु, जगत् गुरु का दिन भनाया ॥ ४ ॥
 तपगच्छ मन्दिर में जग गुरु के, अरथु कमल सभ को सुभ हाया ।
 सेवे लंडारी केचरण, चारित्र्या पालरेच्या सुहाया ॥ ५ ॥
 घेता छाजड ऐह सचेती, ढडा गोळेच्छा सुभपाया ।
 दौरगोळेलडा अमुचज्ज्वानी, नौकणी सिंधी व झीसरा भाया ॥ ६ ॥
 केडारी लोढा करथावट, बाइछु पटनी शाहा उभाया ।
 जेंहरी हरभावत पेरवाला, श्री श्रीमालहै अकित रंगाया ॥ ७ ॥
 संध ने मिल कर आव सवाया, गुरु पूजन का पाठ पढाया ।
 शिर नभायां जय जय पाया, चारित्र दर्शन नाह गजया ॥ ८ ॥

दाढा साहुरु की आरती

आरति श्री शुद्धेव अरथु की.

कुमति निवारथु सुमति पूरथु की ॥ आ. ॥ १२ ॥
 पहेली आरती श्री शुद्धेव की.

हुरित निवारथु पुन्य करथु की ॥ आ. ॥ १ ॥

द्वादशी आरती धरम धरन की,

अशुल करमद्व द्वीरहथु की ॥ आ. ॥ २ ॥

तीसरी दक्ष धति धरम धरथु की,

૬૪૪

તપ નિરમલ ઉદ્ધાર કરણું કી ॥ આ. ॥ ૩ ॥
 યોથી સંયમ શુદ્ધ ધરમ કી,
 શુદ્ધ હયા તૃપ ધરમ બરધણું કી ॥ આ. ॥ ૪ ॥
 પાંચમી સલી સદગુણ અહણું કી,
 દિન દિન જસ પરતાપ કરણું કી ॥ આ. ॥ ૫ ॥
 એક વિધ આરતી કીજે ગુરૂદેવ કી,
 સમરણ કરત લવિ પાપ ફરણું કી ॥ આ. ॥ ૬ ॥
 ધતિ શ્રી ગુરૂદેવજી કી આરતિ



“ॐ”

શ્રી જગતુ ગુરૂજ કી છોટી અષ્ટ

પ્રકારી પૂજા

—* પ્રથમ જલ પૂજા *—

—: દોષા :—

અહુ સમ સમરી શારદા, સદગુર અહણું નમાય ।
 વસુવિધ હીરસ્કરીનં કી, પૂજા રચું સુખદાય ॥ ૧ ॥
 નિર્મલ જલ જરી ભરી, આણી અંગ ઉમંગ ।
 શુરૂ પદ કી પૂજા કરું, કિંમ સુખ પાઈ થંગ ॥ ૨ ॥

४५

“ दाल सुरति ”

पूजा भिली करिये शुद्ध पदनी सुखकार ।

अनुभव वरीये निजगुण, धरिये अधिक उदार ॥ १ ॥

पूजा जल की साचवे, अठते लाव परिष्ठाम ।

मिथ्यामल हुरे हुरे, पामें निरभव डाम ॥ २ ॥

॥ श्लोक ॥

अशुभ कर्म विपाक निवारण, परम शीतल भाव विकासकम् ।

स्वप्रवर्पतु विकाशनभात्मनः, श्री शुद्ध हीरसूरीश्वर पूजनम् ॥

अ हूँ आ आ श्री हीरविजय सुरार्थर चरण कमलेस्या
जलं धजामहे नमः ॥ १ ॥

द्वितीय चंदन पूजा

— होडा —

इए पूजा शुरु ताणी, करिये चित्त उद्घास ।

मृगमद चंदन सुं भिली, केसर शुद्ध बरास ॥ १ ॥

(दाल)

केसर चंदन धसी धषो, मांडि भेला धन सार ।

बत्त जडित कचालडे, धरिये चित्त उदार ॥ १ ॥

शुरु ए ध पूजा लवि जन, लव दव ताप समाय ।

इए पूजा कीजिये, अनुभव लकड़ी पाय ॥ २ ॥

३५६

॥ श्लोक ॥

परमुदारगुणुं शुक्रे पूजनं, ऋगद्वयाधिचयाद्रहितं जितम्
परम पूजय पदस्थित मर्येत, विनय हर्षन तेसर अन्दनैः । १।
अहो ओ श्री परम गुरु श्री छीरविजय सुरीश्वरेभ्य-
अन्दनं यज्ञमहे नमः ॥ २ ॥

तृतीय पुण्य पूजा

होडा—

त्रील पूजा कुसुमनी, कस्ति निर्मल चित ।
पूजा करतां अवि लहे, उत्तम अनुष्ठाव विता ॥ १ ॥

॥ ढाळ ॥

बाई ज्यूर्धि केतडी, उमण्हो भरुओ सार ।

मेगरै चंपक मालती, श्री गुरु चरणे धार ॥ १ ॥

बोलसिरि बाई कूलसु, केवडा सरस गुलाब ।

शुद्ध सुगंधित कूले करी, शुक्रे पूजे भरी छाब ॥ २ ॥

॥ श्लोक ॥

सरस पुण्य सुगंधितमर्चित, सकल वाहित दायक चर्चितम् ।
सकल मंगल सम्भाव ठारणुं शुक्रसुगपादपूजन धारणुम् । १।

अहो ही श्री श्री परम गुरु श्री छीर विजय सुरीश्वर चरण
इमदेव्यः पुण्यं यज्ञमहे नमः ॥ ३ ॥

४४७

ચતુર્થ ધૂપ પૂજા

- દોહા -

ચૌથી પૂજા ધૂપની, કરિયે હર્ષ અમંદ ।
કુમતિ મિથ્યાત્વ નિવારને, પૂજને શ્રી હીર સ્તરીનં ॥૧॥

॥ ઢાલ ॥

અગર ચંદન વલી મૃગમદ, કુંદરુ ને લોબાન ।

વસ્તુ સુગંધ મિલાય કે, કરિયે એ ધૂપધાન ॥૧॥

ધૂપ કરો શુરુ સંસુખ, આણું લાવ વિશાળ ।

જમ પાવો જવિ સંમતિ, દિન દિન મંગલ માલ ॥૨॥

॥ શ્વેઠ ॥

સમસુગંધકરં તથ ધૂપન, સકલજન્તુમહોદ્ય કારણુમ્ભ ।

સકલવાગ્ચિતહાયક નાયક, શ્રી શુરુ હીરસ્તુદ્દિચરણું યજેતુ ॥૧॥

કહ હું શ્રી શ્રી પરમ શુરુ શ્રી હીર વિજય સ્તરીન્દ્ર અરણુ
કમદેખ્યો ધૂપં યજમહે નમઃ ॥ ૪ ॥

પંચમી હીપક પૂજા

દોહા

પંચમી પૂજા શુરુ તણી, કરિયે હીપક સાર ।

મિટે તિમિર મિથ્યાત્વ સાચ, એહ પૂજા અધિકાર ॥૧॥

॥ ઢાલ ॥

સીંહ હીપક શુરુ આગલે, ધરિયે શુભ વ્યવહાર ।

१४८

दीप हीपक भले करीई, जन्म सङ्कल अवतार ॥१॥
 हीप पूजा उरतां सही, लहिये ज्ञान विशाल ।
 गुरु पूजा मनो वांछित, आपे मंगल माल ॥२॥

॥ श्लोक ॥

विभूत बोध सुहीपक पारड़े: परम ज्ञान प्रकाशउ नाय कैः ।
 गुरु गुहे शुभ हीपक हीपन, भव जले निधि पैत सभो गुरुः ॥
 ॐ हौं ओ श्री परम गुरु श्री हीर विजय स्त्रीैवर यरथ
 कमलेभ्यो हीप यज्ञमहे नमः ॥ ५ ॥

४४ठी अक्षत पूजा

—:होड़ा:—

छटी पूजा जवि करो, अक्षय शुद्ध अभिंड ।
 चंद्र किरण सम उज्ज्वला, धर्म स्थिति गुरु मंड ॥१॥

॥ दाल ॥

उज्ज्वल तंहुल अक्षत, विविध प्रकारनां लाय
 कंचन भणि रथेणूं जह्या, थाल भरी जरमाय ॥२॥
 स्वस्तिक तरी गुरु सन्सुखे, भावना भावो सार ।
 अक्षत पूजा ने करे, लहे सुख अपार ॥३॥

— श्लोक —

परम-अक्षत जाव कुतेऽ जिंते, हस्ति वांछित सुख समृद्धज्ञः